तोलोङ सिकि

TOLONG SIKI

(कुँड़ुख़ भाषा की लिपि / Script of Kurux Language)

खण्ड – 1

(वर्ष 1989 से 2016 तक का इतिहास)

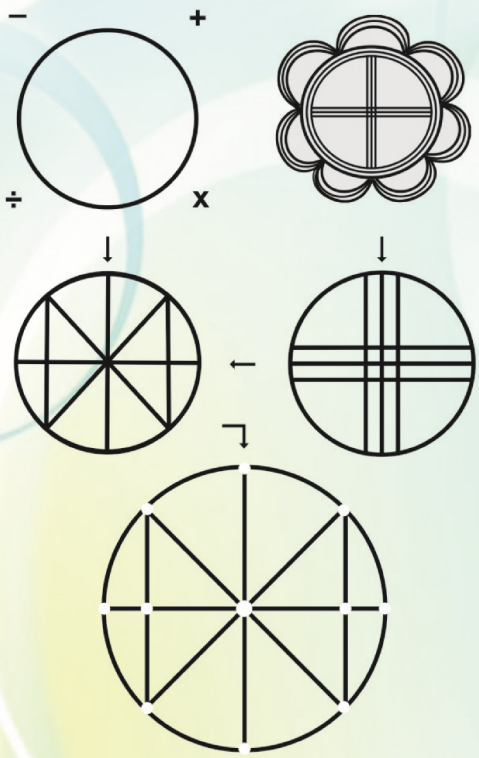

शोध एवं प्रस्तुति :

डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'

सम्पादन एवं प्रकाशन :

डॉ0 (श्रीमती) ज्योति टोप्पो उराँव

सम्पादक एवं प्रकाशक की कलम से :-

डॉ0 ज्योति टोप्पो उराँव
एम.ए., पी.एच.डी. (संस्कृत)

"तोलोङ सिकि (कुँड़ुख़ भाषा की लिपि) के संबंध में दो शब्द लिखकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई है। संयोग से, मैं तोलोङ सिकि (लिपि) के संस्थापक डॉ0 नारायण उराँव की धर्म पत्नी हूँ और शादी के प्रथम दिन से अबतक मुझे तोलोङ सिकि के विकास के घटना क्रम को अपनी आँखों से देखने का अवसर प्राप्त हुआ। वैसे, कुँड़ुख़ भाषा सीखने एवं समझने का मौका बचपन से युवा अवस्था तक नहीं मिल सका। पढ़ाई–लिखाई के लिए मैंने संस्कृत विषय का चुनाव किया। इस क्रम में मुझे, संस्कृत एवं कुँड़ुख़, दो प्राचीन भाषा की संरचना को समझने का मौका मिला। अध्ययन के दौरान पता चला कि संस्कृत जिस तरह समृद्ध है उसी तरह कुँड़ुख़ भी समृद्ध है। इन तथ्यों को परिमार्जित करते हुए समाज के चिन्तकों, शिक्षाविदों एवं बुद्धिजीवियों ने अपने पूर्वजों की अवधारनाओं को लिपि चिह्नों के माध्यम से मूर्त रूप दिये जाने का प्रयास किया है। इस कार्य में आदिवासी समाज के अधिक से अधिक बुद्धिजीवियों एवं समाज सेवियों ने अपने ज्ञान भंडार का उपयोग कर अपनी भाषा–संस्कृति को अक्षुण रखने में सूझ–बूझ का परिचय दिया है। इस संकलन एवं सम्पादन में यदि किसी तरह की भूल–चूक हुई हो तो कृपया हमें पत्र लिखकर या ई–मेल oraon.narayan@gmail.com में सूचित करने की कृपा करें।

तोलोङ सिकि (लिपि) के संस्थापक का परिचय

नाम : डॉ० नारायण उराँव 'सैन्दा'
माता–पिता : पिता स्व० भुनेश्वर उराँव, माता श्रीमती फूलमनी उराँव (कृषक)
वर्तमान पता : भुवनफूल एड़पा, ख़बरमंत्र लेन, बोड़ेया रोड, चिरौन्दी, राँची – 835240
मोबाइल नं० : 9771163804, email : oraon.narayan@gmail.com

शिक्षा : Matric - 1979 ई०,
संत तुलसी दास उच्च विद्यालय, सिसई, गुमला।
: I.Sc. – 1981 ई०, राँची कॉलेज, राँची।
: आदिवासी कॉलेज छात्रावास, राँची में रहकर, झारखण्ड का छात्र आन्दोलन में सक्रियता।
: M.B.B.S. (L.N.M.U.) – 1989 ई०, दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार)।
: PGDMCH (IGNOU) – 2001 ई०।
: FCGP (IMACGP) – 2007 ई०।
: Trained in FBNC (Facility Based Newborn Care) - 2015.

कार्यानुभव : चिकित्सा पदाधिकारी, प्रा. स्वा. केन्द्र, रामगढ़, दुमका, 06.11.1990 से 20.05.1996 तक।
: चि. पदा., अति. प्रा. स्वा. केन्द्र, घंघरीकुरा, तिसरी, गिरीडीह,20.12.1996 से 29.05.1997 तक।
: आवासीय चि0 पदा0/सिनियर रेजिडेन्ट, अनुग्रह नारायण मगध मेडिकल कॉलेज अस्पताल, गया (बिहार), 29.05.1997 से 10.06.2010 तक।
: चिकित्सा पदाधिकारी (प्रतिनियुक्ति), एस० सी० एन० यू० (Special Care Newborn Unit), रिम्स, राँची (झारखण्ड), 23.10.2010 से 03.1.2015 तथा 06.02.2015 से 09.3.2015 तक।
: सीनियर रेजिडेन्ट (व्याख्याता), शिशु रोग विभाग, पाटलिपुत्र मेडिकल कॉलेज अस्पताल, धनबाद, (झारखण्ड), 27.07.2010 से अबतक।

लेखन :
1. सरना समाज और उसका अस्तित्व – 1989.
2. कुँड़ुख़ तोलोङ सिकि अरा बक्क गढ़न – 1994.
3. ग्राफिक्स ऑफ तोलोङ सिकि – 1997, 1999, 2001.
4. कइलगा – 1998, 1999, 2000, 2008, 2013.
5. चींचो डण्डी अरा खीरी – 2002.
6. तोलोङ सिकि का उद्‌भव और विकास – 2003.
7. तुड़ुल – 2005
8. कुँड़ुख़ हहस अरा सिकिजुमा – 2011.
9. कुँड़ुख़ कत्थअइन अरा पिज्जसोर – 2012,
10. आधुनिक कुँड़ुख़ व्याकरण – अप्रकाशित।

तोलोङ सिकि वर्णमाला का आधार

तोलोङ पोशाक

हल चलाना

रोटी पकाना

जता चलाना

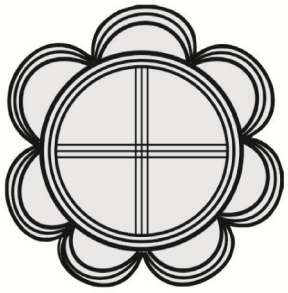

डण्डा कट्टना अनुष्ठान चिन्ह

देवती पुजा अड्डा

चाला टोंका

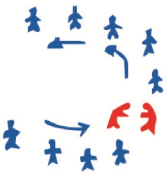

अभिवादन

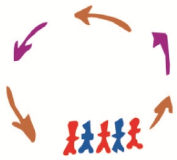

नृत्य

मृत्यु संस्कार

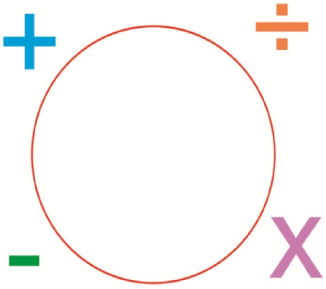

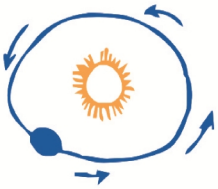

पृथ्वी की सूर्य परिक्रमा

जीव–जन्तुओं द्वारा बनाये गये चिन्ह

लत्तर का डाली पर चलढ़ना

प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक चिन्ह

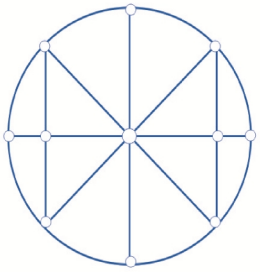

तोलोङ सिकि डिसप्ले सिस्टम

तोलोङ सिकि (लिपि) : आदिवासी संस्कृति, विज्ञान एवं अध्यात्म का अद्भूत प्रस्तुतिकरण

rkyk³ flfd ¼fyfi½ dk >kj[k.M ljdkj dh ekU;rk

तोलोङ सिकि (लिपि), भारतीय आदिवासी आन्दोलन एवं झारखण्ड का छात्र आन्दोलन की देन है। यह लिपि आदिवासी भाषाओं की लिपि के रूप में विकसित हुई है। इस लिपि को कुँडुख (उराँव) समाज ने कुँडुख़ भाषा की लिपि के रूप में स्वीकार किया है तथा झारखण्ड सरकार, कार्मिक, प्रशासनिक सुधार एवं राजभाषा विभाग के पत्रांक 129 दिनांक 18.09.2003 द्वारा कुँडुख (उराँव) भाषा की लिपि के रूप में संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किये जाने हेतु अनुशंसित किया गया है। साथ ही, झारखण्ड अधिविद्य परिषदं, राँची के विज्ञप्ति संख्या 17/2009, DPO - 20.02.2009 **द्वारा** 2009 सत्र में सर्वप्रथम, कुँडुख़ कत्थ खोंड़हा लूरएड़पा, लूरडिप्पा, भगीटोली, गुमला, के छात्रों को मैट्रिक परीक्षा में कुँडुख़ भाषा विषय की परीक्षा लिखने की अनुमति दी गयी। उसके बाद, झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची के अधिसूचना संख्या–JAC/गुमला/16095/12–0607/16 दिनांक 12.02.2016 द्वारा वर्ष 2016 से मैट्रिक में कुँडुख़ भाषा पत्र की परीक्षा तोलोङ सिकि (लिपि) में परीक्षा लिखने की अनुमति प्राप्त हुई तथा राँची विश्वविद्यालय, राँची के अधिसूचना संख्या – B/1236/16 दिनांक 26.09.2016 द्वारा जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष के देखरेख में एक विशेष सेल का गठन हुआ है, जो संताली भाषा की लिपि – ओल चिकि, हो भाषा की लिपि – वराङ चिति तथा कुँडुख़ (उराँव) भाषा की लिपि – तोलोङ सिकि में पाठ्यक्रमों की रूपरेखा तैयार करेगी।

(तोड़पाब) = वर्णमाला, Alphabet

(सरह तोड़) = स्वर वर्ण, Vowel

इ i   ए e   उ u   ओ o   अ a   आ ā

: (सेला) = लम्बी ध्वनि, • (मितला) = नासिक्य व्यंजन सूचक, ’ (घेतला) = शब्दखण्ड सूचक,

~ (एवाँ) = नासिक्य स्वर सूचक, ‿ (रेवाँ) = लुप्ताकार र, । (हेचका) = व्यंजन अ.

(हरह तोड़) = व्यंजन वर्ण, Consonant

प् p	फ् ph	ब् b	भ् bh	म् m
त् t	थ् th	द् d	ध् dh	न् n
ट् ṭ	ठ् ṭh	ड् ḍ	ढ् ḍh	ण् ṇ
च् ch	छ् chh	ज् j	झ् jh	ञ् n̈
क् k	ख् kh	ग् g	घ् gh	ङ् ṅ
य् y	र् r	ल् l	व् v	ञ़् ṇ̣
स्	ह् h	ख़् x	ड़् ṛ	ढ़् ṛh

(लेक्खा) = संख्या, numerals

0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10

(ख़द्द कत्था) = बालपन की भाषा, child language :-

(पपा) = रोटी, (ममा) = भात, (मम) = पानी,

(पल्ल) = दाँत, (बई) = मूँह, (मेलख़ा) = कण्ठ,

Download "kellytolong font" free from :: www.newswing.com / www.tolongsiki.com,
mob. : 9771163804 visit :: e-mail : oraon.narayan@gmail.com, e-mail : bakkhuhi@gmail.com

dqM+[k ggl@ dqM+[k Hkk"kk dh /ofu;k¡ (**Kũr.ux phonem**)

1- dqM+[k dRFkk gh eyh ljg (कुँडुख़ भाषा की मूल स्वर ध्वनियाँ / Primary Vowel)

/ बइता सरह (मौखिक स्वर, Oral vowel)		/ मुँइता सरह (नासिक्य स्वर, Nasal vowel)	
सन्नी सरह (ह्रस्व स्वर, short vowel)	दिगहा सरह (लम्बा स्वर, long vowel)	सन्नी सरह (ह्रस्व स्वर, short vowel)	दिगहा सरह (लम्बा स्वर, long vowel)
- इ, i	- इः, i:	- इँ, ĩ	- इँः, ĩ:
- ए, e	- एः, e:	- एँ, ẽ	- एँः, ẽ:
- उ, u	- उः, u:	- उँ, ũ	- उँः, ũ:
- ओ, o	- ओः, o:	- ओं, õ	- ओंः, õ:
- अ, a	- अः, a:	- अँ, ã	- अँः, ã:
- आ, ā	- आः, ā:	- आँ, ā̃	- आँः, ā̃:

2- dqM+[k dRFkk gh tksVBk ljg (कुँडुख़ भाषा का संयुक्त स्वर / Diphthong) :–

जोट्ठा सरह :– (संयुक्त स्वर)	अइ, अउ, अय, अव, इउ, उइ, अँइ, अँउ, अँय, अँव, इँउ, उँइ, ।

3- dqM+[k dRFkk gh eyh gjg (कुँडुख़ भाषा की मूल व्यंजन ध्वनियाँ / Primary Consonant)

अघोष / non voiced		सघोष / voiced		सघोष / voiced		अघोष / nonvoiced
मौखिक अल्पप्राण	मौखिक महाप्राण	मौखिक अल्पप्राण	मौखिक महाप्राण	नासिक्य अल्पप्राण	मौखिक अल्पप्राण	मौखिक अल्पप्राण
प्	फ्	ब्	भ्	म्	- -	- -
त्	थ्	द्	ध्	न्	य्	- -
ट्	ठ्	ड्	ढ्	ण्	र्	स्
च्	छ्	ज्	झ्	ञ्	ल्	ह्
क्	ख्	ग्	घ्	ङ्	व्	ख़्
- -	- -	ड़्	ढ़्	ञ्	- -	- -

lkHkkj % rksyksx flfd dk mnHko vkj fodkl & MkW0 ukjk;.k mjkWo] uo >kj[k.M çdk'ku] i¡:fy;k jkM] jkaph] o"k&2003] e-mail : oraon.narayan@gmail.com / www.tolongsiki.com, mob # 09771163804

Kūṛux phonem / dM[k /ofu;k (According to minimal pair theory)

Roman	Devanagari	Examples	Roman	Devanagari	Examples
i	इ	इज़्जो, इजगो	p	प्	पपला, पचरी
e	ए	एड़पा, एपटा	ph	फ्	, फँसरी, फटका
u	उ	उगता, उड्डु	b	ब्	बल्लु, बली
o	ओ	ओसगा, ओरोख़	bh	भ्	भदड़ी, भँड़की
a	अ	अड़ख़ा, अखड़ा	m	म्	मरग, मचा
ā	आ	आल, आरू	t	त्	ततख़ा, तड़री
i:	इः	इःमा, कीःड़ा	th	थ्	थड़ा, थइला
e:	एः	एःड़ा, नेःला	d	द्	दउली, दुदही
u:	उः	उःरा, कूःबी	dh	ध्	धनु, धरती
o:	ओः	ओःड़ा, ओःड़ा	n	न्	नड़गा, नड़हा
a:	अ	अःव, दःव, कःव	ṭ	ट्	टटख़ा, टमरस
ā:	आ	आःली, आःलो	ṭh	ठ्	ठरकी, ठठरा
ĩ	इँ	चिंचो, बिंड़ना	ḍ	ड्	डउड़ा, डिगची
ẽ	एँ	चेंड़ा, गेंड़ा	ḍh	ढ्	ढरा, ढेरा
ũ	उँ	गुँड़ना, कुँडुख़	ṇ	ण्	भण्डा, डुण्डी
õ	ओं	कोंहड़ा, गोंहड़ा	ch	च्	चलकी, चपटा
ã	अँ	अँटा, खँटी	chh	छ्	छटका, छलका
ā̃	आँ	चाँड़, काँड़	j	ज्	जल्ली, जंगला
ĩ:	इँः	बीःड़ी, चीःचो	jh	झ्	झमड़ा, झण्डा
ẽ:	एँः	पेंःड़े, हेंःड़े	ṇ	ञ्	चिञा, सिञा
ũ:	उँः	कूँःड़, पूँःप	k	क्	ककड़ो, कड़मा
õ:	ओंः	कोंःड़ा, तोंःड़ो	kh	ख्	खपरा, खरपा
ã:	अँः	अँःत, अँःख़, सँःह	g	ग्	गमछा, गगरा
ā̃:	आँः	आँःड़को, भाँःड़ो	gh	घ्	घुघरी, घघरा
ai	अइ	कइला, चइला	ṅ	ङ्	झिलङी, डोङा,
au	अउ	अउड़का, कउड़ी	y	य्	किया, जिया
ay	अय्	कय्था, कय्र	r	र्	रसड़ी, रटा
av	अव्	अवगार, नव्र	l	ल्	लट्टु, लड़ङ
iu	इउ	इउन्दा, चिउरा	v	व्	जवा, लवा, तवा
ui	उइ	उइरा, कुइला	n̈	ञ़्	मञ़ा, माञ़
ãi	अँइ	कँइत, गँइता	s	स्	सगड़, सिकड़ी
ãu	अँउ	कँउड़, झँउड़	h	ह्	हड़का, हरिन
ãy	अँय्	चँय्दा, सँयदा	x	ख़्	ख़न्न, ख़ज्ज
ãv	अँव्	चँव्र, भँव्रा	ṛ	ड़्	गेड़े, घोड़ो
ĩu	इँउ	इँउरा, चिँउरा	ṛh	ढ़्	गढ़े, बाढ़ी
ũi	उँइ	पुँइदा, सुँइतु	a̤	अ्	चिअ्ना, नेअ्ना

[illegible] ¼rkMUu½ =fgT tk] orluh ~ d vu; : i fy[k vkj i<

1. [illegible] (भारत) = [illegible] ~ [illegible].

भ् + आ + र् + अ् + त् = भा + रत (हिज्जा)

bh + ā + r + a + t = bhā + rat (वर्ण व्यवस्था)

2. [illegible] (झारखण्ड) = [illegible] ~ [illegible].

झ् + आ + र् + ख् + अ + ण + ड् = झार + खण्ड (हिज्जा)

jh + ā + r + kh + ā + n + d = jhār + khand (वर्ण व्यवस्था)

3. [illegible] (राँची) = [illegible] ~ [illegible].

र् + आँ + च् + ई = राँ + ची (हिज्जा)

r + ã + ch + i = rã + chi (वर्ण व्यवस्था)

4. [illegible] (गुमला) = [illegible] ~ [illegible].

ग् + उ + म् + ल् + आ = गुम + ला (हिज्जा)

g + u + m + l + ā = dum + kā (वर्ण व्यवस्था)

5. [illegible] (लोहरदगा) = [illegible] ~ [illegible]

ल् + ओ + ह् + अ + र् + द् + अ + ग् + आ = लोहर + दगा (हिज्जा)

l + o + h + a + r + d + a + g + ā = lohar+dagā (वर्ण व्यवस्था)

6. [illegible] (टाटा) = [illegible] ~ [illegible]

ट् + आ + ट् + आ = टा + टा (हिज्जा)

ṭ + ā + ṭ + ā = ṭā + ṭā (वर्ण व्यवस्था)

7. [illegible] (चाईबासा) = [illegible] ~ [illegible]

च् + आई + ब् + आ + स् + आ = चाई + बासा (हिज्जा)

j + ai + b + ā + s + ā = chai + bāsā (वर्ण व्यवस्था)

8. [illegible] (दुमका) = [illegible] ~ [illegible].

द् + उ + म् + क् + आ = दुम + का (हिज्जा)

d + u + m + k + ā = dum + kā (वर्ण व्यवस्था)

9. [illegible] (धनबाद) = [illegible] ~ [illegible]

ध् + अ + न् + ब् + आ + द् = धन + बाद (हिज्जा)

dh + a + n + b + ā + d = dhan+ bād (वर्ण व्यवस्था)

10. [illegible] (बोकारो) = [illegible] ~ [illegible].

ब् + ओ + क् + आ + र् + ओ = बोका + रो (हिज्जा)

b + o + k + ā + r + o = bokā + ro (वर्ण व्यवस्था)

****

मुखत्यार सिंह, भा० प्र० से०
Mukhtiar Singh, I.A.S.
आयुक्त एवं सचिव
Commissioner and Secretary

114

कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड, राँची ।
Department of Personnel, Administrative Reforms & Rajbhasha, Government Jharkhand, Ranchi.
☎ 0651 - 2403221 (Off.)
0651 - 2480048 (Res.)
0651 - 2403253 (Fax)

पत्रांक :-8/रा०-8/2001का0-....129............, दिनांक : 18-9-2003

सेवा मे,

सचिव,
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली ।

विषय :- भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में संथाली, मुण्डारी, हो एवं उरांव/ कुरूख भाषा को शामिल करने के संबंध में ।

महोदय,

झारखण्ड राज्य के अन्तर्गत संथाली, मुण्डारी, हो, उरांव/ कुरूख भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है । संथाली भाषा की लिपि "ओल चिकी", मुण्डारी भाषा की लिपि "देवनागरी", हो भाषा की लिपि "वारंगक्षिति" तथा उरांव/ कुरूख भाषा की लिपि "तोलोंग सिकी है । वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार संथाली, मुण्डारी, हो तथा उरांव/ कुरूख भाषा का प्रयोग झारखण्ड सहित देश के 29 राज्यों एवं दो केन्द्र शासित प्रदेशों मे करने वाली जनसंख्या क्रमशः 52,16,325, 8,61,378, 9,49,216 तथा 14,26,618 है।

झारखण्ड सहित अन्य कई राज्यों मे इन भाषाओं की पढ़ाई विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय स्तर पर होती है ।

जनजातीय भाषाओं के उत्थान के दृष्टिकोण से झारखण्ड सरकार का यह सुविचारित मंतव्य है कि उक्त चारों भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाय । अतएव यह अनुरोध है कि संविधान के अनुच्छेद 344(1) एवं अनुच्छेद 351 के प्रावधानों के अन्तर्गत उपबंद्ध आठवीं अनुसूची में संथाली, मुण्डारी, हो, एवं उरांव/ कुरूख भाषा को सम्मिलित किया जाय ।

विश्वासभाजन,
(मुखत्यार सिंह)
आयुक्त एवं सचिव।

अभिप्रमाणित,
प्रशाखा पदाधिकारी
कार्मिक प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग
झारखण्ड, राँची

प्रभात खबर

शुक्रवार, 20 फरवरी, 2009

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2009 के कुड़ुख भाषा पत्र के संबंध में आवश्यक सूचना

विज्ञप्ति संख्या - 17/2009

एतद् द्वारा सभी छात्रों, उनके अभिभावकों संबंधित विद्यालय के प्राचार्य/पदाधिकारियों को सूचित किया जाता है कि सचिव, मानव संसाधन विकास विभाग, झारखण्ड सरकार, के पत्रांक 6/नि-1-12/2002-565 दिनांक 18.02.2009 द्वारा स्थापना अनुमति प्राप्त उच्च विद्यालय **"कुड़ुख कथा खोड़हा लुर एड़पा भागी टोली"** डुमरी गुमला के 39 (उन्नचालीस) छात्रों को वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2009 के कुड़ुख (उराँव) भाषा पत्र को अपनी लिपि **"तोलोंग सिकी"** से परीक्षा लिखने की अनुमति प्रदान की गई है।

अध्यक्ष के आदेशानुसार

ह./-

(पोलिकार्प तिर्की)

सचिव,

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

JAC/SECY/078/09 Dt. 19.02.09

D.O.P : 20.02.09

झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची
JHARKHAND ACADEMIC COUNCIL, RANCHI

अधिसूचना

संख्या – JAC/गुमला/16095/12 ...../ झारखण्ड अधिविद्य परिषद् की बैठक संख्या 73 दिनांक 23.01.2016 में लिए गए निर्णय के आलोक में कुड़ुख भाषा की परीक्षा तोलोंग सिकी लिपि में लिखने की अनुमति वार्षिक माध्यमिक परीक्षा, 2016 से प्रदान की जाती है।

तोलोंग सिकी लिपि में लिखने वाले परीक्षार्थी अपनी उत्तरपुस्तिका में लिपि संबंधी कॉलम में 'तोलोंग सिकी' अवश्य लिखेंगे।

अध्यक्ष के आदेश से,

12/02/16

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

ज्ञापांक : JAC/गुमला/16095/12-0607/16 / राँची, दिनांक : 12/02/16

प्रतिलिपि : अध्यक्ष के निजी सहायक/उपाध्यक्ष के निजी सहायक/सचिव के निजी सहायक/संयुक्त सचिव के निजी सहायक/उपसचिव के निजी सहायक/गठित समिति के सभी सदस्यों को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ प्रेषित।

12/02/16

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

ज्ञापांक : JAC/गुमला/16095/12-0607/16 / राँची, दिनांक : 12/02/16

प्रतिलिपि : सचिव, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड/निदेशक (मा० शि०)' को सूचनार्थ एवं आवश्यक कार्यार्थ समर्पित।

12/02/16

सचिव
झारखण्ड अधिविद्य परिषद्, राँची।

RANCHI UNIVERSITY, RANCHI

NOTIFICATION

In exercise of the power vested in him under the provisions of Jharkhand State Universities Act 2000, as amended up to date and on the proposals of H.O.D., Tribal and Regional Languages, Ranchi University, Ranchi, the Vice-Chancellor has been pleased to constitute of Cells of different scripts of the Tribal Languages in Ol-chiki (Santali), Warang Chhiti (Ho) and Tolong Siki (Kurukh).

The following members nominated as member of the Committee in respective Tribal languages :

Ol-Chiki (Santali) :
1. Dr. K.C. Tudu, Associate Professor
2. Ms. Dumni Mai Murmu – Ph.D. Scholar
3. Sri Jitendra Hansda – Ph.D. Scholar
4. Ms. Shankuntala Besra – Ph.D. Scholar
5. Ms. Duli Kisku - Ph.D. Scholar

Warang Chhiti (Ho) :
1. Ms. Saraswati Gorai - Ph.D. Scholar
2. Mr. Pradip Kumar Bodra - Ph.D. Scholar
3. Ms. Indira Birwa - Ph.D. Scholar
4. Mr. Jai Kishore Mangal - Ph.D. Scholar
5. Mr. Dinesh Boi Pai - Ph.D. Scholar

Tolong Siki (Kurukh) :
1. Dr. Hari Oraon – Assistant Professor
2. Dr. Narayan Bhagat - Assistant Professor
3. Dr. Ram Kishor Bhagat - Assistant Professor
4. Ms. Kamla Lakra – Ph.D. Scholar
5. Ms. Nisha Neelam Kujur – Ph.D. Scholar

The Cells of the different scripts have been work under the guidance of Head, T.R.L. Department, Ranchi University, Ranchi.

By order of the Vice-Chancellor
Sd/-
Registrar
Ranchi University, Ranchi

Memo No. ..B/1236/16..... Dated ..26/09/16...

Copy to :-

1. All Members of the Committee,
2. The Head, University Department of Tribal and Regional Language, Ranchi University, Ranchi,
3. The Dean, Faculty of Humanities, Ranchi University, Ranchi,
4. The Finance-Officer, Ranchi University, Ranchi,
5. The O.S.D. (J) to Governor of Jharkhand, Raj Bhawan, Ranchi,
6. The Deputy Registrar - I, Ranchi University, Ranchi,
7. P.A. to VC/FA/R for information to the VC/FA and Registrar.

26.09.16
Registrar
Ranchi University, Ranchi

26/9/16

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

dqM+[k dRFkk vjk rkyk³ flfd ¼fyfi½

कुँड़ुख़ कत्था ओन्टा अद्दी कत्था तली। मना उङगी का एकअम बेड़ा नु इदि गही हुदा अक्कुन ती बग्गे रहचा हअन। मुन्दा अक्कुन ता बेड़ा नु ईःद उल्ला गइनका खतरते काःला लगी। इदिन टूड़र की उइय्या गे नमहँय पुरखर उरजिस नंज्जर हअन पहें बग्गे परदआ पोल्लर। अक्कुन हूँ नाम तीःरकम रअ्दत। अद्दी कत्था मंज्जका ती मना उङगी का ई कत्था गही एकअम बेड़ा नु सिकि (लिपि) रहचा हअन, मुन्दा अक्कुन आद ख़न्न एःख़ा गे हूँ मल इथिर'ई। ई चड्डे नमहँय लूरगरियर तमहँय बेड़ा सिरे ता नन्ना सिकि तिके टूड़ा ओःरे नंज्जर। मुन्ध नु पुरखर रोमन लिपि ती कुँड़ुख़ कत्थन टूःड़ा ओरे नंज्जर अदि ख़ोःख़ा देवनागरी लिपि ती टूड़तारआ हेल्लरा। रोमन अरा देवनागरी लिपि नु कुँड़ुख़ कत्थन टूड़ा गे ठउका–ठउका सिकि चिनहाँ मलका चड्डे इबड़ा सिकि ती कुँड़ुख़ कत्थन फुरचारना बेसे टूड़ा पोलताइ'ई। ई गे कत्थन दव कुना ख़ोःजर दरा उइय्या गे मलता इदिन बर'उ ख़द्दर गूटी पुरखर गही खुर्जिन अँड़स्त'आ गे नलख ननना अकय चाँड़ रअ्ई। इन्ने नंज्जका ती अयंग कत्था गही मइनता अरा मरजाइद बछरओ दरा नमहँय खोंड़हा मुंदभारे परदो, मला होले एका बेसे बेड़ा बरआ लगी का एका बेसे बेड़ा बरना गही हँहास ख़खरआ लगी अदी गही ताःका ती नाम उढ़ियारओत काःलोत। गोट्टे खे़ःख़ेल राःजीन एःरना ती लग्गी का उरमी गुसन कोंहा कत्था सन्नी कत्थन नुलख़ा लगी, जे लेखा का कोंहा इंज्जो, सन्नी इंज्जोन नुलख़ी। भखा पंडितर बअ्नर – ओरे नु गोट्टे बेलख़ा नु 16000 कत्था रहचा मुन्दा अक्कुन ता बेड़ा नु ईद 6900 लेखआ बछरकी रअ्ई। अबड़ा 6900 नु 3500 बग्गे, एबसेरना गही पांःती नु रअ्ई। इबड़ा 3500 बग्गे एबसेरना बेसे कत्था नु कुंडुख़ कत्था हुं संग्गे रअ्ई। ईद नमागे अकय एलेचना बेसे कत्था रअ्ई।

अवंगे कत्थन अरा खोंड़हन बछाबअ्आ गे नमन संग्गे मनर, इन्दिर'ईम मला इन्दिर'ईम उरजिस नननम मनो। अक्कुन ता बेड़ा नु भूमण्डलीकरण मलता ग्लोबलाइजेशन बअर की एलेचना बेसे ओन्टा बइरबण्डो बरआ लगी। ईद बेगर पसअम अरा बेगर नुंजताचकम अकय ससईत चिअ्ई। ईद एन्ने जिनिस तली का इत्तु के ओरमर एकअम मला एकअम रूपे नु धर्रकर रअ्नर अरा अदी तरा नतगरनुम काःला लगनर। नमहँय अयंग कत्था हूँ इदी गही ताःका ती बछर'आ पोल्ला लगी। नमहँय कत्था – हिन्दी, अंगरेजी अरा नगपुरिया ती अरब'रा दरा पुटसी निनास होअ्आ लगी। अवंगे कत्था अरा खोंड़हन बछाबअ्आ गे नमन खोंड़हा मइनतन टूड़र क़ी उइनम मनो, तबेम नाम इबड़न बछाबअ्आ ओंग्गोत। गोट्टे खे़ःख़ेल राःजी नु एका खोंड़हा तमहँय कत्थन टूड़र उइय्या आःदिम इन्ना ता बेड़ा नु परिदका खोंड़हा बाःतारआ लगी अरा एकदा खोंड़हा तमहँय कत्थन टूड़र पोल्ला उइय्या आद मेटेरआ लगी। ई चड्डे तंगआ अयंग कत्थन ख़ोःजा अरा अदी गही महबन पर्दआ गे ओन्टा जुदम कत्थ एःख़ (लिपि) गही मइनता चिअ्ना हूँ अकय चाँड़ रअ्ई।

fyfi ,dk cl euuk pgh \

अककुन ता बेड़ा विज्ञान ता बेड़ा तली। अक्कुन ता नलख मशीन गही मदइत ती चाँःड़े–चाँःड़े दव कुना मनी। नमन अक्कुन ता बेड़ा नु डहरे एःका ओंग्गना दरा मशीन गने धरतारना बेसे नलख ननना चही। इदी गनेम तंगआ मूली कत्थन, मूली चाःलोन उइना मनो। परिदका राजी ता आलर ओन्टा एन्ने कम्प्यूटर कमचका रअ्नर का आद आलर गही कत्थन मेनर की टूड़ी चिअ्ई (वर्ल्ड दिस वीक, दिनांक 11.03.1994 ई0)। कत्थन टूड़ा गे मशीन नु ख़ेक्खन बेःचताअ्ना गही दरकार मल मनी। ईद ओन्टे सड़ा ओन्टे चिनहाँ आईन नु र'ई। अवंगे भखा पण्डितर बअ्नर का पुना लिपि एन्ने मनना चही का आद ओन्टे सड़ा ओन्टे चिनहाँ आईन नु ओक्कनन नेकआ। टूड़ा गे आद सरनन नेकअन। अदी गही एःख़ किय्या का मइय्या मल ओक्कना

चही अरा टूड़ो बारी ओण्टा ख़ोःख़ा ओण्टा ओक्कना (one by one) चही। अख़आ गे देवनागरी लिपि नु fyfi बक्क टूड़ा गे मुन्ध नु fy अदी ख़ोःख़ा fi टूड़ना मनी। मून्धता fy नु उरमी ती मुन्ध ह्स्व इ ही मात्रा ¼f ½ टूड़ना मनी अदी ख़ोःख़ा y टूड़तार'ई एकदन भाखा विज्ञान दव मल बद'ई, एन्देरगे का fy फरचारना नु y ही ख़ोःख़ा b हहस बरई, पंहेस टूड़ो बाःरी f ¼b½ ही ख़ोःख़ा y टूड़तार'ई। एन्नेम, बग्गे ती बग्गे हहसन जुक्की चिनहाँ ती टूड़ा ओङगना बेसे चिन्हाँ उइतारना चही। अदी गने ई पुना चिन्हा तुरू, खोंड़हा चाःलोन उजगो ननना बेसे मनना चही। मुंज्जा नु एन्ने मनना चही का कत्थन एका बेसे कछनखरतार'ई अन्नेम टूड़ताःरना चही अरा एका बेसे टूड़का रअ्ई अन्नेम कछनखरताःरना चही। इदी गनेम ईःद मशीन नु हूँ दव कुना ओक्कतारआ ओङगनन नेकआ।

rkyk³ flfd ¼rkyk³ fyfi½ %&

तोलोङ सिकि मलता तोलोङ लिपि ओण्टा वर्णात्मक लिपि तली। ई लिपि तिके कुँडुख़ कत्थन दव कुना टूड़ा अरा बचआ ओङतार'ई। इदिन बेद्द ओथोरआ गे कुँडुख़ खोंड़हा ता नेःगचार, चाःलो अरा मइनतन डींड़ उईका रअई। कुँडुख़ खोंड़हा ता आःलर एका बसे नितकी उल्ला गोहला उइनर का एका बेसे असमा मेक्खनर, का एका बेसे गुण्डा कसनर, का एका बेसे पुजा–धजा ननो बारी ख़ेक्खन किन्दराअ्नर, अबड़न दिम एःरर की लिपि चिनहाँ उइतारकी रअ्ई। डण्डा कट्टना नेग नु एका बेसे चिनहाँ कमतार'ई अदी लेखम नेंव अरा डींःड़ उइका रअ्ई। खोंड़हा ता इबड़ा चिनहन तोलोंग अत्तना–पुन्दुरना नु एका बेसे चिनहाँ कमतार'ई आ बेसेम उरमिन हेःचका रअ्ई।

ई लेखे ख़ल्ल–उखड़ी, पद्दा–ख़ेप्पा, टोड़ंग–परता, टोला–पड़ा, एड़पा–पल्ली, अखड़ा–खूरी, नाल–टोंका गुट्ठी अड्डा तिके अनआ–मनआ चिनहाँ ख़ोःजतारा। अदी ख़ोःख़ा मूली हहसन ख़ोंःड़'अर, अदी गही बराबरी नु ओन्टा चिनहाँ उइताःरा। मूली सड़न ख़ोंःड़आ गे अक्कुन गूटी ता कुँडुख़ लूरगरियर गही टूड़का पुथिन डींड़ उईतारना मंज्जा। इदी ख़ोःख़ा ध्वनि विज्ञान गही अईन लेखेम इदिन सरियाअ्ना की उइना मंज्जकी रअ्ई। मशीन नु ओकत'आ गे ''बाइस सेगमेन्ट डिस्प्ले सिस्टम'' नाःमे ही ओण्टा फरमा कमअर अइय्या चिनहन ओकताचका रअ्ई। ई फरमन कमआ गे कुँडुख़ खोंड़हा ता ''डण्डा कट्टना नेःग चिनहन डींड़ उइका रअ्ई। इदी ख़ोःख़ा एका सड़ा गही बेहवार बग्गे मनी अदी गे सेब्बा चिन्हाँ उइका रअ्ई अरा बग्गे ती बग्गे चिनहन इन्नलता घड़ी ही किन्दरारना डहरे ती बिड़दो (anticlockwise direction) उईका रअ्ई। एन्देर गे का कुँड़ख़ खोंड़हा नु उज्जना गूटी ता उरमी नेःगचार घड़ी ही बिड़दो डहरे नु ननतार'ई। ख़ेःख़ेल हूँ बीःड़ी गही चउगुड़दी किन्दरारओ बाःरी घड़ी ही बिड़दो डहरे नु किन्दरार'ई। लड़ंग हूँ डाःड़ा नु अरगो बाःरी घड़ी ही बिड़दो डहरे नु किन्दरारनुम अरगी। बइरबण्डो हुँ घड़ी ही बिड़दो डहरे नुम किन्दरार'ई अरा अम्म भँवरी हुँ अन्नेम इन्नलता (आधुनिक) घड़ी ही बिड़दो नुम किन्दरार'ई। इबड़न दिम एःरर की कुँडुख़ पुरखर उरमी नेःगचार गुट्ठिन तीःना ती डेब्बा, घड़ी ही बिड़दो डहरे नु ननना ओःरे नंज्जर। तोलोङ नाःमे ही पइत्त नु बातार'ई का – एका बाःरी कुँडुख़ पुरखर तमहँय जिया–कयन बछाबआ गे मलता लज्जे डबआ गे अतख़ा का बोकला गुट्ठीन पोजोरआ हेल्लरर आ बाःरी ती इन्नलता अत्तना–पुन्दरना किचरी–डोड्डो कमरना गूःटी ही इतिङख़ीरी ख़ूःजूर'ई। कुँडुख़ खोंड़हा नु तोलोङ एँड़ मधे मनी – 1. सरङाधरी तोलोङ अरा 2. ढंका तोलोङ। ढंका तोलोङन कड़मा नु पोजोरना ती एका बेसे किचरी ही छया–भया ईथिर'ई, आ बेसेम सिकि चिनहाँ उईतारकी रअ्ई।

ई लेखे ई पुना सिकिन (लिपि) इंजिरओ बाःरी कुँडुख़ खोंड़हा ही इतिङख़ीरी, नेःगचारन, मशीन गही अईनन अरा भखा विज्ञानन दव कुना गुनईन ननर किम डहरे ओथोरतारकी रअ्ई।

gnk dRFkk ¼fo'k"krk,½ %&

(1½ ^^rkyk³ flfd ¼fyfi½** सँवसे कुँडुख़ खोंड़हा अरा कुँडुख़ चाःलोन डींःड़ उईयर ख़ोःजतारकी रअ्ई। नाम भारत देश नु ढेर बग्गे भखा अरा लिपि ही दबी नु रअ्दत। अवंगे, कुँडुख़ खोंड़हा गही एकता अरा परदना गे dMk[k Hk[kk&dMk[k fyfi गही हुही दिम कुँडुख़ारिन ओन्टे मेःर नु हेओ।

(2) इदी गही तोड़न (वर्णमाला) भाषा विज्ञान नु तिङगका डहरे बेसेम उईतारकी रअ्ई।

(3) कुँडुख़ कत्था गही 72 गोटङ मूली हहस (सरह – 36 अरा हरह – 35+1) रअ्ई अदिन 41 गोटङ मूली सिकि (लिपि) चिनहाँ अरा 6 गोटंग पँड़सु चिन्हाँ ती दव कुना टूड़तार'ई। कुँङख़ कछनखरना नु 35 गोटंग हरह गने 1 (ओन्टे) हेचका हरह अरा 36 गोटंग सरह हहस मनी। ई सिकि नु मूली चिन्हाँ 41 गोटङ एका मनी। इदिन निस्ठआ गे डण्डा कट्टना नेग चिन्हा नु कमरका चिन्हा नु नतगरका डींड़ (30 गोटंग) अरा हेःरका अड्डा (11 गोटंग) जोःड़ना ती 30 + 11 = 41 दिम मनी। अन्नेम पुजा ननो बाःरी बिरही अरा संजगी लग्गी, अबड़द संगरा चिन्हा ही जोक्खा तली।

(4) ई सिकिन पर्दआ गे केन्दीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर अरा जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग राँची, विश्वविद्यालय राँची ता लूरगढ़ियर ती सलहा ख़खरकी रअ्ई।

(5) इदि गे झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची ती सलहा ख़खरकी रअ्ई।

(6) ई सिकि गही कम्प्यूटरीकरण मंज्जा दरा इदी ही सोफ्टवेयर, इन्टरनेट नु ख़खरआ लगी। इदिन www.newswing.com मलता www.tolongsiki.com ती डाउनलोड ननतारआ उंग्गी।

(7) rkyk³ flfdu झारखण्ड राजी ता कुँडुख़र dMk[k dRFkk xgh fyfi बअर अंगियाचर अरा चान् 1999 तिकेम गैर सरकारी स्कूल नू टूड़ना–बचना ओःरे नंज्जका रअ्नर।

(8) इदिन कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड सरकार ही पत्रांक 129 दिनांक 18.09.2003 तुले ^^d³[k dRFkk gh fyfi rkyk³ flfd ryh** बअर मइनता ख़खरकी रअ्ई दरा संविधान ही आठवीं अनुसूची नु मंक्खा गे केन्द्र सरकार, गृह विभाग गुसन तईका रअ्ई।

(9) इदिन, झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची गही प्रेस विज्ञप्ति संख्या 17/2009 दिनांक 19.02.2009 तुरू ओण्टा स्कूल, लूरडिप्पा, भगीटोली, डुमरी, गुमला, स्कूल गे, वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2009 नु परीक्षा टूड़ा गे मईनता चितारकी रअ्ई।

(10) झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची ही अधिसूचना सं0 – JAC/गुमला/16095/12–0607/16 नेड्डा 12.02.2016 तुरू वार्षिक माध्यमिक परीक्षा 2016 ती परीक्षा टूड़ा गे मईनता चितारकी रअ्ई। मइनता ख़खरका ती एँड़ गोटंग मेच्छा लूरकुड़िया तर कुँडुख़ भखा गही परीक्षा तोलोंग सिकि नुम लिखचर दरा मैटरिक पास नंज्जर।

(11) नेड्डा 29.05.2016, उल्ला – एतवार गे कुँडुख़ (उराँव) कत्था गही परदना तूक ती कुँडुख़ लूरगरियर तरती rkyk³ flfd dMk[k ¼mjko½ Hkk"kk VkDLVcqd dfefV] >kj[k.M ही संगोठ मंज्जकी रअ्ई। ई संगोठ ही बईसकी नु बेड़ा सिरे ता उरमी कत्थन गुनईन ननर की टेक्स्टबुक कमिटि सराजमा कत्थन इंतिरताःरा दरा नलख चलाबअ्उ कमची ही गढ़ईन ननताःरा। ई संगोठ नु – अध्यक्ष, डॉ0 रामकिशोर भगत/सचिव, श्री जिता उराँव/कोषाध्यक्ष, श्री फिलमोन टोप्पो, चाःजरर।

(12) राँची विश्वविद्यालय, राँची गही अधिसूचना संख्या – B / 1236 / 16 दिनांक 26.09.2016 ती जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग ही विभागाध्यक्ष गही एःरना ख़ोजना नु ओण्टा विशेष सेल गही गढ़ईन (गठन) मंज्जकी रअ्ई, एकदद संताली भाषा ही लिपि – ओल चिकि, हो भाषा की लिपि – वराङ चिति अरा कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा ही लिपि – तोलोङ सिकि नु टूड़ना–बचना गही डहरेन पंग्गे नना गे नलख ननो।

(13) प0 बंगाल सरकार नु कल्याण विभाग तरती कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा गही पुथी तोलोंग सिकि अरा बंगला लिपि नु छपतारआ ली।

(14) ई सिकि ती जमशेदपुर शहर ता कुँड़ुख़र, टिस्को कम्पनी ही साक्षरता अभियान नलख गने जोड़ोरअर कुँड़ुख़ कत्था अरा तोलोंग सिकिन सिखिरआ दरा बीं:ड़आ लगनर।

(15) असम, प0 बंगाल, ओड़िसा, छतीसगढ़, मध्यप्रदेश अरा महारष्ट्र (नागपुर) ता कुँड़ख़र ई सिकि नु तमहय अड्डा लेखआ पुथी कमअर, ई सिकिन बीं:ड़आ लगनर।

& MkW0 ukjk;.k mjkWo ^lSUnk*

ekr`Hkk"kk dqM+[k vkSj rkyk³ flfd

vUrjk"Vªh; ekr`Hkk"kk fnol] दिनांक 21 फरवरी 2012 को दैनिक समाचार पत्र प्रभात खबर में एक बड़ी खबर छपी – nqfu;k esa 3500 Hkk"kk,¡ foyqfIr dh dxkj ij। रिर्पोट के मुताबिक, दुनियाँ में 6900 भाषाएँ बोली जाती हैं, लेकिन इनमें से 3500 भाषाओं को चिंताजनक स्थिति वाली भाषाओं की सूची में रखा गया है। इस षीर्षक के माध्यम से कहा गया है कि – ;wusLdks us o"kZ 1999 में विष्व की उन भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्द्धन की ओर दुनियाँ का ध्यान आकर्षित करने के लिए हर वर्ष 21 Qjojh को vUrjk"Vªh; ekr`Hkk"kk fnol मनाने का निष्चय किया, जो कहीं–न–कहीं संकट में हैं। इसी तरह दिनांक 23.5.1997 को दैनिक समाचार पत्र tulÙkk के माध्यम से बतलाया गया कि – पूर्व में दुनियां में 16000 भाषाएँ बोली जातीं थीं, जो 20वीं सदी में मात्र 6000 रह गयी हैं।

वर्तमान में भारतर्ष में 1911 के जनगनना के अनुसार लगभग 840 अनुसूचित जनजातियाँ हैं जिनमें से दो जनजातियों की भाषा (संताली एवं बोड़ो) को संविधान की आठवीं अनुसूची में स्थान मिला है। इसी तरह झारखण्ड में कुल 32 अनुसूचित जनजातियाँ हैं, जिनमें से मात्र 5 भाषाओं (कुँड़ुख़, मुण्डारी, खड़िया, हो एवं संताली) की पढ़ाई विष्वविद्यालय स्तर पर होती हैं।

इस षीर्षक लेख में ekr`Hkk"kk का तातपर्य dqM+[k Hkk"kk से है, जो वर्तमान में nqfu;k dh mu 3500 Hkk"kkvksa esa ls g] tks foyqIrh dh dxkj ij gSA इस भाषा को बोलने वाले mjkWo लोगों की संख्या पूरी दुनियाँ में लगभग 40 लाख से अधिक हैं किन्तु अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का मानना है कि इस भाषा को बोलने वालों की संख्या दिनों–दिन घटती जा रही है।

अपनी मातृभाषा की वर्तमान दषा का मुख्य कारण यह है कि नई पीढ़ी अपनी भाषा–संस्कृति से विमुख हो रही है। बुजुर्ग एवं पढ़े–लिखे लोग इसे उचित सम्मान दिलाने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं। पढ़ा–लिखा वर्ग भौतिकवाद की दौड़ में रोजगार की भाषा हिन्दी एवं अंग्रेजी के पीछे हैं और उन्हें देखकर अनपढ़ एवं दरपढ़ वर्ग हीन ग्रन्थी का षिकार हो रहा है। स्थिति यह है कि एक सषक्त सभ्यता एवं संस्कृति की वाहक एवं पोषक भाषा अपने ही घर में तिरस्कृत हो रही है। यह मात्र गाँव की भाषा तथा अनपढ़ लोगों की भाषा बनकर रह गई है। यह स्थिति कुँड़ुख़ भाषा की izkd`frd ekSr का द्योतक है अर्थात भाषा के साथ–साथ उस भाषा से जुड़ी सभ्यता एवं संस्कृति का भी प्राकृतिक मौत का संकेत है। क्या, हम इस चुनौती के लिए तैयार हैं ?

dqM+[k Hkk"kk dh orZeku n'kk ds dkj.k %&

¼d½ ,sfrgkfld dkj.k %&

इतिहास साक्षी है कि कुँड़ुख़ पुरखों ने अपनी जाति, परम्परा एवं सम्मान की रक्षा हेतु तुड़ख़र (गैर कुड़ुख़) लोगों से अनेकों बार युद्ध करना पड़ा। कई बार कुँड़ुख़ पूर्वज विजयी रहे और कई बार उन्हें पराजय का सामना करना पड़ा। अन्ततोगत्वा अपनी भाषा, संस्कृति एवं स्वाभिमान की रक्षा हेतु वे जंगलों में शरणागत हुए। कई साथी बिछुड़े, कई मिट गये और कई भटक गये। इस संक्रमण काल में कँड़ुख़ भाषा कई अन्य भाषाओं के सम्पर्क में आयी। फलस्वरूप भाषायी सम्मिश्रण हुआ। कालान्तर में प्रबुद्ध वर्ग की भाषा को राजकीय भाषा का दर्जा मिला, फलस्वरूप कुँड़ुख़ एवं अन्य छोटे समूह की भाषा का विकास अवरूद्ध हो गया।

¼[k½ jk"Vªh; dkj.k ½&

यूँ तो कँड़ुख़ भाषा भारत वर्ष में आदिकाल से ही विद्यमान है फिर भी इसका अपेक्षित विकास नहीं हो पाया। मुगल काल में हिन्दी के साथ–साथ उर्दू भाषा का विकास हुआ। ब्रिटिष काल में अंग्रेजों के साथ अंग्रेजी आयी। अंग्रजों ने अपने शासन काल में सरकारी नौकरी के लिए अंग्रेजी को अधिकाधिक महत्व दिया। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी को राष्ट्रीय भाषा का दर्जा मिला तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी को स्वीकार किया गया, जिसके चलते ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई कि राष्ट्रीय स्तर पर हिन्दी तथा अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अंग्रेजी रोजगार की भाषा बन गई और अन्य भाषाओं को मौका दिये बिना ही इन दो भाषाओं का उत्तरोत्तर विकास होता गया।

¼x½ {ks=h; dkj.k ½&

कुँड़ुख़ समुदाय अपने कई पड़ोसी गैर कुँड़ुख़ (तुडुख़) समुदायों के साथ–साथ रहती आयी है। एक साथ रहने के चलते इनके बीच भाषायी एवं सांस्कृतिक सम्मिश्रण हुआ और एक नई सम्पर्क भाषा (जैसे नागपुरिया यथा सादरी आदि) का विकास हुआ। बहुभाषी एवं बहुसांस्कृतिक समुदायों के बीच यह सम्पर्क भाषा को राजनैतिक एवं प्रषासनिक संरक्षण प्राप्त हुआ जिसके चलते यह कुँड़ुख़ भाषा को पछाड़ते हुए आगे निकल गई। कहा जाता है बीरू राजा का क्षेत्र (वर्तमान सिमडेगा जिला) में कुँड़ुख़ भाषा बोलने की मनाही थी तथा पकड़े जाने पर उन्हें आर्थिक दण्ड भुगतना पड़ता था।

¼?k½ Hkwe.Mhdj.k dk çHkko ½&

भूमण्डलीकरण के प्रभाव से कोई भी भाषा–संस्कृति अथवा समाज अछूता नहीं है। आज नई तकनीकि के विकास के साथ उन चीजों के साथ उनकी भाषा एवं संस्कृति भी साथ आईं और दूसरे समाज में बिन बुलाये मेहमान की तरह घुस आई। चूँकि नई तकनीकि–षिक्षा, सभी समाज को स्वीकार्य है। अतएव नई तकनीक के साथ उनके साथ आयी भाषा–संस्कृति को अपनाये बिना आगे बढ़ पाना मुष्किल होता है। इस तरह के प्रभाव से कुडुख़ भाषा–संस्कृति भी अछुता नहीं रह पाया।

¼ड½ dqM+[k lekt dh foQyrk ½&

कुँड़ुख़ समाज अपनी भाषा को संग्रहित एवं सुरक्षित रख पाने में सफल नही हो पाया। वैसे कहा गया है कि – ''भाषा परिवर्तनषील है'' किन्तु भाषा का वह रूप जो प्रकृति प्रदत है यानि जो सिर्फ बोली और सुनी जाती है, का रूप स्थिर नहीं होता है। परन्तु जो स्वरूप सभ्यता एवं संस्कृति से मिलता है यानि आँख से देखकर पढ़ सकने एवं लिख सकने की कला, जो भाषा को स्थिरता प्रदान करती है उस क्षेत्र में कुँड़ुख़ समाज सबसे पीछे रहा और आज तक पिछड़ा हुआ है। मौखिक भाषा को संरक्षित कर पाना मुष्किल है और आज के भूमण्डलीकरण के दौर में अपनी पहचान चिह्न अथवा नई लिपि दिये वगैर अपनी भाषा–संस्कृति को संरक्षित कर पाना भी मुष्किल है।

dqM+[k Hkk"kk dh orZeku n'kk lq fuokj.k ½&

¼1½ dqM+[k Hkk"kk ds fy, viuh uÃ fyfi dh LFkkiuk ½&

कुँड़ुख़ भाषा को वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में संरक्षित एवं सुरक्षित रखने हेतु साहित्य सृजन अपनी नई लिपि में होगी, जो नये दौर में भाषायी क्षरण का कवच बन पायेगा।

¼2½ fo|ky;ksa ,oa egkfo|ky;ksa ds ikB~;Øe esa LFkkfir djuk ½&

कुँडुख़ भाषा की पढ़ाई–लिखाई प्रथम कक्षा से आठवीं कक्षा तक कुँडुख़ क्षेत्रों में अनिवार्य रूप से करनी होगी। जिन्हें तकनीकि अथवा व्यवसायिक विषयों की पढ़ाई करनी होगी वे नवीं कक्षा से व्यवसायिक विषयों की ओर मुढ़ेंगे क्योंकि व्यवसायिक विषयों की पढ़ाई नवीं कक्षा से ही आरंभ होती है तथा जो मैट्रीक तक एक साहित्यिक विषय के रूप में मातृभाषा पढ़ना चाहतें हों वे अपनी मातृभाषा के साथ आगे बढ़ सकेंगे। साथ ही महाविद्यालयों में मातृभाषा विषय के पठन–पाठन की समुचित व्यवस्था करायी जानी चाहिए।

¼3½ viuh lLdfr ,oa Hkk"kk dk viuk thou lLdfr esa mrkjuk %&

कुँडुख़ समाज के लोगों को तकनीकि शिक्षा, उच्च षिक्षा आदि चीजों में पूरी ईमानदारी एवं निष्ठा पूर्वक परिश्रम करना चाहिए किन्तु दैनिक जीवन में अथवा अपने व्यक्तिगत जीवन में अपनी मातृभाषा का अनादर करना छोड़ना ही होगा।

^^rkyk³ flfd** ,d ifjp; %&

''तोलोङ सिकि'' एक लिपि है। इसे आदिवासी भाषाओं के विकास के लिए विकसीत किया गया है। लिपि के प्रारूपण में मध्य भारत के मुख्य आदिवासी भाषाओं की ध्वनियों को आधार माना गया है। लिपि चिह्नों के संकलन हेतु हल चलाते समय बनी हुई आकृतियां, परम्परागत पोषाक तोलोंग, पूजा अनुष्ठान में खींची गयी आकृतियां, डण्डा कट्टना पूजा अनुष्ठान चिह्न तथा दीवारों में बनायी जाने वाली आकृतियाँ एवं खेल–खेल में खींची जाने वाली रेखाएँ, लिपि चिह्न का मुख्य आधार है। साथ ही आधुनिक तकनीक में खरा उतरने हेतु गणितीय चिह्न जोड़, घटाव, गुणा, भाग, वृत, आयत, वर्ग आदि को भी आधार माना गया है। तोलोंग एक प्रकार का मर्दाना पोषाक है, जिसे कमर में लपेट–लपेट कर पहना जाता है। यह तोलोंग षब्द कुँडुख़, मुण्डा, खड़िया, हो, संताली आदि सभी भाषाओं में उभयनिष्ट है। सिकि का अर्थ लिपि है। इस प्रकार तोलोङ सिकि का अर्थ तोलोङ लिपि है।

dM[k Hkk"kk dk fy, uÃ fyfi dh vko';drk D;k \

भाषा वैज्ञानिकों का मानना है कि किसी भी भाषा के दो रूप होते है :–

(1) Verbal Speech या कान की भाषा।

(2) Visual Speech या आँख की भाषा।

कान की भाषा प्रकृति प्रदत है तथा यह परिवर्तनषील है। आँख की भाषा सभ्यता की देन है तथा यह किसी भी भाषा को स्थिरता प्रदान करता है। वैज्ञानिकों का मानना है स्थिर स्वरूप के बिना बोली का स्थायित्व नहीं होता है। स्थिरता प्रदान करने वाला रूप ही आँख की भाषा है। अतएव आंख की भाषा अर्थात लिपि चिह्न का विकास किया जाना आवष्यक है। जिस किसी समाज ने आंख की भाषा को अपनाया, वह वर्तमान समाज में अगली पंक्ति पर खड़ा है।

कुँडुख़ भाषा के पास अबतक सिर्फ प्रथम स्वरूप है, जिसके चलते यह भाषा अपनी परिवर्तनषील प्रकृति के अनुसार ही गतिषील है। अर्थात यदि इसे स्थिरता प्रदान करने का उपाय नहीं किया गया तो यह अपनी प्राकृतिक मौत की ओर अनायास ही बढ़ती चली जायेगी। अतः जब तक भाषा को स्थिरता प्रदान करने वाला रूप यानि लिपि नहीं दिया जायेगा तबतक इसे बचा पाने में कठिनाई होगी।

rkyk³ flfd ¼fyfi½ gh D;k \

उपलब्ध कुँडुख़ साहित्यों के अवलोकन से पता चलता है कि पूर्व में ईसाई मिषनरियों ने कुँडुख़ भाषा के लिए सर्वप्रथम रोमन लिपि का व्यवहार किया। उसके बाद देवनागरी लिपि का व्यवहार किया जाने लगा। वर्तमान में महाविद्यालों में कुँडुख़ भाषा का पठन–पाठन का माध्यम

देवनागरी लिपि है। इस परिस्थिति में एक नई लिपि ''तोलोङ सिकि'' को स्वीकार करने की बात जनमानस को झकझोरती है कि – ''एक नई लिपि की षुरूआत क्यों की जाय ?'' इस समस्या का समाधान निम्नलिखित प्रष्नों के उत्तर में निहीत है। हम सभी स्वयं से प्रष्न करें :–

(1) क्या, उपरोक्त लिपियाँ (रोमन एवं देवनागरी) कुँड़ुख़ भाषा के लिए उपयुक्त हैं ?

(2) क्या, ये दोनों लिपियाँ कुँड़ुख़ भाषा की सभी ध्वनियों को प्रतिनिधित्व करती हैं ?

(3) क्या, ये दोनों लिपियाँ कुँड़ुख़ भाषा की प्रकृति की मूलता को बरकरार रख पाएंगी ?

(4) क्या, उपरोक्त लिपियाँ कुँड़ुख़ समाज एवं संस्कृति हो प्रतिविम्बत करती हैं ?

(5) क्या, उपरोक्त लिपियों से कुँड़ुख़ भाषा एवं समाज को भूमण्डलीकरण का दबाव एवं आदिवासी समाज के चारों तरफ का revers force के दबाव से बचाया जा सकेगा ?

इन सभी प्रष्नों का उत्तर है – नहीं। यदि इन प्रष्नों का उत्तर उपरोक्त लिपियाँ नहीं है, तो सही उत्तर क्या है ? इन सभी प्रष्नों का सही उत्तर है – ''तोलोङ सिकि''।

''तोलोङ सिकि'' का आधार कुँड़ुख़ भाषा, संस्कृति, रीति–रिवाज एवं मान्यता है। इसमें कुँड़ुख़ भाषा की सभी मूल ध्वनियों के लिए ध्वनि चिह्न (लिपि चिह्न) है। यह कुँड़ुख़ भाषा की प्रकृति की मूलता को बरकरार रखने में सक्षम है। यह भूमण्डलीकरण के कुप्रभाव से बचने के लिए प्रतिरोधक का कार्य कर सकता है। साथ ही यह भूमण्डलीकरण के दबाव के बीच कुँड़ुख़ सभ्यता, संस्कृति को दूसरे बड़े समुदाय के बीच नेत्रग्राह्य बनाएगा।इतिहास की ओर मुड़कर देखने से पता चलता है कि रोमन लिपि का इतिहास रोमन सभ्यता से है तथा देवनागरी लिपि का इतिहास वैदिक सभ्यता से। इस प्रकार इन दोनों में कुँड़ुख़ सभ्यता अथवा आदिवासी सभ्यता की झलक लेष मात्र भी नहीं है। अतएव वर्तमान में रोजगार एवं तकनीकी षिक्षा हेतु हिन्दी एवं अंग्रेजी को अपनाया जाना आवष्यक है तथा अपनी भाषा–संस्कृति को बरकरार रखने के लिए अपनी मातभाषा को पठन–पाठन का आधार बनाकर आगे बढ़ना भी आवष्यक है।

इन तीनों के लिए राष्ट्रीय षिक्षा नीति मे त्रिभाषा फार्मूला को स्थान दिया गया है। साथ ही झारखण्ड सरकार ने भी इस फार्मूला को लागू किया है। अब बारी समाज की है कि आगे कैसे बढ़ें ?

fo'k"krk,¡ %&

(1) ''तोलोङ सिकि या तोलोङ लिपि,'' कुँड़ुख़ समाज एवं कुँड़ुख़ संस्कृति को आधार मानकर विकसित किया गया है।

(2) इस लिपि का वर्णमाला का निर्धारण, अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान में बतलाये गये दिषा निर्देष के अनुसार किया गया है।

(3) कुँड़ुख़ भाषा के बोलचाल में लगभग 72 ध्वनियों का व्यवहार होता है। जिसे 41 मुख्य लिपि चिह्न एवं 6 सहायक चिह्न के योग से लिखा जा सकता है। इनमें से 36 व्यंजन ध्वनि (35 मूल व्यंजन तथा 1 व्यंजन अ् ध्वनि) एवं 36 (मूल एवं संयुक्त) स्वर ध्वनि है।

(4) इसे जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग राँची, विष्वविद्यालय राँची के प्राध्यापकों का मार्ग दर्षन प्राप्त है।

(5) इसे झारखण्ड जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची के विद्वतजनों का मार्गदर्षन प्राप्त है।

(6) इस लिपि का कम्प्यूटरीकरण हो चुका है तथा सॉफ्टवेयर, इन्टरनेट में उपलब्ध है। सॉफ्टवेयर डिजाएनर श्री किसलय जी ने वर्ष 2002 में KellyTolong Font के नाम से कम्प्यूटर वर्जन विकसित किया तथा वर्ष 2016 में अद्यतन रूप प्रकाशित किया है, जो आदिवासी समाज को निशुल्क समर्पित है। इसे www.newswing.com या www.tolongsiki.com से डाउनलोड किया जा सकता है।

(7) इसे झारखण्ड के कुँड़ुख़ लोग, कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप स्वीकार किया है तथा वर्ष 1999 से ही गैर सरकारी स्कूलों में पढ़ाई–लिखाई किया जाता है।

(8) इसे झारखण्ड सरकार ने सितम्बर 2003 में कुँड़ुख़ भाषा में मान्यता देते हुए केन्द्र सरकार, नई दिल्ली को संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये जाने हेतु भेजा जा चुहा है।

(9) इस नई लिपि से मैट्रिक परीक्षा में परीक्षा लिखने के लिए झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची द्वारा 19 फरवरी 2009 को मान्यता प्राप्त है।

(10) इसे झारखण्ड सरकार युवा, संस्कृति एवं खेल मंत्रालय की ओर से 28 अक्टुवर 2011 को ''तोलोंग सिकि'' लिपि के अनुसंधान हेतु डॉ0 नारायण उराँव सैन्दा को lkLdfrd lEeku & 2011 प्रदान किया गया है।

(11) दिनांक 30.11.2015, दिन सोमवार को जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची के सभागार में विशप डॉ0 निर्मल मिंज की अध्यक्षता में dqM[k Hkk"kk ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh 'kCn Hk.Mkj का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ। समारोह में डॉ0 के0 सी0 टूडू, डॉ0 हरि उराँव, डॉ0 (श्रीमती) उषा रानी मिंज डॉ0 फ्रांसिस्का कुजूर, डॉ0 एच0 एन0 सिंह, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 रामकिशोर भगत, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', फा0 अगस्तीन केरकेट्टा, श्री अशोक बाखला, श्री जिता उराँव श्री सरन उराँव, श्री बन्दे उराँव, श्री तेतरू उराँव एवं जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के बहुत सारे छात्र–छात्राएँ उपस्थित थे। उपस्थित सभी भाषा विशेषज्ञों एवं शिक्षाविदों ने ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh (तीन लिपि – देवनागरी लिपि, रोमन लिपि एवं तोलोंग सिकि में लोकार्पित) के गुण–दोषों एवं आनेवाली पीढ़ी के लिए इसकी आवश्यकता आदि तथ्यों पर अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए जनसाधारण के व्यवहार के लिए dqM[k Hkk"kk ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh 'kCn Hk.Mkj को लोकार्पित किया गया।

(12) झारखण्ड अधिविद्य परिषद, राँची के अधिसूचना संख्या – JAC/गुमला/16095/12–0607/16 दिनांक 12.02.2016 द्वारा वर्ष 2016 से मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ भाषा पत्र को तोलोङ सिकि (लिपि) में परीक्षा लिखने की अनुमति दी गई है तथा दो उच्च विद्यालय के छात्रों द्वारा परीक्षा लिखा गया।

(13) दिनांक 29 मई 2016, दिन रविवार को कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा के विकास हेतु कुँड़ुख़ भाषी बुद्धिजीवियों द्वारा rkyk³ flfd dqM[k ¼mjkWo½ Hkk"kk VsDLVcqd dfefV] >kj[k.M का गठन किया गया। बैठक में, सभी संबंधित विषयों पर गंभीरता पूर्वक विचार करते हुए टेक्स्टबुक कमिटि के प्रस्ताव को अनुमोदित एवं स्वीकृत किया गया तथा कार्यकारिणी कमिटि का गठन किया गया। अध्यक्ष, डॉ0 रामकिशोर भगत/सचिव, श्री जिता उराँव/कोषाध्यक्ष, श्री फिलमोन टोप्पो हैं।

(14) वर्ष 2016 की मैट्रिक परीक्षा में कुँड़ुख़ विषय को तोलोङ सिकि (लिपि) में लिखने की अनुमति मिलने पर दो उच्च विद्यालय के छात्रों ने तोलोङ सिकि में परीक्षा लिखी और वे पास हुए।

(15) राँची विश्वविद्यालय, राँची के अधिसूचना संख्या – B/1236/16 दिनांक 26.09.2016 द्वारा जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के विभागाध्यक्ष के देखरेख में एक विशेष सेल का गठन हुआ है, जो संताली भाषा की लिपि – ओल चिकि, हो भाषा की लिपि – वराङ चिति तथा कुँड़ुख़ (उराँव) भाषा की लिपि – तोलोङ सिकि में पाठ्‌यक्रमों की रूपरेखा तैयार करेगी।

****

dqM[k Hkk"kk ,oa rkyk³ flfd dh O;kdjf.kd fo'ks"krk,¡ ,d v/;;u

1. 'तोलोङ सिकि' अथवा 'तोलोङ लिपि' एक वर्णात्मक लिपि है । इसे 'रोमन लिपि' की तरह एक के बाद एक लिखा जाता है। यह 'देवनागरी लिपि' में मात्रा चिह्‌न लगाने की परम्परा से मुक्त है।

इस लिपि से किसी शब्द को उसके शब्द–खण्ड (Syllable) के आधार पर लिखा एवं पढ़ा जाता है । जैसे – कमहड़। इस शब्द में कम् + हड़ दो शब्द खण्ड है। इसे तोलोङ सिकि में इस प्रकार लिखा जाता है – [illegible]+[illegible] = [illegible].

2. किसी एक शब्द–खण्ड में, व्यंजन वर्ण के साथ कम से कम एक स्वर वर्ण का होना आवष्यक है। बिना स्वर के शब्द–खण्ड पूरा नहीं होता है। जैसे – [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible].

3. किसी शब्द–खण्ड में एक मात्र स्वर रह सकता है किन्तु एक व्यंजन, स्वर वर्ण के बिना अकेला नहीं रह सकता। जैसे – [illegible] (ओ + था), [illegible] (ओथोऱ + आ), [illegible] (मेसेऱ + आ), [illegible] (गछऱ + आ)।

4. वाक्य में, किसी षब्द–खण्ड के साथ स्वर वर्ण के बाद अधिक से अधिक दो व्यंजन वर्ण होते हैं। जैसे – [illegible] + [illegible] = [illegible] (बर्ह + मा:रना = बर्हमारना)।

5. यदि किसी शब्द–खण्ड के प्रथम दोनों आरंभिक वर्ण व्यंजन वर्ण हो, तो पहला व्यंजन, द्वितीय व्यंजन के साथ संयुक्त होकर, द्वितीय व्यंजन के स्वर के अनुरूप उच्चरित होता है। जैसे – प्यार – [illegible], क्रिया – [illegible].

6. शब्द–खण्ड का अंतिम वर्ण यदि ^vdkjkUr* हो, तो वह स्वर रहित होता है। जैसे – कर्म – [illegible], समान – [illegible]. यहाँ अन्तिम वर्ण म् एवं न् स्वर रहित है, चूंकि शब्द–खण्ड का दोनों अन्तिम वर्ण ^vdkjkUr* है।

7. यह लिपि वर्णात्मक है, इसलिए हलन्त का प्रयोग नहीं होता है।

8. l;yk ¼ : ½ चिह्न का प्रयोग स्वर के उच्चारण समय को लम्बा करने तथा gpdk (।) का प्रयोग स्वर को झटके के साथ उच्चारण करने के स्थान पर किया जाता है। जैसे – [illegible] (एःड़ा)=बकरी, [illegible] (ओःड़ा)=चिड़िया, [illegible] (बअ्ना)=बोलना, [illegible] (नेअ्ना)=मांगना।

9. feryk ¼ • ½ का प्रयोग देवनागरी लिपि के बिन्दु (ं) के स्थान पर होता है अर्थात feryk चिह्न अनुनासिक व्यंजन सूचक है। इस चिह्न का प्रयोग व्यवहारिक रूप में ''प'' वर्ग, ''त'' वर्ग, ''ट'' वर्ग, ''च'' वर्ग एवं ''क'' वर्ग के निरनुनासिक वर्ण के पहले अस्पष्ट अनुनासिक व्यंजन ध्वनि आये तो, उस अस्पष्ट अनुनासिक व्यंजन ध्वनि के स्थान पर feryk ¼ • ½ चिह्न दिया जाता है। जैसे – मेंत, चेंठ, पंच, कंक, बोंगा आदि क्रमषः [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] आदि। जहाँ, स्पष्ट अनुनासिक व्यंजन ध्वनि आये, वहाँ वर्गीय वर्णों के पूर्व पंचम वर्ण का ही प्रयोग होता है। जैसे – चम्पा ([illegible]), कम्पा ([illegible]), कुम्बा ([illegible]), लम्बा ([illegible]), झण्डा ([illegible]), लेण्डा ([illegible]), रम्भा ([illegible]) आदि।

10. ?kryk (’) चिह्न का प्रयोग, शब्द–खण्ड सूचक चिह्न के रूप में किया जाता है। यदि किसी षब्द में प्रथम षब्द–खंड के बाद शब्द–खण्ड के रूप में स्वर आए तो उसे, पूर्व के शब्द–खण्ड से अलग दिखलाने के लिए ?kryk (’) चिन्ह दिया जाता है। इसके अतिरिक्त इस चिन्ह का प्रयोग वैसे स्थान पर भी होता है जहाँ एक वर्ण, प्रथम शब्द–खण्ड के अंतिम वर्ण के रूप में तथा बाद वाले शब्द–खण्ड के प्रथम वर्ण के रूप में एक ही स्थान पर व्यवस्थित हो। वैसी स्थिति में इसके उच्चारण एवं शब्द–खण्ड को दिखलाने के लिए घेतला चिह्न (शब्द–खण्ड सूचक चिह्न) पड़ता है । जैसे – पर्दो – **[illegible],** पर्दओ – **[illegible]** बन्ना – **[illegible],** बनना – **[illegible].**

11. ,ok (˜) चिह्न का प्रयोग देवनागरी लिपि के चन्द्र बिन्दु (ँ) के स्थान पर होता है अर्थात ,ok चिह्न अनुनासिक स्वर ध्वनि सूचक है। ,ok चिह्न का प्रयोग हमेशा ही अनुनासिक स्वर के रूप में होता है तथा दिगहा अनुनासिक स्वर ध्वनि के साथ, सिर्फ ,ok का प्रयोग होगा। जैसे – **[illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible], [illegible] [illegible].**

12. jok (‿) चिह्न का प्रयोग, लूप्ताकार र को दिखलाने के लिये किया जाता है। यदि किसी शब्द के अन्त में अकारान्त संयुक्त ‘र’ हो तो, ‘र’ के पूर्व वर्ण में jok (‿) ‘र’ देकर लिखा जाता है, जैसे – राष्ट्र – **[illegible],** मित्र – **[illegible],** वक्र – **[illegible],** चक्र – **[illegible],** सत्र – **[illegible],** गोत्र – **[illegible].**

13. gpdk (I) चिह्न का प्रयोग, विकारी अ ध्वनि अर्थात हरह (Glotal stop) के स्थान पर किया जाता है। हेचका हरह (Glotal stop) को दिखलाने के लिए gpdk (I) चिह्न का व्यवहार किया गया है। जैसे – रअ्ना = **[illegible],** बअ्ना = **[illegible],** चिअ्ना = **[illegible],** चिअ्ना = **[illegible],** नेअ्ना = **[illegible],** हेअ्ना = **[illegible],** खेअ्ना = **[illegible],** होअ्ना = **[illegible],** चोअ्ना = **[illegible]** आदि।

14. यदि य, र, ल, व, स, ह, ख़, ड़, ढ़ आदि के पहले, अनुनासिक ध्वनि हो, तो इन वर्णों के पूर्व के अनुनासिक ध्वनि के स्थानपर, अनुनासिक स्वर ध्वनि सूचक चिह्न ˜ (,ok) दिया जाता है। जैसे – **[illegible] - [illegible]-[illegible], [illegible] - [illegible]-[illegible], [illegible] - [illegible], [illegible] - [illegible]-[illegible], [illegible] - [illegible], [illegible] - [illegible], [illegible] - [illegible], [illegible] - [illegible], [illegible];** किन्तु कुछ विदेशज शब्दों के प्रयोग में ‘स’ वर्ण के पूर्व ‘न’ का भी प्रयोग होता है। जैसे – सन्स = **[illegible].**

15. कुँडुख़ भाषा में ङ् **([illegible])** एवं ञ् **([illegible])** का व्यवहार विशेष रूप से होता है। जैसे, ङ् ध्वनि का प्रयोग – इतङली = **[illegible],** झिलङी = **[illegible],** चिलङी = **[illegible],** झोलङो = **[illegible]** आदि। इसी तरह ञ् ध्वनि का प्रयोग, जैसे – चिञा = **[illegible],** चोञा = **[illegible],** कोञा = **[illegible],** मइञा = **[illegible],** टईञा = **[illegible]** आदि।

16. कुँड़ुख़ भाषा में ञ् (ꢾ) का व्यवहार स्पष्ट रूप से होता है। जैसे, ञ् (ꢾ) ध्वनि का प्रयोग – मञा = ꢾꢾꢾ, मुञजा = ꢾꢾꢾ, बाञलो = ꢾꢾꢾ, इञिरना = ꢾꢾꢾ, बेञेरना = ꢾꢾꢾ, मञना = ꢾꢾꢾ, दञना = ꢾꢾꢾ आदि।

17. यह लिपि, जैसा सुनो वैसा लिखो एवं जैसा लिखो वैसा पढ़ो के अंतर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत पर आधारित है। अतएव व्यवहार में जो सरल एवं ध्वनि विज्ञान सम्मत हो, उस भाषा वैज्ञानिक आधार को महत्व किया गया है। जैसे – अँटना = ꢾꢾꢾ, काँटी = ꢾꢾꢾ, खँटी = ꢾꢾꢾ, खुँटी = ꢾꢾꢾ, रँटा = ꢾꢾꢾ, राँड़ी = ꢾꢾꢾ आदि।

18. देवनागरी लिपि से कुँड़ुख़ भाषा के सभी ध्वनियों को ज्यों का त्यों लिखने में कठिनाई होती है। अतएव, भाषा विज्ञान के मूल सिद्धांत ^,d èofu ,d l।d।r* के अनुरूप तथा पुनरूक्ति दोष से बचने के लिए प्रचलित ध्वनि चिह्न के नीचे या उपर ^^भाषा विज्ञान एवं तकनीकि सम्मत'' पूरक चिह्न देकर पढ़ने एवं लिखने के तरीके को इस तोलोङ सिकि के विकास में अपनाया गया है। कुँड़ुख़ भाषा के ध्वनियों को देवनागरी लिपि में लिप्यन्तरण हेतु या उन ध्वनियों को दिखलाने के लिए पूरक चिह्नों का प्रयोग इस प्रकार किया गया है :–

(क) दिगहा सरह (Long Phone) को दिखलाने के लिए fnxgk , एवं fnxgk vk ध्वनि को क्रमश में ,ॆ तथा vkॆ की तरह लिखकर पढ़ा एवं समझा गया है। फॉदर कामिल बुल्के की पुस्तक ''अंग्रेजी–हिन्दी शब्दकोष'' में अक्षर के बाद ' **:** ' (कॉलन) चिह्न देकर दिगहा सरह (Long Phone) को दिखलाने के लिए व्यवहार किया गया है। इस पद्धति को हिन्दी साहित्य के विद्वान डॉ0 दिनेश्वर प्रसाद द्वारा भी समर्थन किया गया है। जैसे – कों:ड़ा–कों:ड़ा, मो:ड़ा, ओ:ड़ा, ए:ड़ा, ते:ला, मो:ख़ो आदि

(ख) हेचका हरह (Glotal stop) को दिखलाने के लिए ^ v॒ * चिह्न का व्यवहार किया गया है। जैसे – रअ्ना, बअ्ना, चिअ्ना, नेअ्ना, खेअ्ना, होअ्ना, चोअ्ना आदि। देवनागरी लिपि में लिखते समय देवनागरी लिपि आधारित पूरक चिह्न होना चाहिए, अतएव इसके लिए अ् चिह्न रखा गया।

(ग) घेतला (**'**) चिह्न, कुँड़ुख़ भाषा की उच्चारण विशेषता को दिखलाने के लिए यानि शब्दखण्ड को दिखलाने के लिए दिया गया है। जैसे – बरई – बर'ई, कमई – कम'ई इत्यादि।

(घ) कुँड़ुख़ भाषा के शब्दों को, 'रोमन लिपि' में लिप्यन्तरण हेतु भाषाविद् डॉ0 फ्रांसिस एक्का के 6 (six) vowel concept के सिद्धांत को स्वीकारा गया है, जो व्यवहार की दृष्टि से सर्वोत्तम है। इस सिद्धांत के अनुसार छठवाँ vowel के रूप में a के उपर पड़ी लकीर दिया गया है। जैसे :– जैसे – i, e, u, o, a, ā यथा अ = a, आ = ā, अँ = ã, आँ = a÷ .

(ङ) कुछ उर्दू , अरबी, फारसी, अंगरेजी, संस्कृत आदि ध्वनियाँ आदिवासी भाषाओं में प्रयोग होती हैं, जिनका उच्चारण सीखना चाहिए, जिससे दूसरी भाषाओं को भी सही–सही बोला एवं लिखा जा सकता है। उन ध्वनियों को निम्न प्रकार से लिखा गया है :– फ़ = ὢ // ब़ = ὤ // ज़ = ὦ // व़ = ὧ // क़ = ὣ // ग़ = ὥ / ष् = ὢ / ष् = ὠ / त्र् = ὡ / श्र् = ὠ / द्र = ὠ / कृष्ण = ὠὠὠὠ / पर्व = ὠὠὠ आदि।

****

rkyk³ flfd d: fodkl d: bfrgkl dh egRoi.k ?kVuk,¡

o"k & 1989

जिस समय डॉ0 नारायण उराँव, दरभंगा मेडिकल कॉलेज, लहेरियासराय (बिहार) में एम.बी. बी.एस. की परीक्षा पास कर इन्टर्न थे, उस समय उन्होंने आदिवासी समाज के कई सामयिक प्रष्नों के प्रत्युत्तर में एक पुस्तक लिखी, जिसका नाम है – ljuk lekt vkj mldk vfLrRo। (इस पुस्तक का लेखन एवं प्रकाशन 1989 ई0 में हुआ और इस कार्य के दौरान ही नई लिपि की आवश्यकता एवं उपयोगिता महशूस हुई)। इस पुस्तक को लिखते समय मन में कई प्रष्न उठे –

1. आदिवासियों को छोटी जाति और कमजोर, क्यों समझा जाता हैं ?
2. ऊँची जाति कहलाने वाले कौन हैं और उनकी पहचान क्या है ?
3- आदिवासी लोग, मानसिक कुण्ठा का शिकार क्यों हो जाते हैं ?

bu XkfFk;k dk nj djus d: fy, ;g tkuuk vko';d Fkk fd vkfnokfl;k dk NkVk le>u okys ykx dku g: vkj mudh igpku D;k g: \ dgh] ;g lkerokn h rkdr dk vlj rk ugh \ nlj h vkj ;g rF; g: fd vkfnoklh lekt d: ikl vHkh Hkh cgr lkjs Kku Hk.Mkj g:] ftl: iijh nfu;k dk cryk;k ugh tk ldk gA ftl fnu bl Kku mtk dk lfpr ,o fodflr dj fodflr lekt d: le{k j[kk tk,xk] mlh fnu ;g ghu XkfFk ge lHkh l: nj gkxhA½

इस उधेड़बुन में अस्पताल में कार्य करते हुए उन्हें दो चीजें दिखलाई पड़ीं –

1- Ekkyk Mh & xHk fujk/kd xkyh dh iphA

2- 100 :Ik;k dk ukVA

¼blesa dbZ fyfi;ksa esa ,d gh uke dks vyx&vyx rjhds ls fy[kk gqvk FkkA blls n[kdj mudk ân; jkekafpr gks mBk vkSj lfn;ksa ls ih<h nj ih<h pys vk jgs vkfnoklh Hkk"kk ,oa lkaLd`frd /kjksgj dks cpkus dh dMh dh ekyk esa ,d Qwy fijkus dk dk;Z vkjEHk fd;kA bl'ojh; Ásj.kk ls mudks vkHkkl gqvk fd ;fn vkfnokfl;ksa dh Hkk"kk dh Hkh viuh fyfi gksrh rks bu ifjfLFkfr;ksa esa vkfnokfl;ksa dh Hkk"kk Hkh nt gksrhA½

o"kZ & 1990

यह वर्ष उनके जीवन का चुनौती भरा वर्ष था। इस वर्ष उन्हें Three S (S - Subject, S - Service, S - Shadi) का चुनाव करना था। इसी बीच उन्होंने तय किया कि वे राज्य स्वास्थ्य सेवा में ही अपना भविष्य सवाँरेंगे और अपने जरूरत–मंद भाई–बहनों की सेवा करेंगे। इस लगन के साथ वे 06 नवम्बर 1990 को प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रामगढ़, दुमका में चिकित्सा पदाधिकारी के पद पर योगदान कर राज्य सरकार की स्वास्थ्य सेवा में कार्यारंभ किया।

o"kZ & 1991

प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र रामगढ़, दुमका में चिकित्सा पदाधिकारी के पद पर कार्य करते हुए – *हिन्दी दैनिक – 'हिन्दुस्तान', दिनांक 13 अगस्त 1991 का अवलोकन हुआ ....e.Mk l;Dr jk"V igp – राँची विष्वविद्यालय के पूर्व कुलपति व झारखण्ड आन्दोलन के नेता डॉ0 रामदयाल मुण्डा ने अब आदिवासियों के विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र का दरवाजा खटखटाया है। दूसरी तरफ भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र संघ में यह कहा कि उसके यहाँ vkfnoklh नामक कोई चीज नहीं है। जेनेवा में आदिवासियों के मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र संघ की बैठक में भाग लेकर वापस लौटने के बाद डॉ0 मुण्डा ने यह जानकारी दी। यह समाचार डॉ0 उराँव के मस्तिष्क पर गहरा प्रभाव पड़ा। इसी क्रम में उनके मन में तरह–तरह के प्रश्न उठने लगे, जिसका उत्तर ढूँढ़ने हेतु वे आगे बढ़ते गए और रास्ता निकलता गया।

साभार – सरना फूल, सरहुल विशेषांक, प्रकाषन – सरना नवयुवक संघ, रांची, 25 मार्च 1993 ई0।

प्रष्न – भारत सरकार की नजर में अगर हम आदिवासी नहीं हैं तो क्या हैं ???

1. क्या, हमारे पूर्वज आर्य हैं ? उत्तर मिला – नहीं।
2. क्या, कुँड़ुख़ भाषा, आर्य भाषा परिवार की है ? उत्तर मिला – नहीं।
3. क्या, हम हिन्दु (धर्म के अर्थ में) हैं ? उत्तर मिला – नहीं।
4. क्या, आदिवासी शूद्र है ? उत्तर मिला – नहीं।
5. हमारी भाषा (कुँड़ुख़), कौन सी भाषा परिवार की है ? उत्तर – द्रविड़ भाषा परिवार।
6. भारतीय संविधान में हमारी पहचान क्या है ? उत्तर – अनुसूचित जनजाति।
7. दुनियाँ हमें किन–किन नामों से जानती है ? उत्तर – Tribe, Indigenous.

(Tribe एवं Indigenous का हिन्दी अनुवाद भी उनके हृदय को स्पर्ष नहीं कर पाया और वे अपनी पहचान ढूँढ़ने आगे बढ़े। उन्हें अपनी अन्तर्रात्मा से उत्तर मिला, अपनी भाषा–संस्कृति को दुनियाँ के सामने स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ो और वे आगे बढ़ते गए।)

o"k & 1992

I – दिनांक 12 मई 1992 को करमटोली, राँची, निवासी श्री राजू उराँव एवं श्रीमती सीता टोप्पो की चौथी पुत्री, सुश्री ज्योति टोप्पो (व्याख्याता, संस्कृत, गॉस्सनर कॉलेज, राँची) के साथ विवाह कर, पारिवारिक बंधन में बंधे।

II – अखिल भारतीय कुँड़ुख़ कत्थ जतरा, गुमला, दिनांक 17–18 अक्टूबर 1992 को प्रो0 बेर्नाड मिंज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस जतरा में तीन लिपियाँ समाज के सामने आयीं –

1. कुँड़ख़ लिपि – श्री सामुएल रंका, 1937 ई0।
2. कुँड़ख़ लिपि – फादर बेन्जामिन कुजुर।
3. बराती लिपि – डॉ0 अनन्ती जेबा सिंह, 1991 ई0।

इस जतरा में हुए कार्यवाही का संकलन, सरना फूल, पत्रिका के सरहुल विशेषांक के 'हलचल' शीर्षक में प्रकाशित है, जिसमें उल्लिखित मुख्य बातें इस प्रकार हैं –

1. प्रो0 हरी उराँव ने अबतक कुँड़ुख भाषा में उपलब्ध समस्त पुस्तकों, लेखकों की विस्तार से चर्चा की।

2. डॉ0 बिशप निर्मल मिंज ने डॉ0 अनन्ती जेबा सिंह की बराती लिपि की विस्तार से चर्चा की और बताया कि इस लिपि को कम्प्यूटर ने कुँड़ुख़ भाषा के लिए उपयुक्त बतलाया है।

3. श्री महादेव टोप्पो ने प्रतिनिधियों से कहा कि वे विभिन्न लिपियों को जाने, समझें जरूर लेकिन जब भी लिपि के चुनाव की बात आये, सर्वसम्मति से किसी एक को ही स्वीकार करें।

4. श्री उपेन्द्र नारायण उराँव ने लिपि समस्या पर बोलते हुए ऐसी लिपि की खोज पर बल दिया जो अधिक वैज्ञानिक, सर्वग्राह्य एवं सर्वमान्य हो। इसके लिए उन्होंने देवनागरी लिपि को काफी हद तक उपयोगी बतलाया।

साभार – सरना फूल, सरहुल विषेषांक, प्रकाषन – सरना नवयुवक संघ, राँची, 25 मार्च 1993 ई0। शीर्षक : हलचल।

III – कुँड़ुख़ कत्थ जतरा, गुमला में लिपि के अग्रेतर विकास हेतु चयनित बराती लिपि के अध्ययन के बाद वांछित लिपि के विकास के कार्य को आगे बढ़ाने के लिए *ऑल झारखण्ड स्टूडेन्टस यूनियन (आजसू)* के वरीय नेताओं यथा *श्री विनोद कुमार भगत, श्री प्रभाकर तिर्की, डॉ0 देवशरण भगत, प्रो0 प्रवीण उराँव, शहीद स्व0 सुदर्शन भगत* आदि द्वारा ubl fyfi के विकास संबंधी कार्य के लिए *डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'* को उत्प्रेरित किया गया।

नई लिपि के लिए समाज की उत्कण्ठा का उदेष्य –

Á'u & यदि आने वाले समय में झारखण्ड अलग प्रान्त होता है तो वही पुराना सिस्टम रहेगा यानि मंत्री से संतरी तक तथा सचिवालय से निदेषालय तक पहले वाला ही सिस्टम रहेगा। ऐसे में हमारे समाज को क्या मिलेगा ? तब, यह आन्दोलन क्यों और किसके लिए ?

mÙkj & आदिवासी समाज के पास उसकी अपनी भाषा और संस्कृति है। यदि आन्दोलन के माध्यम से इसे बचा पाने में सफलता मिलती है तो हम सब की कुर्बानी व्यर्थ नहीं जाएगी। इसके लिए हमें अपनी भाषा को बचाने के उपायों पर कार्य करना होगा। भाषा को बचाने के लिए उसे नेत्र ग्राह्य बनाकर, वर्तमान स्कूल व्यवस्था अर्थात शिक्षा व्यवस्था में शामिल किया जाना आवश्यक है, तभी भाषा बचेगी। जब भाषा बचेगी तो संस्कृति अपने आप बच जाएगी।

Á'u & कुछ लोगों का कहना है – यूरोपीय देशों में अधिकाधिक देशों की भाषा की लिपि, रोमन लिपि है, अतएव भारत में, नई लिपि के स्थान पर, देवनागरी लिपि, क्यों नहीं ?

mÙkj & इस प्रश्न के संबंध में डॉ० रामदयाल मुण्डा का मानना था – यूरोप के अधिकाधिक देशों में एक देश, एक भाषा, एक लिपि जैसी स्थिति है। पर, सभी देशों की भाषा की लिपि रोमन लिपि नहीं है। भारतीय संविधान ने हमें अपनी भाषा, संस्कृति, लिपि को अक्षुण रखने का अधिकार दिया है तथा हमारे देश में, अनेक भाषा, अनेक लिपि संवैधानिक तरीके से अक्षुण है। ऐसे में किसी दूसरे सभ्यता–संस्कृति के माध्यम से अपनी भाषा, सभ्यता–संस्कृति को अक्षुण नहीं रखा जा सकता है। इसलिए वर्तमान में, रोजगार की भाषा हिन्दी एवं अंगरेजी को अपनाते हुए, तीसरी भाषा यथा अपनी मातृभाषा एवं लिपि की आवश्यकता है।

fyfi fpgu dk vk/kkj %&

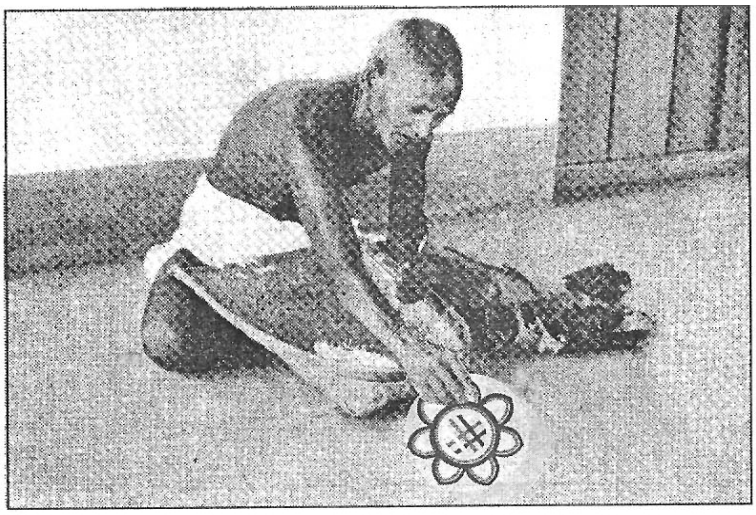

M.Mk dV·Vuk i t k vu"Bku ,o vu"Bku fpgu

dkgk ikgh vu"Bku ,o vu"Bku fpgu

ijEijkxr rkyk³ ik’kkd igudj uR; djr g, vkfnoklh ;od

III – Jh Hkus’oj mjko] अपने पुत्र MkO ukjk;.k mjko को कागज–कलम में गोल–मटोल एवं टेढ़ी–मेढ़ी आकृति खींचते देखकर बोले – बेटा, एन्देर नना लगदय ? ख़ने तंगदस बाःचस – कुँडुख़ कत्था गे लिपि गढ़आ लगदन। तंगदस गही चिहुँटन एःरर तम्मबस मेंज्जस – इबड़न ने बुझुरओ ? तम्मबस गही कत्थन मेनर तंगदस किरताचस – नीन टूड़ा–बचआ एकसन सिखिरकय। ख़ने बबस गच्छरस – स्कूल नु सिखिरकन। तम्मबस गही किरताचकन मेनर तंगदस बिड़दाचस – ई लिपि हुँ स्कूल नु पढ़ाई मनो होले ओरमर सिखिरओर। कत्थन बुझुर’अर बबस आःनियस – एन्ने मनी, होले कला दव कुना नना।

MkO ukjk;.k mjko d firk J);; Hkus’oj mjko

IV – Jherh Qyeuh mjko] अपने पुत्र MkO ukjk;.k mjko को अपने पिताजी के साथ बाद–विवद में उलझते देख सामने आयीं और बोलीं – *निंग्गन नेखअय ती हुँ एलेचना मल्ला। निम्बस सम्भड़आ पोल्लोस, होले एःन एःरोन! खोंड़हा गही दव नलख खतरी नीन दव नलखन दव कुना नना। धरमे अरा धरमी सवंग निंग्गन डहरे एःदओ।* अपनी माँ के इस बात से उनको बल मिला और वे इस कार्य में आगे बढ़ते गये। MkO mjko बतलाते हैं कि उनके साधारण खेतिहर पिताजी मेडिकल कॉलेज में एडमिशन के लिए मना कर दिये, क्योंकि मेडिकल का खर्चीला पढ़ाई का खर्च पूरा नहीं कर पाते। इस पर, उनकी माँ ने कहा – *नीन कला अउर नाःमे लिखतआ, एःन झरा बीःसा–बीःसा निंग्गन पढ़तोओन।* माँ ने अपना वचन पूरा किया और बेटे को डाक्टर बनाया।

Mk0 ukjk;.k mjk¡o dh ek] Jherh Qqyeuh mjk¡o

V – डॉ0 उराँव जब शोध कार्य कर रहे थे, तब उन्हें राँची में पत्राचार के लिए एक ठिकाना तलाश करना था, जो 1992–93 के आसपास, आंदोलनकारियों के लिये कठिन चुनौती था। Jherh lhrk Vkli¨] पति : श्री राजू उराँव, करमटोली, राँची, अपने दामाद के संकट को समझी और पत्राचार के लिए अपने घर का पता देकर, कार्य को आगे बढ़ाने में ढाढ़स बंधायी।

Mk0 ukjk;.k mjk¡o dh lkl ek] Jherh lhrk Vkli¨

o"kZ & 1993

1- ubZ fyfi के विकास की परिकल्पना का साकार रूप आरंभ एवं इसके प्रचार हेतु Tribal Research Analysis Communication & Education (TRACE) नामक संस्था का गठन हुआ। इस संस्था का सम्मानित अध्यक्ष bfTtfu;j ,0 ,e0 [ky[kk] करमटोली चौक, मोरहाबादी, राँची तथा सम्मानित निदेषक Mk0 ukjk;.k mjk¡o बने।

2. ई0 ए0 एम0 खलखो इस लिपि का नाम rkyk³ flfd चुने जाने एवं इसे स्थापित किये जाने में Mk0 ukjk;.k mjk¡o की परिकल्पना को J)s; Mk0 cgjk ,Ddk] J)s; Mk0 jken;ky e;.Mk एवं J)s; Mk0 ckfnuo clS;k ने अपने उत्कृष्ट विचारों का बहुमुल्य योगदान दिया।

3. fnukad 24 flrEcj 1993 b0 को lj.uk uo;qod la?k द्वारा आयोजित, करम पूर्व संध्या, के अवसर पर पहली बार जनमानस के अवलोकन हेतु rkyk³ flfd को राँची कॉलेज, राँची के सभागार में रखा गया।

4. हिन्दी दैनिक – ^vkt*] दिनांक 07 अक्टुबर 1993 ई0 को *तोलोङ सिकि* के विषय में समाचार पत्र में पहली बार छपा।

उरांव जातिकी कुँडुख़ लिपिका अविष्कार

छः महीनेके अथक प्रयासका नतीजा

रांची। रांची स्थित 'ट्राइबल रिसर्च एनालिसिन कम्युनिकेशन एण्ड एजुकेशन' नामक संस्थानने बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा तथा मध्य प्रदेशके पठारी क्षेत्रोंके लगभग बीस लाख उरांव जातिके लोगों द्वारा बोली जानेवाली 'कुंड़ुख़' भाषाकी लिपिका आविष्कार किया है।

लगभग छः महीनेके अथक प्रयासके बाद 'ट्राइबल रिसर्च एनालिसिस कम्युनिकेशन एण्ड एजुकेशन' नाम संस्थानने उरांव जाति द्वारा बोली जानेवाली कुंड़ुख़ भाषाकी 'तोलोंग' लिपिका आविष्कार किया है। तोलोंग लिपिका सार्वजनिक रूपसे पहली बार प्रदर्शन गत २५ सितम्बरको करम पर्वकी पूर्व संध्यापर रांची कालेजके सभागारमें आयोजित कार्यक्रमके अवसरपर किया गया।

संस्थानके निदेशक डाक्टर नारायण उरांवने एक भेंटवार्ताके दौरान 'तोलोंग' लिपिकी विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि 'तोलोंग' एक विशेष प्रकारकी पोशाक है जो उरांव जातिके लोगोंकी पहचान है। तोलोंग दो प्रकारका होता है। पहला सरंगाधारी तोलोंग-जिसमें आगेसे पीछे तक सीधा कपड़ा झुला हुआ रहता है। दूसरे प्रकारके तोलोंगमें बारह हाथके कपड़ेको लपेटकर पहना जाता है इसे बारहों तोलोंग कहा जाता है। इसी बारहों तोलोंगको आधार मानकर कुड़ुख भाषाकी लिपिकी रचना की गयी है। कुंड़ुख़ भाषामें लिपिको 'सिकि' कहा जाता है।

'कुंड़ुख़' भाषाके लिए अलगसे विकसित इस लिपिकी आवश्यकता बताते हुए डाक्टर नारायण उरांवने कहा कि वर्तमान समयमें लिपिके अभावमें कुंड़ुख़ भाषी लोग भी देवनागरीमें ही कुंड़ुख़ लिखते हैं। जिससे देवनागरीमें कुंड़ुख़ भाषा लिखनेमें कठिनाई होती है तथा भाषायी विसंगति होती है। क्योंकि देवनागरी लिपिमें 'कुंड़ुख़' भाषामें उच्चरित सभी ध्वनि चिन्ह नहीं हैं।

डाक्टर उरांवने बताया कि 'कुंड़ुख़' भाषा द्रविड़ भाषा परिवारका सदस्य है। इसलिए 'तोलोंग' लिपिकी रचनामें यह विशेष ध्यान दिया गया है कि यह द्रविड़ भाषाकी लिपियोंकी श्रेणीमें ही रह सके। इस लिपिमें ४४ वर्ण हैं तथा उनके अलग ध्वनि चिन्ह हैं।

डाक्टर नारायण उरांव जो पेशेसे एक चिकित्सक हैं, ने बताया कि वे तथा उनके सहयोगियोंने लगभग छः महीनेके अथक प्रयासके बाद इस लिपिका आविष्कार किया है। उन्होंने कहा कि किसी भी भाषाके विकासके लिए साहित्यका विकास जरूरी है तथा साहित्यके विकासके लिए लिपिका होना आवश्यक है। इसलिए किसी भी भाषा साहित्यको अक्षुण बनाये रखनेके लिए लिपिका होना आवश्यक है।

उल्लेखनीय है कि बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा तथा मध्य प्रदेशके सामावर्ती पठोरी क्षेत्रोंमें रहनेवाले लगभग बीस लाख उरांव जातिके आदिवासियोंकी भाषा 'कुंड़ुख़' है।

ट्राइबल रिसर्च एनालिसिस कम्युनिकेशन एण्ड एजुकेशन नामक संस्थानके अध्यक्ष श्री ए. एम. खालखो हैं तथा तोलोंग लिपिके विकासमें विवेकानंद भगत, बहुरा उरांव, राजेश कुजूर, नारायण भगत, लौहर मैन उरांव तथा गंगा उरांव जैसे भाषा विशेषज्ञोंने अहम भूमिका निभायी है।

डाक्टर नारायण उरांवने बताया कि फिलहाल तोलोंग लिपिको कुंड़ुख़ भाषा भाषी लोगोंके बीच प्रचारित प्रसारित किया जायेगा तथा उसे अपनानेपर बल दिया जायेगा। बादमें इस लिपिको अधिकृत मान्यता दिलानेकी दर्खास्त की जायेगी।

आज (राँची) - 7 अक्टुबर 1993

5- Mk0 ukjk;.k mjk¡o द्वारा डण्डा कट्टना नेग चिनहाँ के आधार पर 22 Segment Display System (Tolong Siki Display System) का निर्माण किया गया। इसे Multilingual Display System भी कहा जाता है। तोलोङ सिकि का लिपि चिह्न इसी सिस्टम के दायरे में है।

rkyk³ flfd ¼fyfi½ dh mRÁjd lLFkk
o"kZ & 1994

1. MkW0 ukjk;.k mjkWo द्वारा लिखित प्राथमिक पुस्तक dqM+[k rkyk³ flfd vjk cDd x<u] उषा इन्डस्ट्रीज, भागलपुर (बिहार) से माह जनवरी 1994 में प्रकाषित हुआ। पूर्व में 1989 से जनवरी 1994 तक हस्त लिखित रूप का छः बार संशोधन हुआ। वर्णमाला तैयार करने में कई चुनौतियाँ आयी – 1. वर्णमाला के लिए कौन–कौन सी ध्वनियों के लिए चिह्न रखा जाय। 2. मूल ध्वनियों के लिए चिह्नों या आकृतियों का चुनाव कैसे किया जाय। इस उपापोह में देवनागरी की लेखन पद्धति के अनुसार वर्णों को सजाया गया, किन्तु ङ, ञ, श, ष, क्ष, त्र, ज्ञ, श्र, ऋ, ऐ, औ आदि संस्कृत–हिन्दी के ध्वनियों के लिए ध्वनि चिह्न नहीं रखा गया, क्योंकि इन ध्वनियों का व्यवहार कुँडुख़ भाषा में नहीं होता है। ध्वनि चिह्न के लिए समाज के अन्दर दिनचर्या में किये जाने वाले क्रिया कलापों को आधार मानकर वर्णमाला निर्धारण किया गया।

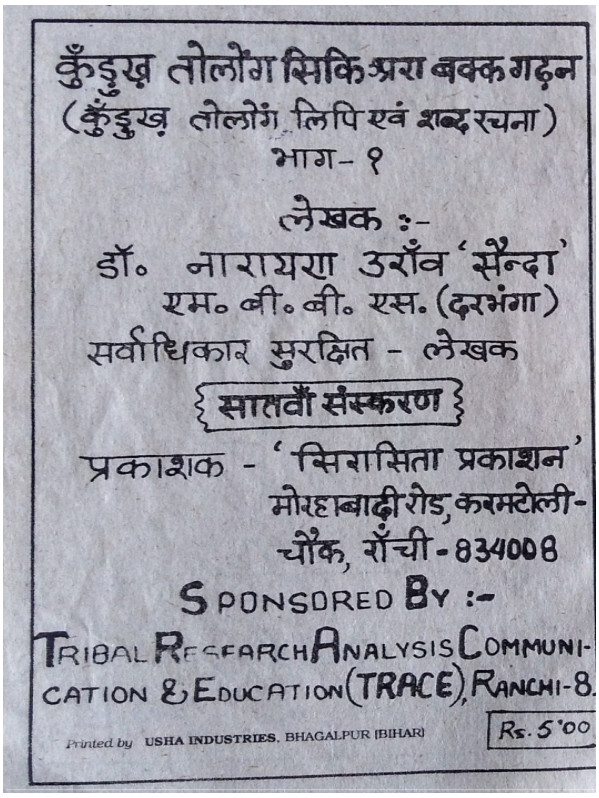

कुँड़ुख़ तोलोंग सिकि अरा बक्क गढ़न
(कुँड़ुख़ तोलोंग लिपि एवं शब्द रचना)
भाग- १
लेखक :-
डॉ॰ नारायण उराँव 'सैन्दा'
एम॰ बी॰ बी॰ एस॰ (दरभंगा)
सर्वाधिकार सुरक्षित - लेखक
सातवाँ संस्करण
प्रकाशक - 'सिरासिता प्रकाशन'
मोरहाबादी रोड, करमटोली-चौक, राँची - 834008
SPONSORED BY :-
TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION (TRACE), RANCHI-8.
Printed by USHA INDUSTRIES, BHAGALPUR (BIHAR)
Rs. 5'00

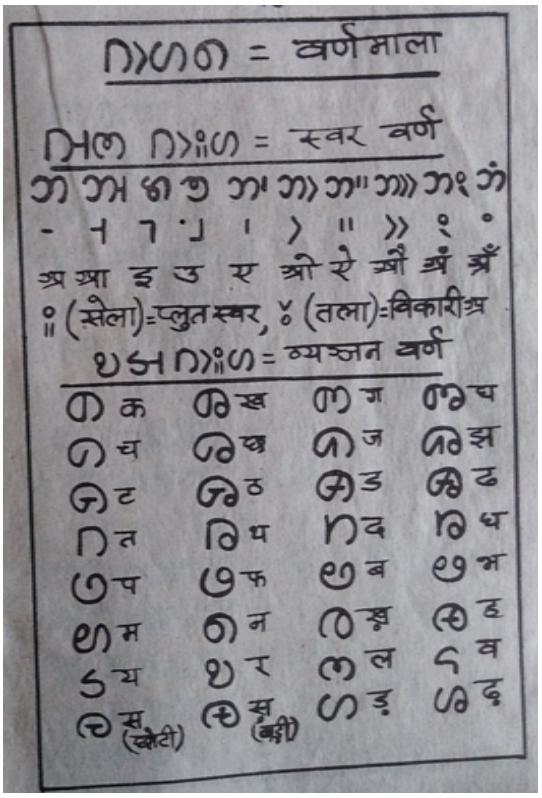

2- दिनांक 18 – 25 फरवरी 1994 तक आयोजित हिजला मेला, दुमका में 22 Segment Display System (Tolong Siki Display System) एवं rkyk³ flfd fyfi को प्रदर्षित किया गया। जहाँ बहुत से शिक्षाविद, पदाधिकारी एवं पत्रकारों ने कई प्रश्न पूछे।

18–25 फरवरी 1994, हिजला मेला दुमका में तोलोङ सिकि को प्रदर्शित करते हुए अन्वेषक डॉ0 नारायण उरांव (बायें) एवम् तकनीकि सहायक श्री रमेश कुमार साह (दायें)

3- ljuk uo;od l?k] jkph के सौजन्य से आयोजित, सरहुल पूर्व संध्या, 13 अप्रैल 1994 ई0 को Mk0 jken;ky e.Mk द्वारा dM[k rkyk³ flfd vjk cDd x<u को लोकार्पित किया गया। Mk0 e.Mk th के साथ डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा'।

रांची एक्सप्रेस बृहस्पतिवार, 14 अप्रैल 1994

सरहुल पूर्व संध्या पर सांस्कृतिक कार्यक्रम

'सरहुल आदिवासियों की सांस्कृतिक विरासत'

4. डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' ने अप्रैल 1994 के अंत में ही तोलोङ सिकि संख्या का परिमार्जित स्वरूप समाज तक पँहचाने के लिए Multilingual Numeral Display सिद्धांत के साथ सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली रेखाचित्र को अंक का रूप प्रदान किया, जिसे तमाम शिक्षाविदों ने सराहा और उसे सामाजिक स्वीकृति प्राप्त हुई।

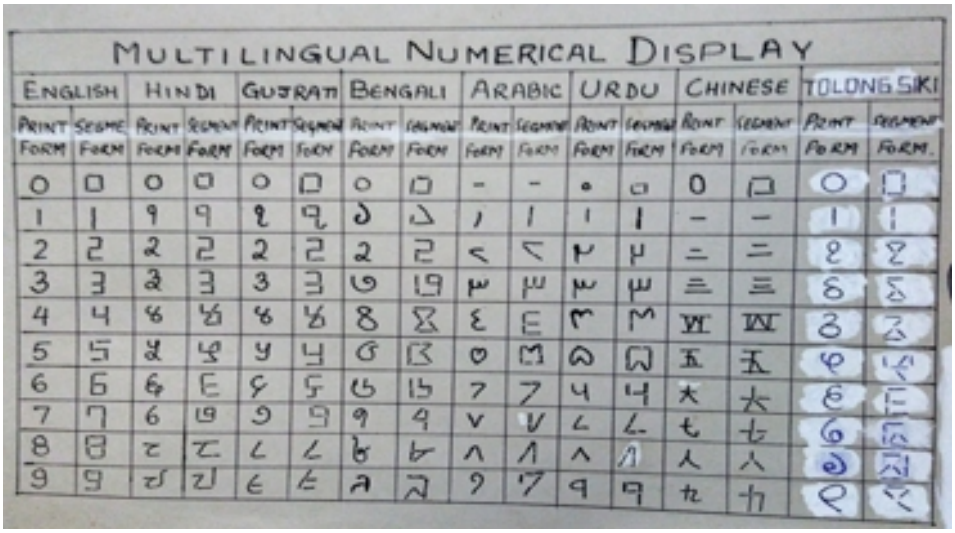

5- मासिक पत्रिका >kj[k.M T;kfr] *15* मई 1994 ई0 अंक में *तोलोंग सिकि* के विषय में डॉ0 नारायण उराँव का भेंट वार्ता छपी।

कुँड़ुख भाषा के तोलोंग लिपि के अविष्कारक
— डॉ. नारायण उराँव

6- हिन्दी दैनिक – 'जनसत्ता', दिनांक 23 मई 1994 ई0 को *एक लिपि कई प्रश्न* विषयक समाचार लेख छपी।

झारखंड "जनसत्ता" एक लिपि कई प्रश्न 23मई1997 वासवी

7- हिन्दी दैनिक – 'आज', दिनांक 24 जून 1994 ई0 को dM[k Hkk"kk dh rkykx fyfi dk dEI:Vj ij mrkjus dh r};kjh शीर्षक लेख छपी।

आज 24 जून 1994

'आज' (रांची) २४ जून १९९४ (३)

किया। सम्मेलनमें बिहारकी शिक्षा मंत्री उषा श्रीवास्तव सहित भारी संख्यामें चिकित्सक उपस्थित थे।

कुँडुख़ भाषाकी 'तोलोंग' लिपिको कंप्युटरपर उतारनेकी तैयारी

'तोलोंग' लिपिमें पत्राचार तथा पुस्तक रचना आरंभ

तोलोंग लिपिके लिए खोजी गयी '२२ सेगमेंट डिसप्ले सिस्टम'

रांची। उरांव जातिके बीस लाख लोगों द्वारा बोली जानेवाली 'कुँडुख़' भाषाके लिए जिस 'तोलोंग' लिपिका आविष्कार किया गया है उसे 'कंप्यूटराइज्ड' करनेकी तैयारी पूरी हो चुकी है तथा इस 'लिपि' में ही उरांव कथा, कहानियों, साहित्य, परंपरागत गीत, प्रार्थना आदिको लिपि बद्ध करने तथा उसे प्रचारित प्रसारित करनेकी जोरदार तैयारी की जा रही है। इसके अलावा तोलोंग लिपि में ही अभी तक दो पुस्तोंका प्रकाशन भी किया जा चुका है।

उरांव जातिकी कुँडुख़ भाषाको लिपिबद्ध करनेकी तैयारीमें पिछले डेढ़ वर्षोंसे जुटे 'ट्राइबल रिसर्च एनालिसिस कम्युनिकेशन एण्ड एजुकेशन' (ट्रेस), तोलोंग लिपिके आविष्कारक डाक्टर नारायण उरांव ने बताया कि 'कुँडुख़' द्रविड़ समूहकी भाषा है। इसलिए इसके लिए आविष्कार की गयी 'तोलोंग' लिपि भी 'द्रविड़' लिपियोंसे ही मिलती जुलती है। डाक्टर उरांवने स्पष्ट किया कि स्वाभाविक मेल जोलके बावजूद तोलोंग लिपि बिल्कुल ही अलग प्रकृति की है तथा इसका उद्‌भव बिल्कुल ही उरांव जातिकी मौलिक पहचान से जुड़ा हुआ है। उन्होंने बताया कि उरांव जातिके लोगों द्वारा पहने जानेवाली विशेष पोषाक तोलोंग से इस लिपिका उद्‌भव हुआ है। उरांव जातिके लोगोंकी मान्यता है कि भगवान महादेव भी तोलोंग ही पहना करते थे। इसी पोषाकको आधार मानकर तोलोंग लिपि का विकास किया गया है।

डाक्टर नारायण उरांवने बताया कि उक्त लिपिको कंप्यूटराइज्ड करनेकी भी सैद्धांतिक तैयारी पूरी कर ली गयी है। इसके लिए गोलवा फारी (डंडा कट्टाना) नामक उरांव जातिके धार्मिक अनुष्ठान चिन्ह को आधार मानकर '२२ सेगमेंट डिस्प्ले सिस्टम' बनाया गया है। इस अनुष्ठान चिन्हमें रेखाओंकी संख्याके बराबर व्यंजन हैं। जबकि पूजा में लगनेवाली सामग्रीके बराबर ही स्वर हैं। उरांव जातिके लोगोंकी मान्यता है कि महादेव पार्वती ने ही 'उरांव' लोगोंको यह धार्मिक अनुष्ठान बताया था।

डाक्टर उरांवने बताया कि इस तोलोंग लिपिको बिल्कुल ही भाषा विज्ञानके आधारपर विकसित किया गया है। इसलिए इसे पढ़ने, समझने तथा समझानेमें पूरी सहुलियत होगी। भाषा विज्ञान पर आधारित होनेके बावजूद यह लिपि सीधे-सीधे उरांव जातिके धार्मिक तथा सांस्कृतिक चिन्होंको प्रतीक मानकर ही विकसित की गयी है। जिससे इस लिपि से उरांव जातिकी मौलिकता परिलक्षित होती है।

गुमला जिलांतर्गत सिसई प्रखंड के साईन्दा गांवके मूल निवासी डाक्टर नारायण उरांव पेशेसे चिकित्सक हैं तथा वे फिलहाल रामगढ़ (दुमका) स्थित प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रमें चिकित्सा पदाधिकारीके पदपर कार्यरत हैं। वर्ष १९८९ में दरभंगा मेडिकल कालेजसे उन्होंने एम.बी.बी.एस. की परीक्षा पास की। १९८९ में डाक्टर नारायण उरांवने दरभंगा से ही 'सरना समाज और उसका अस्तित्व' नामक पुस्तक का प्रकाशन कराया।

पिछले डेढ़ वर्षोंसे रांची स्थित 'ट्राइबल रिसर्च एनालिसिस कम्युनिकेशन एण्ड एजुकेशन' नामक संस्थाके तहत उरांव जाति द्वारा बोली जानेवाली 'कुँडुख़' भाषा के लिए 'तोलोंग' लिपिका आविष्कार करनेमें जुटे हुए हैं।

'तोलोंग' लिपिका आविष्कार करनेके बाद डाक्टर उरांवने तोलोंग लिपिमें ही पुरस्क लिखना तथा पत्राचार आदि भी आरंभ कर दिया है। डाक्टर उरांव द्वारा तोलोंग लिपिमें लिखी गयी 'कुँडुख़ तोलोंग सिकि अरा बक्क गढ़न' (कुँडुख़ तोलोंग लिपि एवं शब्द रचना) नामक पुस्तक का गत १५ फरवरी १९९४ को विमोचन किया गया। इसी पुस्तकका द्वितीय संस्करण १२ मई ९४ को प्रकाशित किया गया। इसके अलावा २१ से २८ फरवरी ९४ तक चलनेवाले दुमकाके हिजला मेला में भी डाक्टर उरांव द्वारा रचित तोलोंग लिपि की पुस्तक तथा तोलोंग लिपिकी जानकारियोंकी प्रदर्शनी लगायी गयी।

इसी प्रकार डाक्टर उरांव द्वारा ही लिखी गयी तोलोंग लिपिकी पझरा (झरना) नामक मासिक पत्रिका भी प्रकाशित हो रही है। यह एक चार पृष्ठकी पत्रिका है जो उरांव जातिकी धार्मिक-सांस्कृतिक पहचान को उजागर करती है।

ज्ञात हो कि रांची, गुमला लोहरदगा, हजारीबाग, सिंहभूम, साहेबगंज, गोड्डा, पश्चिम चंपारण, पूर्णिया, रोहतास, सिलीगुड़ी, झाड़ग्राम, उड़ीसा, मध्य प्रदेशके सीमावर्ती इलाकों आदिमें रहने वाले लगभग बीस लाख उरांव जाति के लोग 'कुँडुख़' भाषा-भाषी हैं। लेकिन इस 'कुँडुख़' लिपिके लिए अभी तक कोई विशेष 'लिपि' ज्ञात नहीं है। जिससे कि कुँडुख़ भाषा, साहित्यिक रूपसे सही ढंगसे बोली तथा लिखी जा सके। डाक्टर नारायण उरांव पिछले डेढ़ वर्षोंसे इसी प्रयासमें जुटे हुए हैं तथा अब उन्होंने सांस्कृति पहचान चिन्होंके आधारपर खोजी गयी उक्त तोलोंग लिपिको आधुनिकतम 'कंप्यूटर' तक पर खरा उतारनेकी सैद्धांतिक तैयारी पूरी कर ली है।

8 - दिनांक 27 जून 1994, दिन सोमवार को अंगरेजी दैनिक Hindutan Times में एक बड़ी ख़बर छपी।

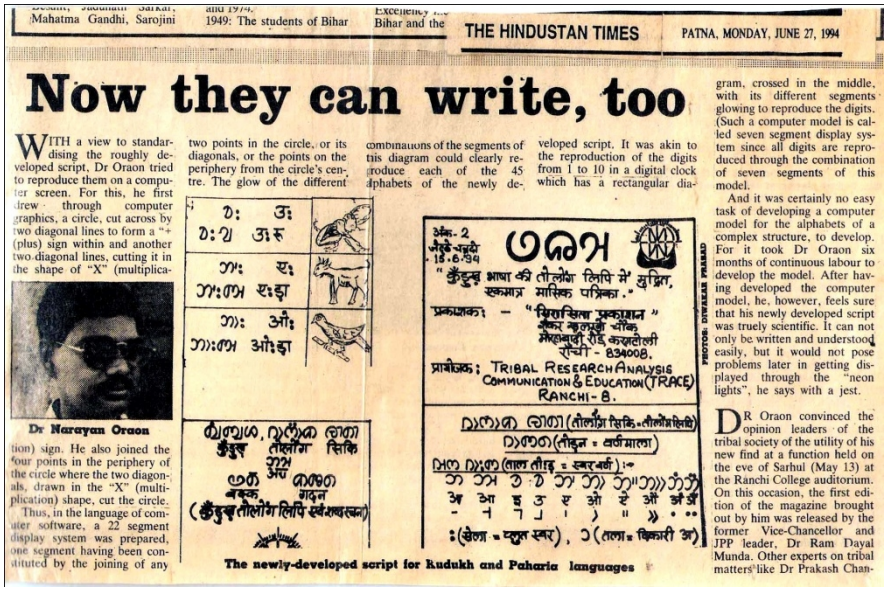

Mahatma Gandhi, Sarojini | 1949: The students of Bihar | Bihar and the

THE HINDUSTAN TIMES PATNA, MONDAY, JUNE 27, 1994

Now they can write, too

WITH a view to standardising the roughly developed script, Dr Oraon tried to reproduce them on a computer screen. For this, he first drew through computer graphics, a circle, cut across by two diagonal lines to form a "+ (plus) sign within and another two diagonal lines, cutting it in the shape of "X" (multiplication) sign. He also joined the four points in the periphery of the circle where the two diagonals, drawn in the "X" (multiplication) shape, cut the circle.

Dr Narayan Oraon

Thus, in the language of computer software, a 22 segment display system was prepared, one segment having been constituted by the joining of any two points in the circle, or its diagonals, or the points on the periphery from the circle's centre. The glow of the different combinations of the segments of this diagram could clearly reproduce each of the 45 alphabets of the newly developed script. It was akin to the reproduction of the digits from 1 to 10 in a digital clock which has a rectangular diagram, crossed in the middle, with its different segments glowing to reproduce the digits. (Such a computer model is called seven segment display system since all digits are reproduced through the combination of seven segments of this model.

And it was certainly no easy task of developing a computer model for the alphabets of a complex structure, to develop. For it took Dr Oraon six months of continuous labour to develop the model. After having developed the computer model, he, however, feels sure that his newly developed script was truely scientific. It can not only be written and understood easily, but it would not pose problems later in getting displayed through the "neon lights", he says with a jest.

DR Oraon convinced the opinion leaders of the tribal society of the utility of his new find at a function held on the eve of Sarhul (May 13) at the Ranchi College auditorium. On this occasion, the first edition of the magazine brought out by him was released by the former Vice-Chancellor and JPP leader, Dr Ram Dayal Munda. Other experts on tribal matters like Dr Prakash Chan-

PHOTOS: DIWAKAR PRASAD

The newly-developed script for Kudukh and Paharia languages

0"k & 1995

1- दिनांक 10.01.1995 को आयुक्त, दुमका का डॉ0 उराँव के नाम शुभकामना संदेश का अंश।

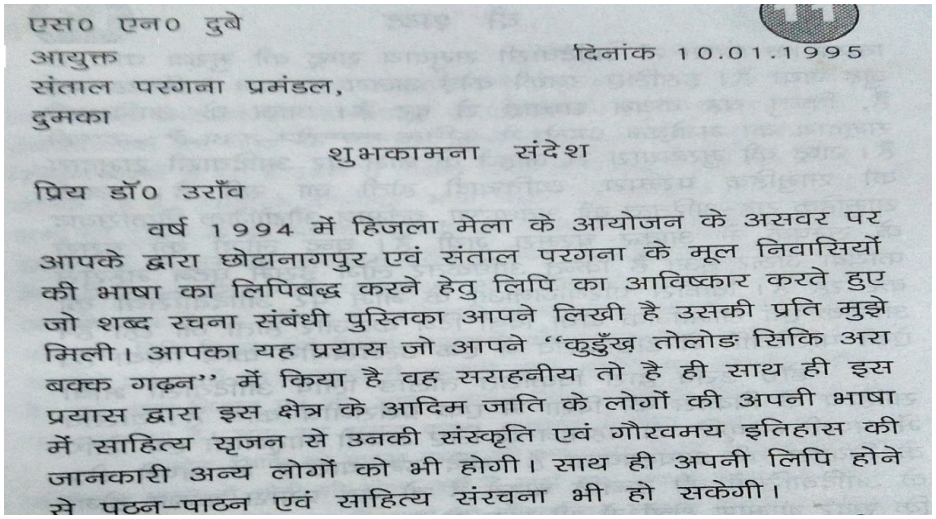

एस० एन० दुबे
आयुक्त
संताल परगना प्रमंडल,
दुमका

दिनांक 10.01.1995

शुभकामना संदेश

प्रिय डॉ० उराँव

वर्ष 1994 में हिजला मेला के आयोजन के असवर पर आपके द्वारा छोटानागपुर एवं संताल परगना के मूल निवासियों की भाषा का लिपिबद्ध करने हेतु लिपि का आविष्कार करते हुए जो शब्द रचना संबंधी पुस्तिका आपने लिखी है उसकी प्रति मुझे मिली। आपका यह प्रयास जो आपने ''कुड़ुँख़ तोलोङ सिकि अरा बक्क गढ़न'' में किया है वह सराहनीय तो है ही साथ ही इस प्रयास द्वारा इस क्षेत्र के आदिम जाति के लोगों की अपनी भाषा में साहित्य सृजन से उनकी संस्कृति एवं गौरवमय इतिहास की जानकारी अन्य लोगों को भी होगी। साथ ही अपनी लिपि होने से पठन–पाठन एवं साहित्य संरचना भी हो सकेगी।

2- मासिक पत्रिका, निष्कलंका, अप्रैल 1995 अंक में Rkkykx flfd एवं cjkrh fyfi में तुलनात्मक अध्ययन एवं *बराती लिपि* को कुँड़ुख़ भाषा के लिपि के रूप में vLohdkj किये जाने की अपील। बराती लिपि को अस्वीकार किये जाने का तथ्य है – यह लिपि, देवनागरी, गुजराती, तमिल एवं ब्राह्मी लिपि (इनमें से तीन आर्य भाषा परिवार की लिपि तथा एक दक्षिणी द्रविड़ परिवार की लिपि है।) को आधार मानकर तैयार किया हुआ था।

कुँड़ुख़ भाषा की "तोलोंग लिपि" का अविष्कार

2- dM[k rkyk³ flfd vjk x<u cDd] पुस्तक के प्रस्तुति को Jh foodkuUn Hkxr (पूर्व बैंक पदाधिकारी), लोंडरा, सिसई–भरनो, गुमला द्वारा इस पुस्तिका में प्रस्तुत वर्णमाला को उचित न मानना तथा गाँव में गाये जाने वाले मौसमी गीतों के माध्यम से विशेष रूप में करम गीत के माध्यम से सामाजिक, सांस्कृतिक एवं पारम्परिक तथ्यों को बरकरार रखने एवं आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाने हेतु, इसे परम्पारिक अवधारणाओं के आधार पर आवश्यक संषोधन किये जाने के लिए अपील किया गया। श्री भगत के सलाह पर वर्णमाला में आवश्यक सुधार हुआ जिसमें वर्णमाला क्रम – क ख ग घ/च छ ज झ/त थ द ध/ट ठ ड ढ/प फ ब भ/म न ख़ ह/य र ल व/स स़ ड़ ढ़ की वर्णमाला क्रम में सुधार करते हुए – क ख ग घ ङ/च छ ज झ ञ/ट ठ ड ढ ण/त थ द ध न/प फ ब भ म/य र ल व ञ/स ह ख़ ड़ ढ़ की तरह वर्णमाला क्रम रखा गया।

3- *राजी पड़हा दीवान, श्री भिखराम भगत* के नेतृत्व में राजी पड़हा के वार्षिक सम्मेलन बमनडिहा, लोहरदगा 1995 ई0 में *तोलोंग सिकि* को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि के रूप में की गई प्रस्तुति को प्रोत्साहित किया गया तथा लिपि के साथ इसका व्याकरण तैयार कर समाज को सौंपने का सुझाव प्राप्त हुआ।

4. दिनांक 15 अक्टूबर 1995 को राजकीय कृत उच्च विद्यालय, रामगढ़, दुमका में *अधिवक्ता डॉ0 बासुदेव बेसरा* की अध्यक्षता में आदिवासी भाषा–संस्कृति की सुरक्षा के उपाय विषय पर एक विचार गोष्ठी सम्पन्न हुई। इस बैठक में दुमका क्षेत्र के कई बुद्धिजीवी उपस्थित थे, जिन्होंने झारखण्ड क्षेत्र की आदिवासी भाषाओं को बचाने एवं विकसित करने के लिए एक सर्वमान्य लिपि की आवश्यकता पर जोर दिया। इस दिशा में *डॉ0 नारायण उराँव* द्वारा प्रस्तुत *तोलोङ सिकि* को इस उदेश्य के लिए उत्तम कहा। *अधिवक्ता श्री बेसरा* ने कहा कि तोलोंग सिकि, नाम बहुत सटीक है। संताली भाषा में तोल (तॉल) का अर्थ बांधना तथा ओंग का अर्थ ध्वनि समझा जाता है। अन्वेषण कर्ता, डॉ0 नारायण उराँव के अनुसार, *तोलोङ* नामकरण, उराँव एवं मुण्डा लोगों के बीच पहना जाने वाला एक परम्परागत मरदाना पोशाक से लिया गया है जिसकी आकृति के जैसा लिपि का अक्षर है। flfd का अर्थ चिह्न है, जो सिका चिनहाँ से सिकि हुआ है।

5- दिनांक 24 दिसम्बर 1995, दिन रविवार को डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' तथा ऑल झारखण्ड स्टूडेन्ट यूनियन (आजसू) के तत्कालीन अध्यक्ष श्री विनोद कुमार भगत एवं उनके सहयोगियों के साथ एक विशेष बैठक हुई। बैठक में आदिवासी समाज की दशा, खाशकर परम्परागत आदिवासी विश्वास–धर्म वाले समाज की दयनीय स्थिति पर परिचर्चा हुई। झारखण्ड अलग राज्य आन्दोलन का उदेश्य सिर्फ वर्तमान बिहार का बँटवारा होकर झारखण्ड राज्य स्थापित होना भर नहीं था, बल्कि संवैधानिक तरीके से नया राज्य गठन कर सदियों से चली आ रही पारम्परिक आदिवासी धरोहर अर्थात आदिवासी भाषा और संस्कृति को संरक्षित एवं संवर्द्धित कर आने वाली पीढ़ी तक पहुँचाना था। बैठक में निर्णय लिया गया कि अपनी सांस्कृतिक विरासत को बचाने के लिए, भाषायी विरासत को बचाना होगा तथा भाषायी विरासत को बचाने के अपनी भाषा का लिखित साहित्य तैयार करना होगा और वर्तमान समय के पठन–पाठन व्यवस्था में इसे जोड़ना होगा। अन्यथा वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में हमारी भाषाएँ इतिहास के पन्नों में गुम हो जाएंगी।

लिखित साहित्य विकसित करने के लिए यह आवश्यक होगा कि अपनी नई लिपि विकसित हो और समय रहते प्रचार–प्रसार के लिए कड़े सामाजिक निर्णय लिये जाएँ। इस विषय में मैंने (विनोद कुमार भगत), मुख्यमंत्री श्री लालू प्रसाद के साथ बातचीत की है। इस पर उन्होंने कहा कि आप लोग जिस दिन और जिस लिपि को अपनी भाषा की लिपि के रूप में लागू करने बोलियेगा, मैं उस लिपि को लागू कर दूँगा। पहले, आप लोग छानबीन कर लीजिए और मुझे बताइये।

परिचर्चा के अन्त में डॉ0 नारायण उराँव को उत्प्रेरित किया गया कि वे सामाजिक सह

सांस्कृतिक आधार वाली लिपि विकसित करने में जोर दें और वे (छात्र आन्दोलनकारी) सामाजिक सह राजनैतिक रूप से इसे आगे बढ़ाने में मदद करेंगे।

o"k & 1996

1. गॉस्सनर कॉलेज, राँची में 18 फरवरी 1996 ई0 को डॉ0 दुखा भगत, डॉ0 एस0 बी0 महतो, डॉ0 ज्योति टोप्पो, डॉ0 ईवा हंसदा आदि की उपस्थिति में नई लिपि के विकास संबंधी कई प्रष्न *डॉ0 नारायण उराँव* से पूछे गए।

2. राजकीय कृत उच्च विद्यालय रामगढ़, दुमका में *अधिवक्ता डॉ0 बासुदेव बेसरा,* दुमका की अध्यक्षता में 15 अक्टूबर 1995 ई0 तथा गॉस्सनर कॉलेज, राँची में 18 फरवरी 1996 ई0 को डॉ0 दुखा भगत, डॉ0 एस0 बी0 महतो, डॉ0 ज्योति टोप्पो, डॉ0 ईवा हंसदा आदि की उपस्थिति में नई लिपि के विकास संबंधी कई प्रश्न *डॉ0 नारायण उराँव* से पूछे गए। उन अनुत्तरित प्रष्नों के उत्तर हेतु डॉ0 उराँव द्वारा डॉ0 बहुरा एक्का, विषप डॉ0 निर्मल मिंज, डॉ0 करमा उराँव, डॉ0 फा0 बेनी एक्का, फा0 प्रताप टोप्पो, फा0 जेम्स टोप्पो, श्री पी0सी0 बेक, प्रो0 इन्द्रजीत उराँव, ई0 अजित मनोहर खलखो, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 षान्ति खलखो आदि कई विषिष्ट षिक्षाविदों के साथ संपर्क स्थापित किया गया और कुँड़ुख़ भाषा की मूल ध्वनियों एवं लिपि चिन्हों के चुनाव में सतर्कता आदि पर विषेष ध्यान किया गया।

3. उपरोक्त षिक्षाविदों से परामर्ष के पष्चात् कई अनुत्तरित प्रष्नों के उत्तर हेतु डॉ0 नारायण उराँव द्वारा *भाषाविद डॉ0 फ्रांसिस एक्का* के साथ बिहार की राजधानी पटना (डॉ0 एक्का, ACTION AID नामक संस्था के सेमिनार में आये हुए थे) के होटल *'सम्राट' में 27 एवं 28 जुलाई 1996 ई0* को मुलाकात किया गया तथा उन प्रश्नों पर विस्तृत चर्चा हुई। पहले दिन डॉ0 एक्का, विज्ञान एवं तकनीकी तथा कम्प्यूटर की बातों में डॉ0 उराँव को उलझा दिये। इसी तरह डॉ0 उराँव की गाँव–समाज की बातों में डॉ0 एक्का उलझ गये। डॉ0 उराँव ने कहा – आदिवासी समाज अपने सभी नेगचार–अनुष्ठान, संस्कार–संस्कृति आदि घड़ी की विपरीत दिशा में सम्मन्न करते हैं। आधुनिक मशीन से इन बातों को नजर अंदाज किया जाता है। इसलिए नई लिपि संस्कृति परक हो। दूसरे दिन, *28 जुलाई को* इन बातों पर नये सिरे से फिर से परिचर्चा हुई और प्रकृति विज्ञान आधारित रहस्यों, सामाजिक सह सांकृतिक अवदानों एवं भाषा वैज्ञानिक सिद्धातों के आधार की पुष्टि करते हुए डॉ0 एक्का ने सुझाव दिया कि – दुनियाँ में कोई भी लिपि 100 प्रतिशत सही नहीं है तथा दुनियाँ की सभी लिपियाँ, समाज एवं संस्कृति पर आधारित हैं। मानव, सर्वप्रथम बोलना सीखा, उसके बाद लिखना एवं पढ़ना। वर्तमान परिवेश में आदिवासी समाज को भी अपनी भाषा–संस्कृति को संरक्षित एवं सुरक्षित रखने हेतु सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली लिपि तैयार करनी होगी। इसलिए नई लिपि में इस तरह के गुण होने चाहिए :–

क) आदिवासी भाषा के विकास हेतु, अपनी लिपि का होना आवश्यक है।
ख) नई लिपि, आदिवासी समाज और संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाला हो।
ग) नई लिपि, एक ध्वनि–एक संकेत के अन्तर्राट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत की तरह हो।
घ) आदिवासी भाषा की सभी ध्वनियों का प्रतिनिधित्व करने वाला हो।
ङ) नई लिपि, अक्षर का नाम और ध्वनिमान में समानता हो।
च) *International Phonetic* के अनुरूप 6 मूल स्वर वर्ण पर आधारित हो।
छ) नई लिपि में, लिखने और पढ़ने में समानता होनी चाहिए।
ज) नई लिपि, लिखने और समझने में आसान हो।
झ) अक्षर सिखलाने का तरीका आसान से कठिनता की ओर होना चाहिए।

ञ) नई लिपि, वर्णात्मक लिपि हो तथा अधिकाधिक चिन्ह घड़ी की विपरीत दिशा वाली हो।

ट) नई लिपि में *phoneme* के लिए ध्वनि चिन्ह होने चाहिए, *allophones* के नहीं।

ठ) नई लिपि, अपने भाषा परिवार के अनुरूप *Sitting Script group* होने चाहिए।

MkO ,Ddk द्वारा दिए गए महत्वपूर्ण सुझावों एवं भाषा वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर MkO mjkao द्वारा XkkfQDl vkQ rkykx flfd पुस्तक की रचना का कार्य आरंभ किया गया।

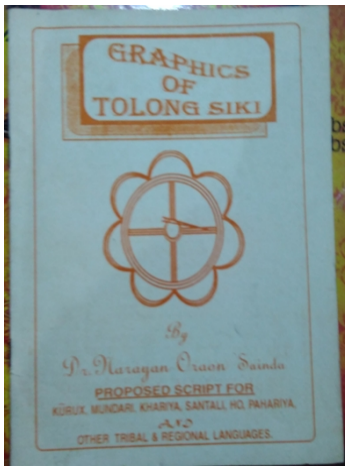

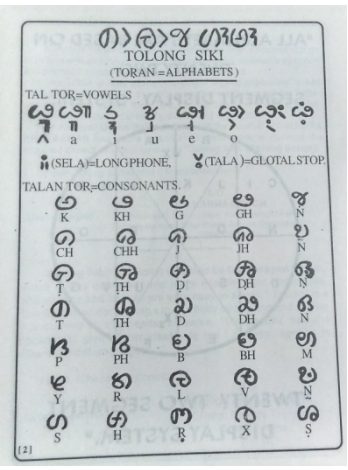

4. नई लिपि के प्रतिष्ठापन में MkO Ýkfl l ,Ddk] MkO jken;ky e.Mk] MkO cgjk ,Ddk] MkO Qk0 cuh ,Ddk आदि ने सुझाव दिया कि *सरल ध्वनि* एवं *लम्बी ध्वनि* के लिए अलग–अलग चिह्न न रखे जाएँ, जिससे इसे समझने तथा समझाने में देवनागरी की तरह मस्तिस्क में खींचाव होने से बचा जा सके। इसके लिए अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान या International Phonetic Alphabet (IAP) के तरीके को अपनाया गया, जहाँ *उपविराम* का प्रयोग *लम्बी ध्वनि* के लिए होता है।

o"k & 1997

1. दिनांक 14 फरवरी से 6 मार्च 1997 तक सम्पन्न जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के रिफ्रेसर कॉर्स में तोलोंग सिकि की आवश्यकता एवं उपयोगिता विषय पर 30 से 35 प्राध्यापकों के बीच तत्कालीन निदेशक डॉ0 सी0 आर0 लाहा एवं कोर्स कॉ–ऑडिनेटर डॉ0 बासंती कुमारी के सुझाव पर डॉ0 नारायण उराँव द्वारा परिचर्चा किया गया।

2. डॉ0 फ्रांसिस एक्का के सुझाव का आंशिक अनुपालन कर, डॉ0 उराँव द्वारा *ग्राफिक्स ऑफ तोलोङ सिकि* पुस्तक की रचना की गई, जिसे सामाजिक सहयोग से छपवाया गया। इस पुस्तक का लोकार्पण दिनांक 05.05.1997 को राँची विश्वविद्यालय, राँची के *जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग* में हिन्दी दैनिक, प्रभात खबर के प्रधान सम्पादक श्री हरिवंश जी के द्वारा सम्पन्न हुआ। समारोह में श्री हरिवंश जी ने कहा – वर्तमान भूमण्डलीकरण के दौर में पूरे विश्व में, भाषाएँ सिमटती जा रही हैं। आकलन है कि विश्व में लगभग 16000 हजार भाषाएँ बोली जातीं थीं, जो इस सदी के अंत तक मात्र 6000 हजार रह जायेंगी। यह, समस्त मानव जाति के लिए घोर संकट का विषय है। आज का यह समारोह भाषा बचाने के कार्य के रूप में इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में दर्ज होगा। इस लिपि की प्रस्तुति पर डॉ0 बी0 पी0 केसरी सहमत नहीं हुए। डॉ0 बी0 पी0 केसरी ने कहा – एखन दुनियाँ, चांद में पोंहईंच गेलक, लकिन ई जगे आदिवासी मन कबिला–कबिला कर बात करेक लाइग हँय। अब आदिवासी मनके देश कर मुख्य धारा से जुड़ेक चाही। उसके बाद, मुख्य वक्ता *डॉ0 रामदयाल मुण्डा* द्वारा पुस्तक में, हिन्दी वर्णमाला के आधार पर प्रस्तुत किये गये तरीके को *खारिज* करते हुए फिर से *सामाजिक सह सांस्कृतिक आधार वाली*

तथा भाषा वैज्ञानिक तथ्यों वाली लिपि की प्रस्तुति का सुझाव दिया गया।

डॉ0 मुण्डा ने कहा – एखन कर बेरा में आदिवासी मन के देश कर मुख्य धारा संगे जुड़के चाही, संगे–संगे आपन सांस्कृतिक विरासत के बचायक ले भी तेयारी करेक चाही। अब, आदिवासी मन के, हिन्दी आउर अंगरेजी विषय कर पढ़ाई संगे पुस्तैनी बिरासत के बचाय ले मातृभाषा में पढ़ेक–लिखेक भी आवश्यक होवी। ई पुस्तक में, राष्ट्रीय एकता रूपी गुलदस्ता में, आपन सांस्कृतिक धरोहर रूपी गुलैची आउर गेंदा फूल के चिन्हेक, चुनेक आउर जोगाएक कर काम, डॉ0 नारायण उराँव शुरू कइरहँय। इकरले उनके आउर उनकर पूरा टीम के बहुत–बहुत बधाई। नया लिपि में ई लेखे गुन होवेक चाही –

क) नया लिपि, एक ध्वनि, एक संकेत कर अन्तर्राट्रीय ध्वनि विज्ञान कर सिद्धांत लेखे होवे।
ख) आपन भाषा कर सउब ध्वनि कर प्रतिनिधित्व होवेक चाही।
ग) अक्षर सिखाएक कर तरीका आसान से कठिन दने जाएक लेखे होवेक चाही।
घ) नया लिपि, आदिवासी समाज और संस्कृति कर प्रतिनिधित्व करेक चाही।
ङ) नया लिपि में, पढ़ेक आउर लिखेक में समानता होवेक चाही।
च) तकनीकी विज्ञान कर अनुरूप चिनहाँ के राखल जाएक चाही।
छ) कम से कम चिनहाँ से अधिक से अधिक ध्वनि कर प्रतिनिधित्व होवे चाही।
ज) भाषा विज्ञान में कहल जाएला कि छउवा मने ''प वर्गीय'' शब्द से बोलेक शुरू करयना, से ले समाज और सभ्यता कर विकास कर इतिहास भी सामने आवेक चाही। इकर मने, कम उर्जा में अधिक काम होवे।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर नई लिपि में सुधार किये जाने पर सबों की सहमति बनीं।

6 मई 1997, मंगलवार 2

‘ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि’ पुस्तक का विमोचन

तोलोंग लिपि इस क्षेत्र की अज्ञानता के अंधकार को दूर करेगी: अहलाद

संवाददाता

रांची, 5 मई : आदिवासी भाषाओं की तोलोंग लिपि में डॉ नारायण उरांव द्वारा लिखी गयी ‘ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि’ पुस्तक का विमोचन पत्रकार हरिवंश ने किया और क्षेत्रीय एवं जनजातीय भाषा के विद्वान अहलाद तिर्की ने दीप जलाकर समारोह म का उद्घाटन किया.

रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में आयोजित सादे समारोह का उद्घाटन करते हुए अहलाद तिर्की ने कहा कि जिस प्रकार यह ज्योति जल रही है, उसी प्रकार तोलोंग लिपि इस क्षेत्र के अज्ञानता के अंधकार को दूर करेगा. कुड़ुख भाषा के प्राध्यापक इंद्रजीत उरांव ने समीक्षा करते हुए कहा कि आज ध्वनि के अनुसार भाषा का निर्माण हुआ है. इसमें लिपि के गुण-दोष को भी देखना होगा. उन्होंने कहा कि सभी भाषाओं को समेट कर चलने की आवश्यकता है और इसके लिए क्षेत्रीय भाषाओं के वैज्ञानिकों को मंथन करना होगा.

सत्य भारती के निदेशक फादर प्रताप टोप्पो ने कहा कि प्रकृति में ईश्वर के सृष्टिनुसार सभी पक्षियों एवं कीड़े-मकोड़ों की अपनी-अपनी ध्वनि रूपी भाषा है. उसी प्रकार मनुष्य की भी सामाजिक- सांस्कृतिक पहचान भाषायी रूप में अलग है. फादर टोप्पो ने बताया कि ऐसी बहुत सी जातियां हैं, जिनको सामने नहीं आने दिया गया. तोलोंग लिपि के विकास के लिए एकजुट होने की आवश्यकता है. उन्होंने कहा कि सुंदरता को पहचानने के लिए हर भाषा को सीखने और उसे आगे बढ़ाने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं को सम्मान देने की आवश्यकता है. आज विश्व में सभी जातियां अपनी-अपनी भाषाओं को आगे बढ़ाने में आगे आ रही हैं.

अवकाशप्राप्त परिवहन आयुक्त मनोरंजन लकड़ा ने बताया कि पत्र लिखने के क्रम में पर्व-त्योहारों में भी हमलोगों ने इसे माध्यम बनाया था और साथ ही इस भाषा में लेख भी लिखे गये. ‘ट्रेस’ संस्था की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा कि तोलोंग एक पोशाक है और जब यह हिलता-डोलता है, तो काफी सुंदर दिखाई पड़ता है.

डॉ कामिल बुल्के शोध संस्थान के निदेशक डॉ मतियस डुंगडुंग ने तोलोंग लिपि में अपनेपन की बात कही और बताया कि इसे सीखने में कोई कठिनाई नहीं होगी. डॉ डुंगडुंग ने खड़िया भाषा की वकालत करते हुए कहा कि खड़िया भाषा की लिपि भी तैयार हो चुकी है, लेकिन वर्तमान में इसे पढ़ने में कठिनाई होगी. उन्होंने डॉ नारायण उरांव के तोलोंग लिपि लिखने और उसे बढ़ाने के प्रयास को सराहा. उन्होंने कहा कि यह भाषा लिपि विकास में और सहायक होगी.

खड़िया भाषा विशेषज्ञ डॉ जुलियस बा कहा कि जब भी क्षेत्रीय भाषाओं को देवनागरी में लिखने का प्रयास किया गया, तब उसमें काफी गलतियां हुई. क्षेत्रीय भाषाओं के लिए देवनागरी नहीं बन पड़ती है. उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय भाषाई व्यक्ति जैसा बोलता है, वह वैसा लिख नहीं पाता है. फिर भी डॉ नारायण उरांव की तोलोंग सिकि इस क्षेत्र में भाषाई एकता को बढ़ावा देगी.

संथाली भाषा के विद्वान प्रो केसी टुडू ने समीक्षा करते हुए कहा कि पंडित रघुनाथ मुर्मू के प्रयास से ओल चिकि लिपि का निर्माण पहले ही हो चुका है. आज लिपि बनाना तो आसान है, क्या इस तोलोंग सिकि का संथाली भाषा से सामंजस्य बन पायेगा. श्री टुडू ने कहा कि अगर यह लिपि लागू हो जाती है, तो ओल चिकि को संथाली कैसे भूल पायेंगे, जबकि ओल चिकि पर काफी पुस्तकें और साहित्य लिखे जा चुके हैं.

प्रो वीपी केसरी ने कहा कि झारखंड क्षेत्र में जितनी भी लिपियां बनायी गयीं, उनकी एक समीक्षा होनी चाहिए. श्री केसरी ने कहा कि जिस दिन हमारा साहित्य खुलकर सामने आयेगा, उस दिन दुनिया में हमारी झारखंडी प्रतिष्ठा को सम्मान मिल पायेगा. उन्होंने कहा कि झारखंडी भाषाओं को देवनागरी भाषा में अनुवाद करने की आवश्यकता है. साथ ही इस क्षेत्र के लोगों को कबिलाई भरी जिंदगी जीना छोड़ कर राष्ट्रीय मुख्यधारा से जुड़ना चाहिए. डॉ केसरी ने कहा कि क्षेत्रीय भाषाओं को देवनागरी लिपि में भी तैयार करने की पहल करनी चाहिए. उन्होंने जोर देते हुए कहा कि जब तक झारखंडी साहित्य समृद्ध नहीं होगा, तब तक झारखंड को बचाना मुश्किल है. इस अवसर पर पत्रकार हरिवंश ने डॉ नारायण उरांव को बधाई देते हुए कहा कि डॉ उरांव ने सृजनात्मक कार्य किया है और वे इतिहास में प्रेरणा के स्रोत हैं. ‘तोलोंग सिकि’ के लेखक डॉ नारायण उरांव ने कहा कि तोलोंग सिकि का शाब्दिक अर्थ तोलोंग लिपि है और इसका विकास आदिवासी समूह की भाषा साहित्य को आगे बढ़ाने के लिए किया गया है. उन्होंने बताया कि अब तक इन भाषाओं के साहित्य देवनागरी अथवा रोमन लिपि में लिखे जाते रहे हैं. इन लिपियों में आदिवासी भाषा में उच्चरित ध्वनियों के ध्वनि चिह्नों का अभाव रहा है. साथ ही इन भाषाओं की प्रकृति हिंदी अथवा अंग्रेजी भाषाओं की प्रकृति से भिन्न है. इसके चलते हिंदी अथवा अंग्रेजी का ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी आदिवासी भाषाओं के साहित्य सृजन में कठिनाइयां हैं. इस अवसर पर डॉ कर्मा उरांव, डॉ बेन्नी पिंगुआ, हॉली क्रास स्कूल, लालपुर की प्राचार्या सिस्टर अनिता, संत जेवियर्स कॉलेज के उप प्राचार्य फादर क्लेमेंट एक्का, डॉ रामदयाल मुंडा, डॉ बासंती कुजूर, डॉ गणेश मुर्मू, प्रो शांति खलखो एवं जनजातीय भाषा विभाग के गणमान्य लोग उपस्थित थे. कार्यक्रम का संचालन प्रो गिरिधर गौड़ ने किया.

3. आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि लिपि का संशोधित स्वरूप विषय पर आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी दिनांक 22 जून 1997 को सम्पन्न हुई और संशोधित स्वरूप तैयार किया गया। बैठक में डॉ0 रामदयाल मुण्डा एवं डॉ0 फ्रांसिस एक्का के सुझाव के अनुसार, अन्तर्राष्ट्रीय ध्वनि विज्ञान के सिद्धांत के अनुरूप आसान से कठिन की ओर के मानक के आधार पर वर्णमाला स्थापित किया गया, जिसे आदिवासी बुद्धिजीवियों की विचार गोष्ठी में सर्व सहमति से स्वीकार कर लिया गया। बैठक सत्यभारती, राँची में हुई।

प्रभात खबर

23 जून 1997. सोमवार

तोलोंग सिकि का संशोधित स्वरूप विषयक विचार गोष्ठी आयोजित

संवाददाता

रांची, 22 जून : पुरुलिया रोड स्थित सत्य भारती सभागार में कल ‘आदिवासी भाषा की तोलोंग सिकि (लिपि) का संशोधित स्वरूप’ विषयक एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. गोष्ठी की अध्यक्षता खड़िया भाषा के विद्वान जूलियस बा ने की. गोष्ठी का उद्देश्य रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग में आयोजित डॉ नारायण उरांव द्वारा लिखित ‘ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि’ नामक पुस्तक के लोकार्पण समारोह में लिये गये निर्णयों का क्रियान्वयन करना था.

ज्ञातव्य है कि पिछली सभा में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया था कि लिपि का संशोधित स्वरूप निम्न बातों के अनुरूप हो : एक ध्वनि- एक संकेत के सिद्धांत पर आधारित हो, वर्णमाला का निर्धारण सरलता से कठिनता की ओर हो, कम से कम चिन्हों से अधिक से अधिक ध्वनियों को लिखा जा सके, अनावश्यक संकेतों को हटा दिया जाये और आदिवासी भाषा संस्कृति को एक स्वतंत्र अस्तित्व प्रदान किया जाये. इसी परिप्रेक्ष्य में लिपि के संशोधित स्वरूप पर इस गोष्ठी में विचार-विमर्श किया गया. गोष्ठी से सर्वसम्मति से तोलोंग सिकि (लिपि) वर्णमाला का नवीनतम संशोधित स्वरूप तैयार किया गया.

गोष्ठी में लिपि के प्रस्तुतकर्ता डॉ नारायण उरांव, रांची विश्वविद्यालय के क्षेत्रीय एवं जनजातीय विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ रामदयाल मुंडा, सेवानिवृत्त अवर स्वास्थ्य निदेशक डॉ विश्वनाथ भगत, होड़ो सेवा समिति के अध्यक्ष पीएनएस सुरीन, सत्य भारती के निदेशक फादर प्रताप टोप्पो, सेवानिवृत्त अपर समाहर्ता हिमांशु कच्छप, राजू उरांव, मीना टोप्पो, मंगरा उरांव, विवेकानंद भगत, प्रो नारायण भगत, प्रो राजेश कुजूर, प्रो रामकिशोर भगत, डॉ बुदु उरांव आदि ने अपने विचार रखे और कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये. बिशप डॉ निर्मल मिंज ने इस स्वरूप को अंतिम स्वरूप की संज्ञा दी. गोष्ठी में निर्णय लिया गया कि अब इस नवीनतम संशोधित लिपि से साहित्य सृजन किये जायें.

4. आदिवासी बुद्धिजीवियों द्वारा नई लिपि की आवष्यकता को बढ़ावा दिया जाने लगा और इसे लक्ष्य तक पहुँचाने के लिए Mk0 Ýkfl l ,Ddk एवं Mk0 jken;ky e|.Mk को अधिकृत करने की अपील के साथ TRACE के बैनर से डॉ0 एक्का को पत्र लिखा गया, जिसके उत्तर में उन्होंने कई महत्वपूर्ण सुझाव दिये।

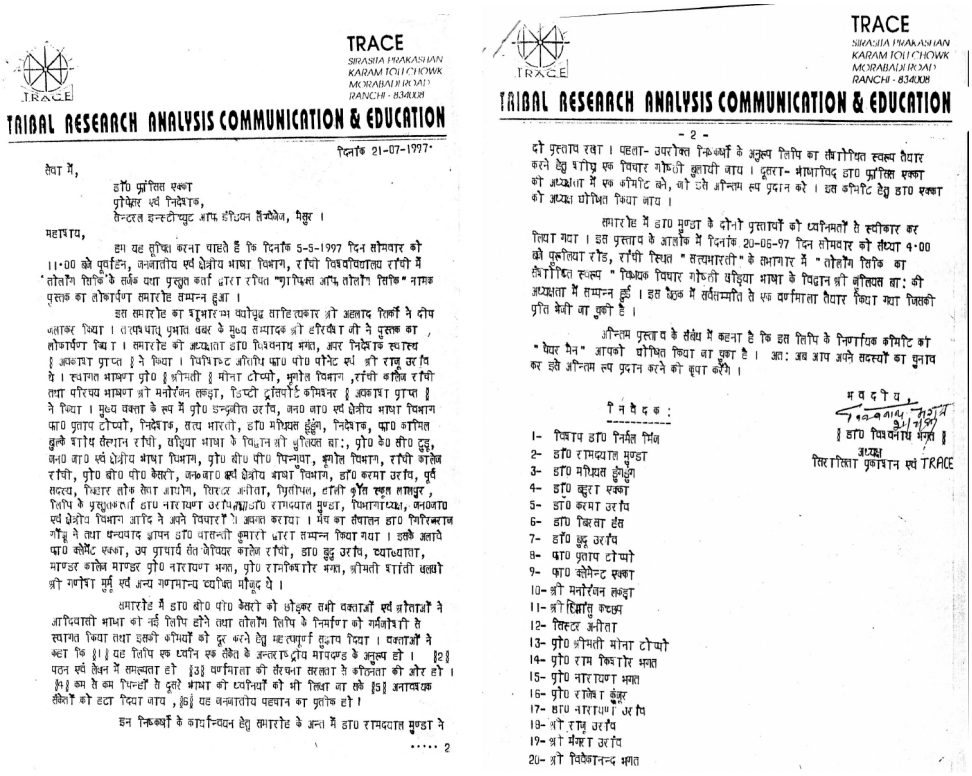

TRACE
SIRASITA PRAKASHAN
KARAM TOLI CHOWK
MORABADI ROAD
RANCHI - 834008

TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION

दिनांक 21-07-1997

सेवा में,

डॉ0 फ्रांसिस एक्का
प्रोफेसर एवं निदेशक,
सेन्टरल इन्स्टीच्युट आफ इंडियन लैंग्वेजेज, मैसुर ।

महाशय,

हम यह सूचित करना चाहते हैं कि दिनांक 5-5-1997 दिन सोमवार को 11·00 बजे पूर्वाह्न, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, राँची विश्वविद्यालय राँची में 'तोलोंग सिकि' के सर्जक यथा प्रस्तुत कर्ता द्वारा रचित "ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि" नामक पुस्तक का लोकार्पण समारोह सम्पन्न हुआ ।

इस समारोह का शुभारम्भ वयोवृद्ध साहित्यकार श्री अहलाद तिर्की ने दीप जलाकर किया । तत्पश्चात् प्रभात खबर के मुख्य सम्पादक श्री हरिवंश जी ने पुस्तक का लोकार्पण किया । समारोह की अध्यक्षता डॉ0 विश्वनाथ भगत, अपर निदेशक स्वास्थ्य (अवकाश प्राप्त) ने किया । विशिष्ट अतिथि फा0 पी0 पोनेट एवं श्री राजू उराँव थे । स्वागत भाषण प्रो0 (श्रीमती) मोना टोप्पो, भूगोल विभाग, राँची कालेज राँची तथा परिचय भाषण श्री मनोरंजन लकड़ा, डिप्टी ट्रांसपोर्ट कमिश्नर (अवकाश प्राप्त) ने किया । मुख्य वक्ता के रूप में प्रो0 इन्द्रजीत उराँव, जन0 जा0 एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग फा0 प्रताप टोप्पो, निदेशक, सत्य भारती, डॉ0 मथियस डुंडुंग, निदेशक, फा0 कामिल बुल्के शोध संस्थान राँची, खड़िया भाषा के विद्वान श्री जुलियस बा:, प्रो0 के0 सी0 टुडू, जन0 जा0 एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, प्रो0 बी0 पी0 पिन्गुआ, भूगोल विभाग, राँची कालेज राँची, प्रो0 बी0 पी0 केसरी, जन0 जा0 एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग, डॉ0 करमा उराँव, पूर्व सदस्य, बिहार लोक सेवा आयोग, सिस्टर अनीता, प्रिंसीपल, होली क्रॉस स्कूल लालपुर, लिपि के प्रस्तुतकर्ता डॉ0 नारायण उराँव तथा डॉ0 रामदयाल मुण्डा, विभागाध्यक्ष, जन0जा0 एवं क्षेत्रीय विभाग आदि ने अपने विचारों से अवगत कराया । मंच का संचालन डॉ0 गिरिधारी राम गौंझू ने तथा धन्यवाद ज्ञापन डॉ0 वासन्ती कुमारी द्वारा सम्पन्न किया गया । इसके अलावे फा0 क्लेमेंट एक्का, उप प्राचार्य संत जेवियर कालेज राँची, डॉ0 बुटु उराँव, व्याख्याता, माण्डर कालेज माण्डर प्रो0 नारायण भगत, प्रो0 रामकिशोर भगत, श्रीमती शांती खलखो श्री गणेश मुर्मू एवं अन्य गणमान्य व्यक्ति मौजूद थे ।

समारोह में डॉ0 बी0 पी0 केसरी को छोड़कर सभी वक्ताओं एवं श्रोताओं ने आदिवासी भाषा को नई लिपि होने तथा तोलोंग लिपि के निर्माण को गर्मजोशी से स्वागत किया तथा इसकी कमियों को दूर करने हेतु महत्वपूर्ण सुझाव दिया । वक्ताओं ने कहा कि (1) यह लिपि एक ध्वनि एक संकेत के अन्तर्राष्ट्रीय मापदण्ड के अनुरूप हो । (2) पठन एवं लेखन में समरूपता हो (3) वर्णमाला की संरचना सरलता से कठिनता की ओर हो । (4) कम से कम चिन्हों से दूसरे भाषा की ध्वनियों को भी लिखा जा सके (5) अनावश्यक संकेतों को हटा दिया जाय, (6) यह जनजातीय पहचान का प्रतीक हो ।

इन निष्कर्षों के कार्यान्वयन हेतु समारोह के अन्त में डॉ0 रामदयाल मुण्डा ने

..... 2

TRACE
SIRASITA PRAKASHAN
KARAM TOLI CHOWK
MORABADI ROAD
RANCHI - 834008

TRIBAL RESEARCH ANALYSIS COMMUNICATION & EDUCATION

- 2 -

दो प्रस्ताव रखा । पहला- उपरोक्त निष्कर्षों के अनुरूप लिपि का संशोधित स्वरूप तैयार करने हेतु शीघ्र एक विचार गोष्ठी बुलायी जाय । दूसरा- भाषाविद् डॉ0 फ्रांसिस एक्का की अध्यक्षता में एक कमिटि बने, जो इसे अन्तिम रूप प्रदान करे । इस कमिटि हेतु डॉ0 एक्का को अध्यक्ष घोषित किया जाय ।

समारोह में डॉ0 मुण्डा के दोनो प्रस्तावों को ध्वनिमतों से स्वीकार कर लिया गया । इस प्रस्ताव के आलोक में दिनांक 20-06-97 दिन सोमवार को संध्या 4·00 बजे पुरूलिया रोड, राँची स्थित "सत्यभारती" के सभागार में "तोलोंग सिकि का संशोधित स्वरूप" विषयक विचार गोष्ठी खड़िया भाषा के विद्वान श्री जुलियस बा: की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । इस बैठक में सर्वसम्मति से एक वर्णमाला तैयार किया गया जिसकी प्रति भेजी जा चुकी है ।

अन्तिम प्रस्ताव के संबंध में कहना है कि इस लिपि के निर्णायक कमिटि का "चेयर मैन" आपको घोषित किया जा चुका है । अत: अब आप अपने सदस्यों का चुनाव कर इसे अन्तिम रूप प्रदान करने की कृपा करेंगे ।

भवदीय,
विश्वनाथ भगत 21/7/97
(डॉ0 विश्वनाथ भगत)
अध्यक्ष
सिरासिता प्रकाशन एवं TRACE

निवेदक :

1- बिशप डॉ0 निर्मल मिंज
2- डॉ0 रामदयाल मुण्डा
3- डॉ0 मथियस डुंगडुंग
4- डॉ0 ब्रुरा एक्का
5- डॉ0 करमा उराँव
6- डॉ0 बिरसा हंस
7- डॉ0 बुदू उराँव
8- फा0 प्रताप टोप्पो
9- फा0 क्लेमेन्ट एक्का
10- श्री मनोरंजन लकड़ा
11- श्री हिमांसु कच्छप
12- सिस्टर अनीता
13- प्रो0 श्रीमती मोना टोप्पो
14- प्रो0 राम किशोर भगत
15- प्रो0 नारायण भगत
16- प्रो0 राजेश कुजूर
17- डॉ0 नारायण उराँव
18- श्री राजू उराँव
19- श्री मंगरा उराँव
20- श्री विवेकानन्द भगत

Central Institute of Indian Languages
Manasagangotri, Mysore 570 006, India
Tel:(0821) 515820(office) : 514120 (home);Fax:515032 :Email:ciil@giasbg01.vsnl.net.in

Francis Ekka November 27, 1997

Dear Dr.Bhagat,

I have received your letter dated 27-7-1997 on the subject of the formation of a *nirnaayak* committee (but Dr.Oraon's printed handbill dated 13-09-1997 sent to me subsequently explicitly states his modified script has been sent to Central Institute of Indian Languages for approval-*maanyata*) to finalize and grant of approval /recognition to Tolong script. I have been frequently out of Mysore during last several months on consultancy assignements to other agencies/States, and I sincerely apologize for this inordinate delay in replying to you on this important subject.

While I appreciate Dr.Oraon for his efforts in creating Tolong script, and the interest it has generated among the Jharkhandi leaders and academicians, I regret to inform you that this Institute is not empowered to grant official recognition for any scripts on its own behalf, or on behalf of the Government of India. I think it is the Department of Official Languages in the Home Ministry, Government of India, which deals with such matters; and that too in respect to the languages listed in the VIII Schedule of the Constitution of India. There is a very lengthy procedure; there is first, a literary criterion for recognition of a language and its script by the Sahitya Akademi; and next, there is a political criterion for its inclusion in the VIII Schedule. Both these criteria are more political than academic, or even scientific. Besides, this invention is intellectual property of Dr.Narayan Oraon, and I am not sure at this moment whether it would be proper to discuss this as a public issue. Under this circumstances I am unable to render useful advice on the subject.

With regards,

Yours sincerely,
(Francis Ekka)

To
Dr.Vishwanath Bhagat
Sirasita Prakashan
Morhabadi Road, Karamtoli Chowk
Ranchi 834 008

Copies to:Dr.Narayan Oraon; Dr.Ram Dayal Munda; Dr.Nirmal Minj; Fr.Mathias Dundung, S.J; Fr.Pratap Toppo.S.J; Dr.Narayan Bhagat; Sr.Anita; Dr.(Mrs.)Meena Toppo; Dr.Budu Oraon; (I do not possess mailing addresses of the remaining 10 dignitories listed in your letter under reference).

5. दिनांक 18 एवं 19 अक्टूबर 1997 को (दो दिवसीय) अन्तर्राजकीय परम्परागत कुँड़ुख़ सामाजिक एवं सांस्कृतिक सम्मेलन, जमषेदपुर में Mk0 djek mjk0 की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस

सम्मेलन में MkW0 ukjk;.k mjko ^lUnk* द्वारा प्रस्तुत लिपि, rkyksx flfd पर विस्तृत चर्चा हुई तथा Jh ckIlno jke [ky[kks द्वारा प्रस्तुत लिपि, dMq[k cUuk पहली बार इस सामाजिक सम्मेलन में सम्मिलित हुई।

o"kZ & 1998

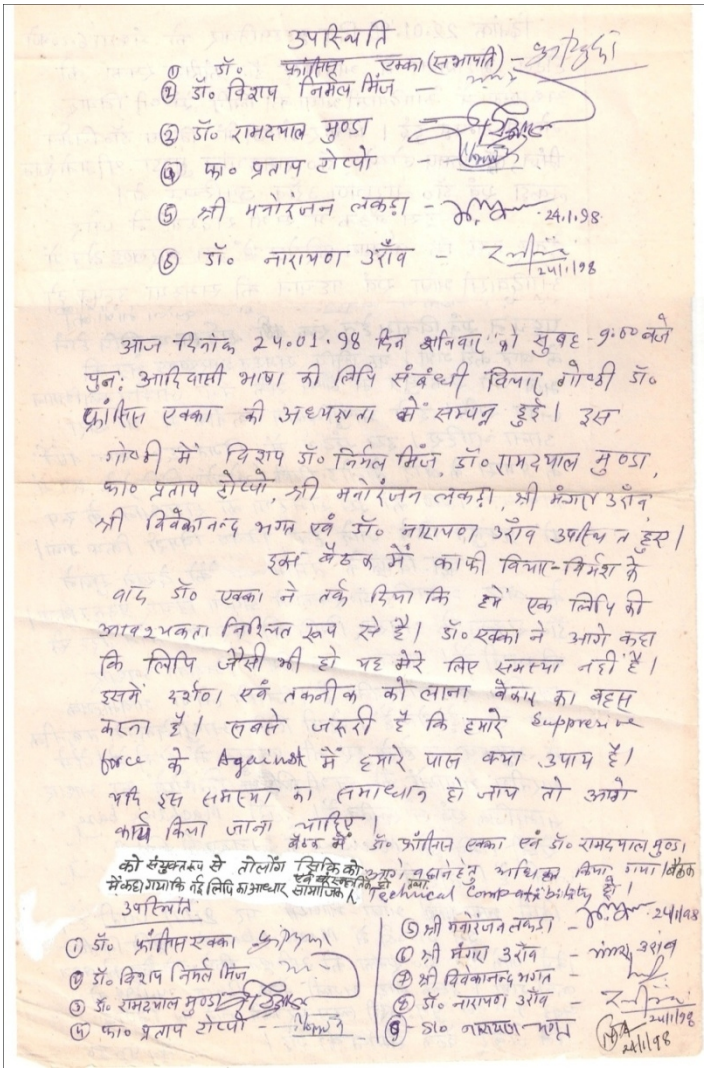

1. डॉ0 फ्रांसिस एक्का, पी.एच.डी. (यू.एस.ए.), डॉ0 रामदयाल मुण्डा, पी.एच.डी. (यू.एस.ए.), डॉ0 निर्मल मिंज, पी.एच.डी. (यू.एस.ए.), फा0 प्रताप टोप्पो (यू.एस.ए. से पत्रकारिता) के अतिरिक्त डॉ0 नारायण उराँव, श्री मनोरंजन लकड़ा, डॉ0 नारायण भगत, श्री विवेकानन्द भगत, श्री मंगरा उराँव आदि कई षिक्षाविदों एवं समाज सेवियों की उपस्थिति में होटल महाराजा, राँची में दिनांक 22 एवं 24 जनवरी 1998 को *तोलोंग सिकि* के विकास के संबंध में स्पष्ट दिषा निर्देष तय, जिसमें कहा गया कि – ubl fyfi] lkekftd ,oa lkaLd`frd vk/kkj okyh gks rFkk rduhfd ekun.Mks ij [kjk mrjsA vf/kdkf/kd v{kj] ?kMh dh foijhr fn'kk okyh gksA

उपस्थिति
① डॉ० फ्रांसिस एक्का (सभापति) –
② डॉ० विशप निर्मल मिंज –
③ डॉ० रामदयाल मुण्डा
④ फा० प्रताप टोप्पो –
⑤ श्री मनोरंजन लकड़ा – 24.1.98
⑥ डॉ० नारायण उराँव – 24.1.98

आज दिनांक 24.01.98 दिन शनिवार को सुबह 9:00 बजे पुनः आदिवासी भाषा की लिपि संबंधी विचार गोष्ठी डॉ० फ्रांसिस एक्का की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस गोष्ठी में विशप डॉ० निर्मल मिंज, डॉ० रामदयाल मुण्डा, फा० प्रताप टोप्पो, श्री मनोरंजन लकड़ा, श्री मंगरा उराँव, श्री विवेकानन्द भगत एवं डॉ० नारायण उराँव उपस्थित हुए। इस बैठक में काफी विचार-विमर्श के बाद डॉ० एक्का ने तर्क दिया कि हमें एक लिपि की आवश्यकता निश्चित रूप से है। डॉ० एक्का ने आगे कहा कि लिपि जैसी भी हो यह मेरे लिए समस्या नहीं है। इसमें दर्शन एवं तकनीक को लाना बेकार का बहस करना है। सबसे जरूरी है कि हमारे Suppressive force के Against में हमारे पास क्या उपाय है। यदि इस समस्या का समाधान हो जाय तो आगे कार्य किया जाना चाहिए। बैठक में डॉ० फ्रांसिस एक्का एवं डॉ० रामदयाल मुण्डा को संयुक्तरूप से तोलोंग सिकि को आगे बढ़ाने हेतु अधिकृत किया गया। बैठक में कहा गया कि नई लिपि का आधार सामाजिक एवं सांस्कृतिक हो तथा Technical Compatibility हो।

उपस्थिति
① डॉ० फ्रांसिस एक्का
② डॉ० विशप निर्मल मिंज
③ डॉ० रामदयाल मुण्डा
④ फा० प्रताप टोप्पो –
⑤ श्री मनोरंजन लकड़ा – 24/1/98
⑥ श्री मंगरा उराँव – मंगरा उराँव
⑦ श्री विवेकानन्द भगत –
⑧ डॉ० नारायण उराँव – 24/1/98
⑨ डॉ० नारायण भगत 24/1/98

2. दिनांक 12 मई 1998 को डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा', द्वारा प्रस्तुत प्राथमिक पुस्तक *कइलगा* का द्वितीय संस्करण को श्री अब्राहम मिंज, श्री अगस्तुस तिग्गा, डॉ0 तारक बखला एवं ई0 एतवा उराँव की अगुवाई में गया (बिहार) में पदस्थापित नौकरी पेषा वालों के संयुक्त प्रयास छपाई करवाकर, प्रकाषित किया गया तथा समाज में वितरित किया गया।

o"kZ & 1999

1. अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद द्वारा संचालित विद्यालयों में से डॉ0 लक्ष्मण उराँव के नेतृत्व में आदिवासी बाल विकास विद्यालय, रातू, राँची में तथा श्री मंगरा मुण्डा के नेतृत्व में कार्तिक उराँव बाल विकास विद्यालय, सिसई गुमला में एवं डॉ0 एतवा उराँव के नेतृत्व में कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूर एड़पा, लूरडिप्पा, भगीटोली, डुमरी, गुमला में *तोलोंग सिकि* के माध्यम से कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई जनवरी 1999 ई0 से आरंभ हुई। अखिल भारतीय आदिवासी विकास परिषद, रातू, राँची द्वारा संचालित, कार्तिक उराँव बाल विकास विद्यालय, रातू, राँची में कुँड़ुख़ भाषा *तोलोंग सिकि* की की प्रथम शिक्षिका के रूप में श्रीमती ज्योति उराँव को अवसर मिला और वे अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह निभा रही हैं।

2. 15 ebl 1999 dk Mk0 jken;ky e|.Mk के साथ, उनके आवास पर डॉ0 नारायण उराँव एवं श्री विवेकानन्द भगत के साथ एक भेंटवार्ता हुई। इस भेंटवार्ता में डॉ0 उराँव ने झारखण्ड की भाषा–साहित्य के विकास के लिए मार्ग दर्शन के संबंध में डॉ0 मुण्डा जी से प्रश्न किया – जब उराँव, मुण्डा, खड़िया, हो, संथाल मनकर बीच, बेटी अउर रोटी कर संबंध बइन जा हे, तब भाषा कर लाइन में एल0ओ0सी0 का ले बनाल जा थे। राउरे कर आशीर्वाद से जब तोलोंग सिकि एतना आगे बईढ़ गेलक, तब सउब आदिवासी मन ले (उराँव, मुण्डा, खड़िया, हो, संथाल भाषा मन ले हुँ) तोलोंग सिकि के अपन भाषा कर लिपि माइन लेवेक चाही ? इस प्रश्न पर डॉ0 मुण्डा का सुझाव था – झारखण्ड क्षेत्र (पूर्ववर्ती बिहार) में भाषा अउर संस्कृति कर संरक्षण अउर संवर्द्धन ले उ मनकर भाषा समूह केर अनुरूप काम होवेक चाही। भाषा समूह केर अनुसार – 1. आष्ट्रिक भाषा परिवार (मुण्डा, खड़िया, हो, संथाल आदि), 2. द्रविड़ भाषा परिवार (उराँव/कुँड़ुख़, मालतो) अउर 3. आर्य भाषा परिवार, तीनों समूह केर विकास ले तीन लिपि कर परिकल्पना होले बढ़िया होवी। द्रविड़ भाषा परिवार वाला मन तोलोंग सिकि के अपनाथँय, इकर ले उ मन बधाई केर पात्र हैं अउर उ मन इकर साथ आगे बढ़ँय। संगे–संगे दोसर भाषा समूह ले भी आपन लिपि विकसित करेक चाही।

डॉ0 उराँव का, डॉ0 मुण्डा जी के समक्ष दूसरा प्रश्न था – राउरे, मिनिसोटा यूनिवर्सिटी, अमेरिका में प्रोफेसर कर नौकरी छोईड़ के राँची का ले आली ? इस प्रश्न पर, उन्होंने कहा – राउरे मन ई बात के नी बुझब ! जे खन हमर जगन प्रस्ताव आलक, जनजातीय भाषा विभाग कर अध्यक्ष/निदेशक कर रूप में विभाग चलायक ले, से खन हमर दिमाग में एके गो बात आलक कि एखने आपन देश, माटी अउर आदिवासी समाज कर श्रृण चुकाएक कर मोका हय। ई बेरा, झारखण्ड आन्दोलन के जगाएक कर बेरा हय। अउर इकर ले नवजवान मनकर ग्रेजुएट फौज तेयार करेक होवी। जोन खन हमर आदमी ग्रेजुएट होय जाबँय से खन उ मन आपन बात बोलेक सीखबँय, तब अलग राईज कर आन्दोलन मजबूत होवी अउर नया राईज मिलले, उ मन राईज चलाय ले अगुवा बनबँय। एसन सोईच के हम अमेरिका कर नौकरी के छोईड़ के चईल आली। हियाँ आवल कर बाद झारखण्ड क्षेत्र कर दौरा कईर के 5 गो आदिवासी भाषा और 4 गो क्षेत्रीय भाषा के मिलाय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग कर गठन करल गेलक। अइसन में, झारखण्ड क्षेत्र कर लगभग सबकर भाषायी प्रतिनिधित्व होवत रहे अउर हमरे एहे लाइन में काम करेक लागली। डॉ0 उराँव के कहा – राउर ई त्याग के हमरे बुईझ गेली। देश अउर आदिवासी समाज राउरे के हमेशा इयाइद करी।

डॉ0 उराँव का, डॉ0 मुण्डा जी के समक्ष तीसरा प्रश्न था – एखन ले हमरे आदिवासी मन कर बारे में गैरआदिवासी मन बगरा किताब लिखहँय, आउर कई जगे हमरे मन, उ मनकर लिखल से सहमत नईखी। उ मनकर बड़का नाम जगन हमरे तो बितना बईन जईला, का लेखे करेक होवी। इस सवाल पर डॉ0 मुण्डा ने बहुत ही सहज भाव से कहा – ई जगन डरेक कर बात

नखे। राउरे, आदिवासी कर जिन्दगी जियथी, से ले – जे लेखे राउरे जियथी, से लेखे लिखु, काम बनते जई।

3- Mk0 jken;ky e.Mk] पूर्व कुलपति, राँची विश्वविद्यालय, राँची एवं डॉ0 (श्रीमती) इन्दु धान, पूर्व कुलपति, मगध विश्वविद्यालय, बोधगया एवं सिद्हु–कान्हु मुरमु वि0, दुमका द्वारा संवादाता सम्मेलन कर fnukd 15 eb 1999 b0 dk rkykx flfd ¼fyfi½ dk tuekul d Á;kx d fy, tkjh fd;k x;kA संवादाता सम्मेलन में डॉ0 रामदयाल मुण्डा, डॉ0 (श्रीमती) इन्दु धान, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 नारायण उराँव, प्रो0 मीना टोप्पो, श्री मनोरंजन लकड़ा, श्री हिमांशु कच्छप, श्री मनोहर लकड़ा, श्री महेश भगत एवं श्री साधु उराँव उपस्थित थे।

(5) रांची एक्सप्रेस, रविवार, 16 मई 1999

तोलोंग सिकि (लिपि) जनमानस के प्रयोग के लिए जारी

रांची, 15 मई (रां.ए.सं.) : झारखण्ड क्षेत्र की भाषा के लिए तेलोंग सिकि नामक नयी लिपि का विकास कर लिया गया है। तेलोंग सिकि प्रचारिणी सभा, सिरासिता प्रकाशन एवं ट्राइबल रिसर्च एनालिसिस कम्युनिकेशन एण्ड एडुकेशन (ट्रेस) की ओर से संयुक्त रूप से इस लिपि (तेलोंग सिकी) को जन-मानस के बीच व्यवहार के लिए आज जारी किया गया।

ट्रेस एवं तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित आज एक संवाददाता इस लिपि को अंगीकार कर लिया है। इसी प्रकार दूसरे भाषा-भाषी भी अपनी आवश्यकता एवं इच्छानुसार इसे व्यवहार में ला सकते हैं।

संवाददाता सम्मेलन में बताया गया कि राज्य सरकार से लिपि को मान्यता दिलाने का प्रयास किया जाएगा। परीक्षा की उत्तर पुस्तिकाओं की जांच की व्यवस्था जनजातीय भाषा विभाग करेगा। इस लिपि की खोज के इतिहास के संबंध में चर्चा करते हुए बताया गया कि भाषा एवं साहित्य के बचाव तथा विकास की दिशा में यह एक अनुठा कार्य है।

पेशे से चिकित्सक डा. नारायण उरांव 'सौन्दा' एवं उनके साथियों द्वारा गत 7-8 वर्षों के अनवरत सम्मेलन में यह जानकारी दी गयी। इस लिपि के विकास के लिए उपर्युक्त दोनों संगठनों की ओर से छह सेमिनार एवं कई सम्मेलनों का आयोजन किया गया था। इन सम्मेलनों में कई भाषाविद्, शिक्षाविद्, समाजसेवी एवं जनप्रतिनिधियों ने भाग लेकर इसकी आवश्यकता एवं औचित्य पर विचार विमर्श किया। वक्ताओं ने कहा कि यहां के जनमानस द्वारा वर्षों से जिस चीज की कमी महसूस की जा रही थी, उस कमी को तेलोंग सिकि ने पूरा किया। 19 सितम्बर 1998 को बिहार जनजातीय शोध एवं समाज कल्याण संस्थान, मोरहाबादी रांची द्वारा आयोजित एक सेमिनार में कुडुख भाषा-भाषियों ने प्रयास के बाद 'तोलोंग सिकि' नामक लिपि का शोध-संकलन किया गया। अब तक इस क्षेत्र के सिर्फ कुडुख (उरांव) भाषी ही लोग इसे अपनी भाषा की लिपि कह पाए हैं।

डा. उरांव का कहना है कि यह लिपि झारखण्ड वनांचल की आदिवासी भाषाओं की लिपि बन सकती है। यह लिपि उनके समाज के लिए नया नहीं है। उन्होंने समाज में प्रचलित अनुष्ठान चिन्हों एवं दिनचर्या के खेल-खेल में खींचे जाने वाले चिन्हों को संकलित कर उन्हें भाषा विज्ञान एवं यंत्र विज्ञान के सिद्धान्तों के अनुरूप संवारा है। लिपि के नामकरण के संबंध में डा. नारायण का कहना है कि तेलांग एक प्रकार का आदिवासी पोशाक है। यह 24 हाथ लम्बा तथा 1-1/2 हाथ चौड़ा कपड़ा होता है। इसे कमर में लपेट कर पहना जाता है। इसकी खासियत यह है कि यदि इसके पिछले भाग को खींचा जाय तो लगभग 20 हाथ लंबा खींचा जाता है। कमर में लपेटने से बने इसके विभिन्न स्वरूपों को ध्वनि चिन्हों के रूप में प्रयोग किया गया है। दूसरी बात यह है कि तॉल+आंग का अर्थ संताली भाषा में बंधी हुई ध्वनि तथा सिकि का अर्थ चिह्न होता है अर्थात् 'तोलोंग सिकि' का अर्थ बंधी हुई ध्वनि चिन्ह हुआ।

इस लिपि के चिन्हों को आधुनिकतम तकनीक यानि कम्प्यूर सिद्धान्त के अनुरूप स्थापित किया गया है। डा. उरांव ने जानकारी दी कि कम्प्यूटर पद्धति के डिस्प्ले को उन्होंने आदिवासियों द्वारा किया जानेवाला डंडा कट्टना पूजा अनुष्ठान में खींचे जाने वाले वेदि चिन्ह के आधार पर तैयार किया है। इस वेदि चिह्न में जितनी रेखाएं हैं, उतने ही व्यंजन वर्ण रखें गए है।

इस लिपि को निर्णायक स्वरूप प्रदान करने से पूर्व लगभग छह सेमिनारों एवं कई सम्मेलनों में आदिवासी विद्वानों, भाषाविदों, साहित्यकारों, समाज सेवियों, जन प्रतिनिधियों एवं शिक्षाविदों से सलाह मशविरा कर, आवश्यक संशोधन किया गया है। इस कार्य में रांची विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डा. रामदयाल मुण्डा, बिहार लोक सेवा आयोग के पूर्व सदस्य डा. करमा उरांव, बिशप डा. निर्मल मिंज, बिहार स्वास्थ्य सेवा के पूर्व अपर निदेशक डा. विश्वनाथ भगत, कार्तिक उरांव कालेज गुमला के प्राचार्य डा. बहुरा एक्का, करमचंद भगत कालेज बेड़ो, के पूर्व प्राचार्य डा. ज्योतिलाल उरांव, सत्यभारती रांची के निदेशक प्रताप टोप्पो, सेवानिवृत्त अपर समाहर्ता हिमांशु कच्छप तथा मनोरंजन लकड़ा, अधिवक्ता बासुदेव बेसरा, रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग के प्रो. इन्द्रजीत उरांव, अधीक्षण अभियन्ता अजित मनोहर खलखो, महिला पोलिटेकनिक के वेद प्रकाश श्रीवास्तव, गोस्सनर कालेज की व्याख्याता श्रीमती ज्योति टोप्पो, पूर्व छात्र नेता प्रभाकर तिर्की एवं विनोद कुमार भगत ने अपना महत्वूर्ण योगदान दिया है।

संवाददाता सम्मेलन में डा. राम दयाल मुण्डा, डा. नारायण भगत, डा. नारायण उरांव, महेश भगत, साधु उरांव, मनोहर लकड़ा, मनोरंजन लकड़ा, हिमांशु कच्छप, प्रो. मीना टोप्पो एवं डा. इन्दु धान उपस्थित थे।

4. 01 जुलाई 1999 को प्राथमिक पुस्तिका dbyxk का संषोधित द्वितीय संस्करण सत्यभारती, राँची द्वारा प्रकाषित।

5. XkkfQDl vkQ rkykx flfd का संषोधित द्वितीय संस्करण Jh ÁHkkdj frdh द्वारा *'पतरा'* संस्था से अगस्त 1999 को प्रकाषित किया गया।

6. flLVj vfurk एवं Jherh eflfyuk [kl के नेतृत्व में हॉली क्रॉस गर्ल्स हाई स्कूल, पीस रोड, लालपुर, राँची में प्रथम कक्षा से तीसरी कक्षा तक कुँड़ुख़ भाषा की पढ़ाई आरंभ हुई।

o"k & 2000

1. 26 अगस्त 2000 ई0 को *कुँड़ुख़ भाषा मानकीकरण विषयक कार्यषाला, जनजातीय एवं क्षेत्रीय भाषा विभाग,* राँची वि0 राँची के प्रांगन में संपन्न हुई, जहां *भाषा एवं लिपि* के मुद्दे पर षिक्षाविदों के साथ विचार–विमर्ष एवं दिषा निर्देष निधारित किया गया।

कुमार राय व गंदूरा पत्रकारिता के लिए किया गया. अखबा

27 अगस्त, 2000, रविवार 3

। करकट्टा, आदिवा... मोद राय को सम्मानित किया.

कुड़ुख भाषा के मानकीकरण पर भाषाविदों ने कहा

कुड़ुख़ भाषा में एक ध्वनि के लिए अधिक चिह्नों का प्रयोग असंगत

गोष्ठी का दीप जला कर उद्घाटन करते विजय उरांव व अन्य.

रांची, 26 अगस्त : कुड़ुख भाषा की वर्तनी और अंकों के देवनागरी लिपि में मानकीकरण को लेकर आज रांची विश्वविद्यालय के जनजातीय व क्षेत्रीय भाषा-साहित्य विभाग में गोष्ठी का आयोजन किया गया. गोष्ठी का उद्घाटन कुड़ुख भाषा का शब्दकोश तैयार कर रहे व सेवानिवृत्त एडीएम विजय उरांव ने दीप जलाकर किया. इस अवसर पर उरांव जनजाति की धार्मिक रीति के अनुसार उपस्थित लोगों ने प्रार्थना की. गोष्ठी में कुड़ुख भाषा के विकास के लिए इकट्ठे भाषाविदों ने ध्वनि पर आधारित चिह्नों के प्रयोग आदि पर विस्तृत विचार-विमर्श किया व कुड़ुख के पठन-पाठन में आनेवाली अड़चनों को व्याकरणीय सुधार कर दूर करने की बात-कही. इस भाषा के शोधकर्ता डॉ नारायण उरांव ने कहा कि कुड़ुख भाषा की वर्तनी संस्कृत की ही तरह ध्वनि प्रयोग पर आधारित है, जिसे देवनागरी लिपि माध्यम के प्रयोग से सहज और ग्राह्य बनाया जा सकता है. उन्होंने कहा कि अभी कई विद्वानों द्वारा एक ही ध्वनि के लिए अधिक चिह्नों का प्रयोग किया जा रहा है, जिससे भाषा की जटिलता बढ़ गयी है. डुमरी में कुड़ुख भाषा माध्यम से स्कूल चला रहे शिवशंकर उरांव ने बताया कि स्कूल में पांच सौ विद्यार्थी कुड़ुख भाषा में अध्ययन कर रहे हैं. मालूम हो कि कुड़ुख भाषा झारखंड के अलावा छत्तीसगढ़ व ओड़िशा के इलाकों में भी बोली जाती है, जहां कुड़ुख भाषा की स्थापित व्याकरण के अभाव में क्षेत्र के साथ ही भाषा के प्रयोग में बदलाव आ जाते हैं. गोष्ठी में मुख्य रूप से फादर प्रताप टोप्पो, बिशप मिंज, मंगरा कुजूर ने भी विचार व्यक्त किये. इससे पूर्व जनजातीय भाषा पर शोध कर रहीं शांति खलखो ने लोगों का स्वागत किया. गोष्ठी में पीसी बेक, प्रभाकर तिर्की, बासंती कुजूर, प्रो महामणि कुमारी, बिनकस एक्का, चौठी उरांव, शरण उरांव, अगस्तुस तिग्गा, बंधन उरांव, फादर अगापित तिर्की, मंजुला उरांव, प्रो पूर्णिमा उरांव सहित कई लोग उपस्थित थे.

2. दिनांक 15 नवम्बर 2000 को प्राथमिक पुस्तिका dbyxk का संषोधित तृतीय संस्करण का बिरसा मुण्डा जयन्ती के अवसर पर *सत्यभारती, राँची* द्वारा प्रकाषित।

3. दिनांक 15 नवम्बर 2000 को मध्य रात्रि, झारखण्ड राज्य का उदय।

o"k & 2001

1. श्री मनोरंजन लकड़ा, सेवानिवृत उपसमाहर्ता द्वारा तोलोंग सिकि में हस्तलिखित पुस्तक n ekbly LVku] जनवरी 2001 में प्रकाषित किया गया।

2. XkkfQDl vkQ rkyksx flfd का संषोधित तृतीय संस्करण को फा0 जेम्स टोप्पो, *ग्रामगुरू* द्वारा प्रकाषित किया गया।

तोलोङ सिकि एवं भाषा विज्ञान से सम्बन्धित विषयों पर विचार-विमर्श करते डॉ0 नारायण उराँव और फादर जेम्स टोप्पो, एस. जे.।

3. सिस्टर नोएल्ला, सेवानिवृत प्राधानाध्यापिका की अगुवाई में उर्सलाईन कॉन्वेन्ट के षिक्षिकाओं के साथ उर्सलाईन कॉन्वेन्ट कोनबीर नवाटोली, बसिया, गुमला में *कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि* विषयक दो दिवसीय कार्यषाला में डॉ0 नारायण उराँव द्वारा प्रस्तुति।

o"k & 2002

1. कम्प्यूटर सॉफ्टवेयर विकसित करने हेतु रूपरेखा तैयार करने में जुटे बायें से दायें फा0 प्रताप टोप्पो, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' एवं वरीय पत्रकार श्री किसलय जी। *श्री किसलय जी* द्वारा तोलोंग सिकि का कम्प्यूटर वर्जन केलीतोलोंग फॉण्ट तैयार कर आदिवासी समाज के लिये निःषुल्क उपलब्ध कराने की कटिवद्धता।

2- माननीय कार्डिनल तेलेस्फॉर पी0 टोप्पो, डॉ0 करमा उराँव, श्री किसलय जी, श्री विनोद कुमार भगत, श्री प्रभाकर तिर्की आदि द्वारा दिनांक 20 नवम्बर 2002 को *तोलोंग सिकि* का कम्प्यूटर वर्जन Kellytolong फॉन्ट के प्रथम संस्करण का लोकार्पण। यह कम्प्यूटर फॉन्ट newswing.com पर मुफ्त उपलब्ध किया गया है।

रांची, गुरुवार, 21 नवम्बर, 2002 16

हिन्दुस्तान

सत्यभारती सभागार में आदिवासी लिपियों पर आधारित तोलोंग सिकि लिपि का लोकार्पण

कंप्यूटर पर तोलोंग सिकि लिपि एक ऐतिहासिक उपलब्धि : आर्च बिशप

मुख्य संवाददाता

रांची, 20 नवंबर। आज की उपलब्धि अलग झारखंड राज्य के गठन से कहीं कम नहीं है। अब यह झारखंडी जनता के समक्ष चुनौती है कि वे भविष्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए आगे की रणनीति बनायें। ये विचार आर्चबिशप तेलेस्फर टोप्पो ने आज सत्यभारती सभागार में व्यक्त किये। वह प्रमुख आदिवासी लिपियों पर आधारित तोलोंग सिकि लिपि का आज लोकार्पण कर रहे थे। आर्चबिशप तेलेस्फर टोप्पो ने कंप्यूटर पर इस लिपि का प्रयोग भी किया। आर्चबिशप ने कहा कि वास्तविक अर्थों में आज की उपलब्धि झारखंड के इतिहास में मील का एक पत्थर है। अब इस लिपि के माध्यम से राज्य को अलग पहचान देना हमारी जिम्मेदारी है।

समारोह के मुख्य अतिथि तथा प्रभात खबर के प्रधान सम्पादक हरिवंश सिंह ने लिपि की सीडी, आर्चबिशप सहित अन्य ...

लोकार्पण समारोह में उपस्थित आर्च बिशप तेलेस्फोर पी टोप्पो व अन्य।

... हैं। वैश्वीकरण के इस दौर में इस दिशा में आदिवासी लिपि का कंप्यूटर विकास निश्चित तौर पर एक महत्वपूर्ण बात है। डॉ करमा उरांव ने कहा कि यूरोप में जहां अंग्रेजी का ...

... कहा कि पूर्व में झारखंड की विशिष्ट पहचान के लिए लड़ाई के जारी रहने के दौरान ही इस मुद्दे पर अनेकों बार चर्चा हुई थी और तब किसी के पास कोई सुझाव नहीं था कि इस ...

... विकास निश्चित तौर पर पूरे झारखंड के लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। प्रभाकर तिर्की ने कहा कि वर्तमान दौर में यह एक ऐतिहासिक बात है, जिस पर आगे भी शोध और विकास की आवश्यकता है। करीब दो दशक से लिपि के विकास से जुड़े डॉ नारायण उरांव ने इसके विकास के इतिहास पर प्रकाश डालते हुए प्रकृति के तौर-तरीकों पर आधारित इसके कारणों की व्याख्या की। कंप्यूटर पर इस लिपि का विकास करने वाले किसलय ने बताया कि टू-टाइप की लिपि के विकास में उन सभी तथ्यों पर ध्यान दिया गया है, जो किसी भी कंप्यूटर के इस्तेमाल करने वाले की प्राथमिक जरूरतें हैं। उन्होंने इस लिपि के कंप्यूटर विकास से जुड़े चार लोगों सुश्री अनिता, सुश्री किरण के अलावा सुशील और क्रिस्टो से भी अतिथियों का परिचय कराया। श्री किसलय ने बताया कि इस लिपि को निःशुल्क ही उपलब्ध कराया जा रहा है। फादर प्रताप टोप्पो ने समारोह का संचालन किया, जबकि मनोरंजन लकड़ा ने भी इस लिपि के विकास ... बातें बतायीं। धन्यवाद ज्ञापन ...

प्रभात खबर, रांची 21 नवंबर 2002, गुरुवार 7 **राजधानी**

आदिवासी भाषाओं की लिपि के सॉफ्टवेयर की सीडी का लोकार्पण

संवाददाता

रांची, 20 नवंबर : आदिवासी भाषाओं की लिपि तोलोंग सिकि के कंप्यूटर वर्जन *केलि तोलोंग डीटीपी सॉफ्टवेयर* का आज लोकार्पण किया गया. सत्यभारती सभागार में आयोजित एक समारोह में पत्रकार हरिवंश ने इस सॉफ्टवेयर की सीडी को जारी किया. समारोह में विशिष्ट अतिथि आर्चबिशप तेलेस्फोर पी टोप्पो ने कंप्यूटर में इसे लांच किया. आर्चबिशप ने इस तरह के प्रयास को आज के युग की मांग बताते हुए पूरी टीम को बधाई दी. उन्होंने कहा कि राज्य को एक लिपि मिल जाने से उसकी पहचान बढ जायेगी. उन्होंने पंजाब का उदाहरण पेश करते हुए कहा कि लिपि को सर्वमान्य बनाने के लिए इसे एक चुनौती के रूप में लेना होगा. कोई भी काम शुरू करना तो सरल होता है, मगर उसे जारी रखना कठिन होता है. आर्च बिशप ने आह्वान किया कि इस लिपि को अलग पहचान दिलायी जाये, ताकि राज्य उन्नति के शिखर पर पहुंच सके. उन्होंने स्थापना दिवस समारोह की ओर इशारा करते हुए कहा कि राज्य के विकास के लिए इस तरह के आयोजन पर्याप्त नहीं हैं. श्री टोप्पो ने इस लिपि को बढावा देने में हर संभव मदद देने का वादा भी दिया. समारोह में डॉ करमा उरांव ने इसे अनूठा और ऐतिहासिक अवसर करार दिया. उन्होंने कहा कि इस प्रयास से हम वैज्ञानिक युग में प्रवेश कर गये हैं. डॉ उरांव ने कहा कि विकास के लिए अपनी भाषा को बढावा देना जरूरी है और संविधान में भी इस तरह की व्यवस्था प्रदान की गयी है. डॉ उरांव ने झारखंड की जनजातीय भाषाओं की विशेषता का जिक्र करते हुए कहा कि इस क्षेत्र में 30 भाषाएं हैं, मगर सभी स्वायत्त हैं. उन्होंने आशा व्यक्त की कि इस लिपि से उन्हें एक सूत्र में पिरोने में मदद मिलेगी. भाजपा नेता विनोद भगत ने अलग राज्य आंदोलन का जिक्र करते हुए कहा कि उस वक्त उन्होंने महसूस किया कि बिना लिपि के झारखंड का अस्तित्व व पहचान खतरे में पड़ जायेगी. उसी समय उनलोगों ने इस क्षेत्र में काम करने की ठानी. लिपि विकसित करने के संबंध में श्री भगत ने पेशे से चिकित्सक डॉ नारायण उरांव के योगदान की सराहना की. साथ ही उन्होंने सॉफ्टवेयर विकसित करने के लिए किसलय को धन्यवाद दिया. श्री भगत ने इस लिपि को सर्वमान्य बनाने में मीडिया से सहयोग देने कि अपील की. झारखंड विकास दल के नेता प्रभाकर तिर्की ने इसे 21वीं सदी में आदिवासी आंदोलन की सबसे बड़ी उपलब्धि बताया. उन्होंने कहा कि इस प्रयास को आगे बढने के लिए टीम स्पिरिट की आवश्यकता है. श्री तिर्की ने सुझाव दिया कि इस लिपि का प्रयोग शिक्षा व कार्यालयों के कामों में किया जाना चाहिए. समारोह में स्वागत भाषण देते हुए मनोरंजन लकड़ा ने कहा कि जनजातीय भाषा के लिए एक लिपि की आवश्यकता थी, जिसे तोलोंग सिकि लिपि से पूरा कर लिया गया. उन्होंने ट्रेस पत्रिका के योगदान का भी जिक्र किया.

लिपि के आविष्कारक डॉ नारायण उरांव ने लिपि के बारे में जानकारी दी. उन्होंने बताया कि तोलोंग एक जनजातीय पोशाक है जो 24 हाथ लंबे कपड़े की होती है. लिपि के स्ट्रोक्स की जानकारी देते हुए श्री उरांव ने प्रकृति व आदिवासी संस्कृति में समानता के बारे में बतलाते हुए कहा कि दोनों ही घड़ी के विपरीत दिशा में मुख्य कार्य करते हैं. इस लिपि के स्ट्रोक्स भी इसी दिशा में विकसित किये गये हैं. उन्होंने लिपि को दो रूप सेटिंग व सस्पेंडिंग में बांटा. उन्होंने कहा कि सस्पेंडिंग लिपि में हिंदी, बांग्ला, गुरुमुखी लिपि शामिल है. वहीं सेटिंग में तमिल, कन्नड़ आदि लिपि शामिल हैं. श्री उरांव ने सेटिंग लिपि को बेहतर बतलाते हुए कहा कि तोलोंग सिकि लिपि भी इसी रूप में विकसित की गयी है. सॉफ्टवेयर के निर्माता किसलय ने बतलाया कि इसे *प्रभात खबर* के सौजन्य से मुफ्त प्राप्त किया जा सकता है. इसे किसलय डॉट कॉम वेबसाइट से आसानी से डाउनलोड किया जा सकता है. श्री किसलय ने बताया कि इस लिपि को विकसित करने में सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैंगवेज मैसूर के निदेशक डॉ फ्रांसिस एक्का का योगदान काफी महत्वपूर्ण है. इसके अलावा डॉ निर्मल मिंज व डॉ करमा उरांव ने भी सराहनीय योगदान दिया. समारोह का संचालन फादर प्रताप टोप्पो ने तथा धन्यवाद ज्ञापन ज्योति टोप्पो ने दिया.

केलि तोलोंग डीटीपी सॉफ्टवेयर की सीडी जारी करते अतिथि.

KellyTolong Keyboard Map (Phonetic)

तोलोंग सिकि (लिपि) मे अंको (1, 2, 3,... 9) के लिये Alt + 0161 से Alt + 0169 तक प्रयोग करे
जैसे:- Alt + 0162 → Alt + 0166 →

KellyTolong Software is the Computer Version of Tolong Siki Script, invented by Dr. Narayan Oraon (TRACE) ©KITS (Kislaya IT Services)

सन 2001 में लिपि बन कर तैयार हुई

■रांची : तोलोंग सिकि लिपि के निर्माता डॉ नारायण उरांव पेशे से चिकित्सक हैं. वे वर्तमान में बिहार के गया में पदस्थापित हैं. उन्होंने 1989 में इस लिपि पर काम करना शुरू किया और काफी प्रयासों के बाद सन 2001 में यह लिपि बन कर तैयार हुई. श्री उरांव ने बताया कि वर्तमान में इस लिपि से दो हाइस्कूलों व 10 प्राथमिक स्कूलों में पढ़ाई की जा रही है. इसके अलावा जल्द ही मिशनरी स्कूलों में इसकी पढाई शुरू की जायेगी. इसके अलावा मोरहाबादी स्थित कुड़ख भाषा लिपि शिक्षण केंद्र में प्रत्येक रविवार इसी लिपि की जानकारी लोगों को दी जाती है. इस लिपि में *केलगा* व *ग्राफिक्स ऑफ तोलोंग सिकि* पुस्तक बाजार में है.

बेटी के नाम पर तोलोंग सिकि लिपि

■रांची : लिपि को सॉफ्टवेयर के रूप में विकसित करनेवाले किसलय ने सूचना प्रावैधिकी में माइक्रो सर्टिफाइड सोल्यूशन डेवलपर कोर्स किया है. यह कोर्स बिल गेट्स के माइक्रोसॉफ्ट कंपनी द्वारा कराया जाता है. श्री किसलय ने 1983 से पत्रकारिता के क्षेत्र में कदम रखा. वे धर्मयुग, दिनमान, नवभारत टाइम्स जैसी पत्रिका से जुड़े. इसके अलावा इंडिया टुडे, टाइम्स ऑफ इंडिया, आनंद बाजार ग्रुप जैसे प्रकाशनों से भी जुड़े रहे. श्री किसलय ने वेब इंजीनियरिंग में डायनामिक फोंट टेक्नोलॉजी को परिष्कृत किया. उन्होंने तोलोंग सिपि लिपि का नाम अपनी बेटी केली के नाम पर *केली तोलोंग सिकि लिपि* रखा.

3. डॉ0 नारायण उराँव द्वारा लिखित Pkhpk M.Mh vjk [kh%jh पुस्तक को फा0 जेम्स टोप्पो, *ग्रामगुरू* द्वारा प्रकाषित किया गया।

4. दिनांक 24 दिसम्बर 2002 को अंगरेजी दैनिक The Indian Express में Tolong, a new script, takes tribal dialect to pen, paper,and computer शीर्षक लेख छपा।

The Indian EXPRESS NEW DELHI ■ TUESDAY ■ DECEMBER 24, 2002

PAGE 1 ANCHOR Tolong, a new script, takes tribal dialects to pen, paper, and computer

Now Jharkhand can give it in writing, literally

MANOJ PRASAD
RATU, DECEMBER 23

FOR hundred years, Jharkhand tribals have not had a script. In the past five, courtesy the efforts of one man called Francis Ekka, they have taken a straight leap from there to the 21st century: Now they not only have a script but they also have a book written in Tolong and a software based on it.

Till 1997, Khasi and Santhal were the only tribal languages that could boast of a script, but even these virtually disappeared a century ago. Since then, Jharkhand tribals have had to use Devanagri or English. That year, Ekka, director of the Mysore-based Central Institute of Indian Languages, along with Narayan Oraon, revealed a script called Tolong they had been developing for 10 years. It was a universal script, structured in such a way that it could be used with all the tribal dialects spoken in Jharkhand. A Church-owned publishing house, Satya Bharati, took the onus of making it popular.

The rest is part of tribal history. A Satya Bharati publication, *Kaliga*, (1988) authored by Ekka and Oraon, is now in its third edition, while a software based on Tolong is doing the rounds. Today, in Jharkhand, Tolong is a compulsory subject in at least two schools — Adivasi Vidyalaya in Gumla and Adivasi Bal Vikas Vidyalaya (ABVV), Ratu, 10 km from Ranchi. Since 1999, students from Classes III to VIII have been learning it.

CONTINUED ON PAGE 2

ABVV students reading Tolong

5- ikdfrd foKku vkj vkfnoklh %& इस संबंध में डॉ0 नारायण उराँव ने अपने शोध–अध्ययन के पश्चात् स्पष्ट किया कि – ब्रह्माण्ड में पृथ्वी, कृत्रिम घड़ी की विपरीत दिशा (Anticlockwise direction) में सूर्य की परिक्रमा करती है। जिसके चलते सभी प्राकृतिक चीजें इससे प्रभावित होती हैं। जैसे – बीज के अंकुरण के पश्चात् एक लता किसी आधार पर घड़ी की विपरीत दिशा (Anticlockwise Direction) में ही उपर चढ़ती है। समुद्र में, पानी का भँवर घड़ी की विपरीत दिशा में घुमती है। इसी तरह हवा का बवण्डर (बईरबण्डो), घड़ी की विपरीत दिशा में ही घुमती है। आदिवासियों ने प्रकृति के इस क्रिया–कलाप को देखकर सीखा और अपने सभी पूजा–पाट, नेग–अनुष्ठान आदि (जन्म से लेकर मृत्यु तक) घड़ी की विपरीत दिशा (Anticlockwise) में सम्पन्न करना आरंभ किया, किन्तु परिस्थिति विशेष में कुछ चिन्हित गाँव का संस्कार घड़ी की दिशा में भी सम्पन्न होता है। मृत्यु संस्कार करते समय बाएँ हाथ से अनुष्ठान किया जाता है। इसका तर्क यह है कि जीवन में जो काम एक बार किया जाता है उसे बाँये हाथ से किया जाता है। उराँव परम्परा में सगई शादी (विधवा या विधुर की शादी) में मांग सिन्दुर में नहीं दिया जाता, बल्कि शरीर के अन्य किसी अंग में दिया जाता है अर्थात सामाजिक रूप से एक ही शादी की मान्यता है। अर्थात स्थिति विशेष में सगई शादी की भी सामाजिक मान्यता है। एक हलवाहा, हल चलाते समय दायीं ओर से बाँयी ओर घुमते हुए, फिर दायीं ओर आगे बढ़ते आँतर चढ़ाता है। आदिवासी अपनी भाषा में तीःना–डेब्बा (दायाँ–बायाँ/Right-Left) कहते हैं न कि बायाँ–दायाँ (Left-Right). आदिवासी सभ्यता का अपना अलग इतिहास है, जिसपर आदिवासी जी रहे हैं और आने वाली पीढ़ी तक पँहुचाना चाहते हैं।

इन्हीं कारणें से वर्णमाला निर्धारण में अधिकतर वर्णों को आदिवासी परम्परा के अनुकूल घड़ी की विपरीत दिशा में अनुक्रमित किया गया है।

o"k & 2003

1- >kj[k.M ljdkj द्वारा विभागीय i=kd 129 fnukd 18-9-2003 द्वारा कुँडुख़ भाषा की लिपि के रूप में rkyksx flfd को स्वीकृत प्रदान किया गया तथा इसे *संविधान की आठवीं अनुसूची* में षामिल किये जाने हेतु गृह मंत्रालय, केन्द्र सरकार, नई दिल्ली को अनुषंसा पत्र प्रेषित किया गया है।

148

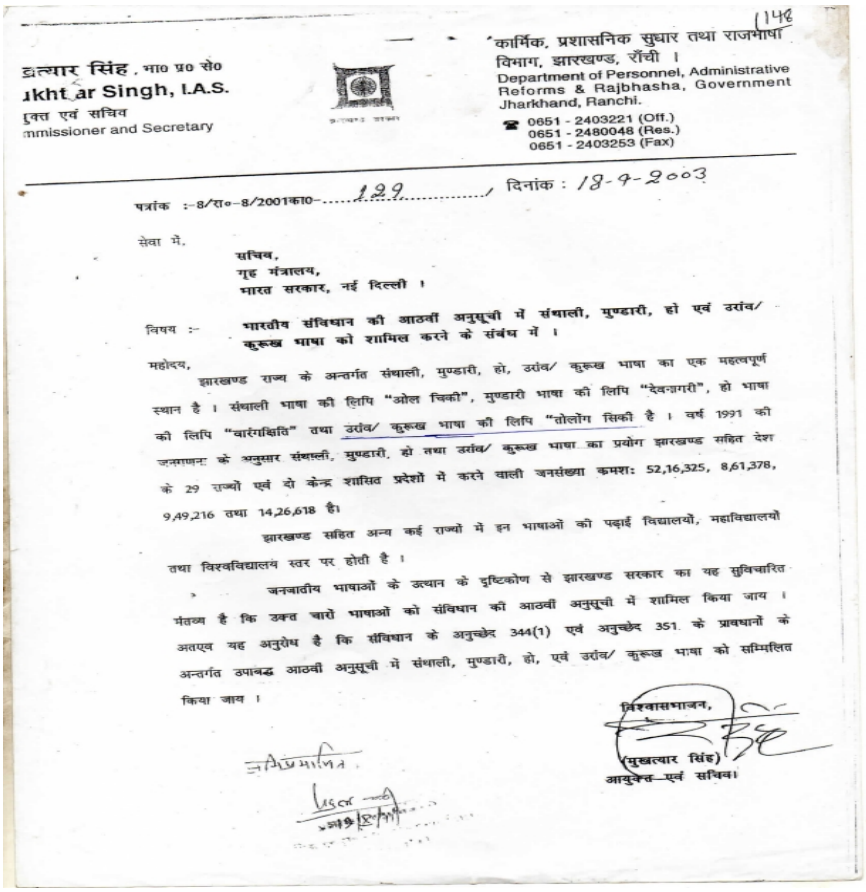

ख़्त्यार सिंह, भा० प्र० से०
ukhtar Singh, I.A.S.
युक्त एवं सचिव
mmissioner and Secretary

कार्मिक, प्रशासनिक सुधार तथा राजभाषा विभाग, झारखण्ड, राँची ।
Department of Personnel, Administrative Reforms & Rajbhasha, Government Jharkhand, Ranchi.
☎ 0651 - 2403221 (Off.)
0651 - 2480048 (Res.)
0651 - 2403253 (Fax)

पत्रांक :-8/रा०-8/2001का0-........129............, दिनांक : 18-9-2003

सेवा में,
सचिव,
गृह मंत्रालय,
भारत सरकार, नई दिल्ली ।

विषय :- **भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में संथाली, मुण्डारी, हो एवं उरांव/ कुरूख भाषा को शामिल करने के संबंध में ।**

महोदय,

झारखण्ड राज्य के अन्तर्गत संथाली, मुण्डारी, हो, उरांव/ कुरूख भाषा का एक महत्वपूर्ण स्थान है । संथाली भाषा की लिपि "ओल चिकी", मुण्डारी भाषा की लिपि "देवनागरी", हो भाषा की लिपि "वारंगक्षिति" तथा उरांव/ कुरूख भाषा की लिपि "तोलोंग सिकी है । वर्ष 1991 की जनगणना के अनुसार संथाली, मुण्डारी, हो तथा उरांव/ कुरूख भाषा का प्रयोग झारखण्ड सहित देश के 29 राज्यों एवं दो केन्द्र शासित प्रदेशों में करने वाली जनसंख्या क्रमशः 52,16,325, 8,61,378, 9,49,216 तथा 14,26,618 है।

झारखण्ड सहित अन्य कई राज्यों में इन भाषाओं की पढ़ाई विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा विश्वविद्यालय स्तर पर होती है ।

जनजातीय भाषाओं के उत्थान के दृष्टिकोण से झारखण्ड सरकार का यह सुविचारित मंतव्य है कि उक्त चारों भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाय । अतएव यह अनुरोध है कि संविधान के अनुच्छेद 344(1) एवं अनुच्छेद 351 के प्रावधानों के अन्तर्गत उपाबद्ध आठवीं अनुसूची में संथाली, मुण्डारी, हो, एवं उरांव/ कुरूख भाषा को सम्मिलित किया जाय ।

विश्वासभाजन,
(मुखत्यार सिंह)
आयुक्त एवं सचिव।

अभिप्रमाणित

2- Mk0 ukjk;.k mjk¡o द्वारा लिखित पुस्तक rksyksax flfd dk mnHko vkSj fodkl] फादर tEl Vksiiks द्वारा प्रकाषित किया गया तथा डॉ0 बहुरा एक्का, डॉ0 करमा उराँव, डॉ0 बासंती कुमारी आदि द्वारा दिनांक 06 दिसम्बर 2003 को लोकार्पण किया गया।

रांची, 7 दिसंबर, रविवार, 2003 , 4 राजधानी प्रभात खबर

आदिवासियों ने अपनी भाषा खो दी है : डॉ एक्का

संवाददाता

रांची, 6 दिसंबर : आदिवासी भाषाओं में उरांव भाषा की स्थिति अच्छी नहीं है. विनोबा भावे विवि के कुलपति डॉ बहुरा एक्का ने उक्त बातें कही. वे मुख्य अतिथि के रूप में आज स्थानीय संत जॉन्स स्कूल, पुरुलिया रोड के सभागार में 'तोलोड. सिकि का उदभव एवं विकास' नामक पुस्तक के लोकार्पण समारोह को संबोधित कर रहे थे.

डॉ एक्का ने कहा कि कुड़ुख भाषा में हर लय है. इस भाषा के हर अवस्था में लय है. बावजूद इसके भाषा की स्थिति दयनीय है. उन्होंने कहा कि आज स्थिति यह है कि आदिवासी समुदाय के शिक्षित लोग पीछे मुड़कर अपने पूर्वजों को नहीं देखते हैं. यही वजह है कि वे अपनी भाषा व संस्कृति खो रहे हैं. यह अच्छा संकेत नहीं देता है. इससे पूर्व उन्होंने डॉ नारायण उरांव सैद्रा द्वारा रचित 'तोलोड. सिकि का उदभव एवं विकास' नामक पुस्तक का लोकार्पण किया. इस अवसर पर समारोह के विशिष्ट अतिथि डॉ करमा उरांव, डॉ अगापित तिर्की, किसलय, फादर रंजीत टोप्पो आदि उपस्थित थे. डॉ करमा उरांव ने उरांव ने भाषा की स्थिति के आलोक में तोलोड. सिकि का उदभव एव विकास पुस्तक को अपनाने की जरूरत पर बल दिया. उन्होंने समाज के विकास के लिए भाषा व संस्कृति को जरूरी बताया. आदिवासियों से अपनी भाषा के संरक्षण का आह्वान किया. अधिवक्ता अलबिनुस मिंज ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि यहां के आदिवासी अपनी भाषा भी नहीं जानते हैं. आपसी संवाद भी दूसरी भाषा में करते हैं. किसलय ने तकनीकी चीजों में भाषा की महत्ता पर विशेष प्रकाश डाला. फादर रंजीत टोप्पो ने संस्कृति को बचाये रखने की बात कही. प्रो बासंती कुमारी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की. फादर जेम्स टोप्पो ने कार्यक्रम का संचालन किया. गिरधारी राम गौंझू ने पुस्तक की समीक्षा की. कार्यक्रम में उपस्थित अन्य लोगों में डॉ नारायण भगत, प्रो हरि उरांव, डॉ जेजे लकड़ा, फादर क्लेमेंट लकड़ा, शिव शंकर उरांव, महाबीर उरांव, सीसी बेक, शरण उरांव, निरंजन लकड़ा आदि शामिल थे. इससे पूर्व कार्यक्रम के आरंभ में संत जॉन्स के बच्चों ने स्वागत गान गाये.

पुस्तक का लोकार्पण करते डॉ बहुरा एक्का व अन्य.

हिन्दुस्तान

रांची, रविवार, 7 दिसम्बर, 2003 6

एक झलक

डॉ नारायण उरांव लिखित पुस्तक का विमोचन

पुस्तक का लोकार्पण करते डॉ बहुरा एक्का व अन्य।

रांची ।डॉ नारायण उरांव की लिखित पुस्तक, तोलोंड. सिकि लिपि का उद्‌भव एवं विकास का विमोचन बिनोवाभावे विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ बहुरा एक्का ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पुरानी कुड़ुख संस्कृति काफी समृद्धशाली थी। अन्य आदिवासी जाति से अधिक ग्रहणशील रहे। यही गुण हमारा दुर्भाय बन गया और हमारे लिए अभिशाप हो गया। अपनी संस्कृति एवं लिपि को सुरक्षित रखने के लिए सामूहिक तौर पर काम करने की आवश्यकता है। इसकी शुरुआत घर एवं परिवार से होनी चाहिये। डॉ उरांव पेशे से शिशु रोग विशेष हैं। उन्होंने सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ इंडियन लैंवेज, मैसूर के पूर्व निदेशक स्व. डॉ फ्रांसिस एक्का के निर्देशन में लिपि का विकास करना आरंभ किया था। दस वर्षों की मेहनत के बाद उन्हें इसमें कामयाबी मिली। उनके मुताबिक आने वाले दिनों में यह झारखंड की आम लिपि होगी। अन्य भाषाओं की तुलना में इसमें लिखने में काफी सुविधा होती है। कार्यक्रम का संचालन जेम्स टोप्पो, अध्यक्षता डॉ कुमारी बासंती ने किया। इस अवसर पर डॉ करमा उरांव, डॉ अगापित तिर्की, किसलय, अगस्तुक तिग्गा, फादर रंजीत टोप्पो, डॉ नारायण भगत, डॉ गिरधर राम गंझु भी उपस्थित थे।

o"kZ & 2004

1. डॉ0 नारायण उराँव ने डॉ0 निर्मल मिंज, फा0 जेम्स टोप्पो, डॉ0 नारायण भगत, डॉ0 एतवा उराँव, फा0 अगुस्तिन केरकेट्टा, श्री बिरसा बिरचन्द लकड़ा आदि के साथ कई लघु कार्यषाला आयोजित कर एवं *तोलोंग सिकि* के उत्तरोतर विकास को जारी रखते हुए लगातार कार्य किया गया।

2. उत्तरोत्तर विकास के क्रम में *वर्णमाला* के कई चिन्हों को समाज द्वारा सुधार किये जाने का प्रस्ताव आया एवं उसपर भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण से सुधार किया गया।

3. दिनांक 04 नवम्बर 2004 को मोरहाबादी मैदान, राँची में आयोजित, आदिवासी चेतावनी महारैली में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करनवाले 15 लोगों को सम्मानित किया गया। भाषा–लिपि आविष्कार में योगदान के लिए पं0 रघुनाथ मुर्मू , डॉ0 नारायण उराँव, श्रद्धेय लाको बोदरा के परिजन और मदुराय मुडा को सम्मानित किया गया।

हिन्दुस्तान — रांची, शुक्रवार, 05 नवम्बर, 2004

आदिवासी चेतावनी महारैली में मंच पर देवकुमार धान व अन्य ।

महारैली में जिन्हें सम्मानित किया गया

रांची। आदिवासी चेतावनी महारैली में विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्य करनेवाले 15 लोगों को सम्मानित किया गया। भाषा अविष्कार में योगदान देने के लिए रघुनाथ मुर्मू, डॉ नारायण उरांव, स्व लाको बोदरा के परिजन और मदुराय मुंडा को सम्मानित किया गया। स्वशासन व्यवस्था के लिए हरेंद्रनाथ मुर्मू, दीनु उरांव, अंतु हेम्ब्रम, पौलुस तिडू, धर्म के लिए स्व रामदास किस्कू के परिजन, शिवप्रकाश भगत, भन्ना पाठ पिंगुआ और जमीन बचाने के लिए योगदान देने वालों में बस्ता सोरेन, तेजबहादुर उरांव, शहीद गंगाराम कालुंडिया और शहीद लड़ाकू कच्छप के परिजनों को सम्मानित किया गया।

हेसल में की गयी प्रार्थना सभा : हेसल सत्यारी सरना स्थल पिस्कामोड़ द्वारा प्रार्थना सभा एवं शुद्धिकरण का आयोजन किया गया। शिवा कच्छप की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में पूर्ण विधि–विधान के साथ पाहन राजाओं ने पूजा–अर्चना की। चमरा लिंडा ने पाहन राजा का माला पहनाकर स्वागत किया। वहां मां सरना का झंडा लगाकर लोगों ने आदिवासी एकता बनाये रखने का संकल्प लिया। पूजा के बाद लोग महारैली में भाग लेने के लिए कूच कर गये। रैली में कांग्रेस विधायक देवकुमार धान भी पैदल चल रहे थे।

झलकियां

- *रैली में भाग लेने के लिए पड़हा राजा काठ के घोड़े पर सवार होकर पहुंचे।*
- *कुछ लोग बेंजो की धुन पर तो कुछ ढोल–मांदर की थाप पर नाचते गाते चल रहे थे।*
- *भाषण के दौरान बीच–बीच में ढोल–नगाड़ा और घंटा बजाकर नेताओं का उत्साहवर्द्धन किया जा रहा था।*
- *अपराह्न तीन बजे एक दर्जन से अधिक विशालकाय सरना झंडा लेकर लोग जुलूस के रुप में मोरहाबादी मैदान पहुंचे।*
- *एसीएस के सचिव सतीश भगत दोपहर 12 बजे से ही माइक थामे हुए लोगों को संबोधित कर रहे थे।*
- *मंच के बीचो–बीच आगे की ओर भगवान बिरसा मुंडा की विशाल प्रतिमा लगायी गयी थी।*
- *महारैली में बड़ी संख्या में महिलाएं भी शामिल हुयीं, जो नाच–गा रही थीं।*
- *बीच–बीच में आदिवासी जमीन लेकर रहेंगे, शोषण अब बर्दाश्त नहीं करेंगे का नारा लगाया जा रहा था।*

o"k & 2005

1. डॉ0 निर्मल मिंज द्वारा केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर का भ्रमण कर, भाषाविद् Jh vkj- bykfx;u को राँची में कार्यषाला आयेजित करने हेतु अनुरोध किया गया। इस कार्यषाला के लिए डॉ0 मिंज द्वारा रेभ. एफ. हॉन का कुँडुख़ ग्रामर का कुँडुख़ अनुवाद एवं डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' द्वारा तैयार किया हुआ पारिभाषिक षब्दावली की सूची, श्री आर. इलांगियन को सौंपा गया, जो दिसम्बर 2005 के कार्यषाला का आधार बना।

2- dqMq[k Hkk"kk ikfjHkkf"kd 'kCnkoyh ukedj.k ;ktuk] केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर के भाषाविद् Jh vkj- bykfx;u एवं झारखण्ड जनजातीय कल्याण षोध संस्थान, राँची के निदेषक, MkW0 Ádk'k pUæ mjkWo के संयुक्त निर्देषन में दिनांक 09 से 18 दिसम्बर 2005 तक लगभग 30 प्रतिभागियों के साथ सेमिनार सम्पन्न हुआ, जहाँ डॉ0 नारायण उराँव भी एक प्रतिभागी बने।

CENTRAL INSTITUTE OF INDIAN LANGUAGES
(Ministry of Human Resources Development, Govt. of India) Manasagangotri, Mysore- 570 006

AND

JHARKHAND TRIBAL WELFARE RESEARCH INSTITUTE
(Govt. of Jharkhand) Morabadi, Ranchi – 834 008

CERTIFICATE

This is to certify that Dr. NARAYAN ORAON has attended productively the Workshop on 'Terminology Planning in Kurukh' from 9th December 2005 to 18th December 2005 and he participated in all the discussions for determining the terminology to be used in writing Kurukh grammar and material production for teaching Kurukh as a mother tongue. His contribution to the workshop has resulted in the compiling of the booklet 'Technical Terminology in Kurukh – 1'.

Dr. PRAKASH CHANDRA ORAON	R. ELANGAIYAN
COORDINATOR, JTWRI, RANCHI	COORDINATOR, CIIL, MYSORE

o"k & 2006

1. Jh vkj- bykfx;u से भाषा वैज्ञानिक दृष्टिकोण के अनुसार नई उर्जा प्राप्त कर Mk0 ukjk;.k mjko द्वारा *तोलोंग सिकि* के आधार पर कुँडुख़ व्याकरण एवं पारिभाषिक षब्दावली विषय पर पुस्तक तैयार किये जाने सुझाव प्राप्त हुआ।

2. rkykx flfd में साहित्य सृजन एवं प्रचार–प्रसार हेतु *अखिल भारतीय तोलोंग सिकि प्रचारिणी सभा* का गठन किया गया तथा *इसके* माध्यम से कुँडुख़ भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये जाने की दिषा में जनजागरण अभियान आरंभ हुआ।

3. dM[k fyVjjh lklk;Vh vkQ bfM;k का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 14–15 अक्टूबर 2006 को राँची, झारखण्ड में सम्पन्न हुआ तथा *तोलोंग सि*fd पर परिचर्चा हुई।

o"kZ & 2007

1. d¡M+[k ¼mjkao½ Áxfr'khy lekt] NÙkhlx<+ द्वारा आयोजित वार्षिक सम्मेलन, दिनांक 12. 02.2007 ई0 को मुख्य अतिथि राज्यपाल ई0 एस0एल0 नरसिम्हन ही उपस्थिति में सम्पन्न। सम्मेलन से पूर्व दिनांक 12.02.2007 ई0 को *तोलोंग सिकि* पर विस्तृत कार्यषाला सह परिचर्चा तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये की जाने की योजना पर विचार–विमर्ष हुई।

जनसत्ता — राजधानी

आदिवासी समाज शिक्षा को बनाए हथियार : नरसिम्हन

कुडुख (उरांव) प्रगतिशील समाज छत्तीसगढ़ का वार्षिक सम्मेलन

रायपुर, ११ फरवरी (जनसत्ता)। राज्यपाल ई.एस.एल. नरसिम्हन ने आज कुडुख (उरांव) प्रगतिशील समाज छत्तीसगढ़ के वार्षिक सम्मेलन का शुभारंभ करते हुए कहा कि आधुनिक शिक्षा ने हमारे आदिवासी भाई-बहनों को राज्य व राष्ट्र की मुख्य धारा में शामिल होने के लिए बेहतर अवसर उपलब्ध कराया है।

शिक्षा ही वह हथियार है जिससे गरीबी, बेरोजगारी दूर करने के साथ-साथ आर्थिक हालात मजबूत किए जा सकते हैं। ग्रामीण व वन अंचलों में रहने वाले लोगों को शिक्षा के क्रांतिकारी व परिवर्तनकारी रूपों से लाभान्वित करने का पूरा प्रयास किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि वनों में रहने वाले हमारे ये आदिवासी भाई-बहनों में प्रतिभा की कमी नहीं है। ये छुपे रूस्तम हैं जिनकी प्रतिभा को और अधिक आगे लाने की जरूरत है। इस अवसर पर कार्यक्रम की अध्यक्षता अंबिकापुर महापौर प्रबोध मिंज ने की। विशिष्ट अतिथि के रूप में पर्यटन व संस्कृति मंत्री बृजमोहन अग्रवाल उपस्थित थे।

नरसिम्हन ने आगे कहा कि दुर्गम आदिवासी अंचलों में लोगों को शिक्षा सुलभ कराने के उद्देश्य से शासन द्वारा प्रयास किए गए हैं। इनसे व्यापक परिवर्तन देखने को मिला है किंतु अभी भी बहुत कुछ किए जाने की जरूरत है। इसके लिए स्वयंसेवी संस्थाओं और सामाजिक संगठनों को आगे आकर शासन के साथ तालमेल बनाकर कार्य करने की जरूरत है।

उन्होंने खुशी व्यक्त करते हुए कहा कि शासन-प्रशासन में अनेक पदों पर आसीन होना इस बात का प्रमाण है कि शिक्षा के जरिये जीवन स्तर में काफी परिवर्तन आया है। नरसिम्हन ने कहा कि इस सामाजिक संगठन के साथ 'प्रगतिशील' जुड़ा हुआ है और अब यह सिद्ध करने की जरूरत है कि इसके माध्यम से हम आने वाले सालों में अपने और कितने भाई-बहनों को प्रगति की राह में आगे लाते हैं।

संस्कृति व पर्यटन मंत्री बृजमोहन अग्रवाल ने कहा कि किसी भी समाज में आगे बढ़ने के लिए एकता की आवश्यकता होती है। खुशी की बात है कि पूरे छत्तीसगढ़ व देश में कुंडुख समाज ने सबसे ज्यादा तरक्की की है। उन्होंने कहा कि समाज में आगे बढ़ चुके लोगों की विशेष जिम्मेदारी है कि वे समाज के १० अन्य लोगों को भी आगे बढ़ाये और पूरा देश ही हमारा समाज है। उन्होंने कहा जंगल व वनों से घिरे क्षेत्रों में विकास की रोशनी पहुंचे, इसके लिए सभी को विशेष प्रयास करना होगा तथा नीति तय करनी होगी कि वन उनकी प्रगति में सहायक बने ना कि अवरोधक। उन्होंने कहा कि वनवासी समाज को विकास की धारा में लाना होगा और इसके लिए उन्हें नौकरियों के अलावा स्वरोजगार के अन्य क्षेत्रों में भी आना चाहिए।

2. f'k{kk e=h] >kj[k.M ljdkj Jh cU/kq frdhZ माननीय कार्डिनल तेलेस्फॉर पी0 टोप्पो, डॉ0 करमा उराँव, श्री किसलय जी आदि द्वारा दिनांक 03 अप्रैल 2007 को *तोलोंग सिकि* का कम्प्यूटर वर्जन dsfyrkyksx फॉन्ट के f}rh; laLdj.k का लोकार्पण किया गया।

जनजातीय भाषा एकेडमी का गठन इसी माह : बंधु

भाषा किसी समुदाय की पहचान होती है : कार्डिनल

केंद्रीय पुस्तकालय में कुडुख भाषा की लिपि का लोकार्पण

रांची। शिक्षा मंत्री बंधु तिर्की ने कहा है कि जनजातीय भाषा एकेडमी का गठन अप्रैल माह के अंत तक कर लिया जाएगा। साथ ही इसका पूरा ढांचा भी तैयार कर लिया जाएगा। श्री तिर्की तीन अप्रैल को रांची वि.वि. केन्द्रीय पुस्तकालय में कुडुख भाषा लिपी का लोकार्पण कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि कुडुख भाषा की किताबे इस सत्र से पहली से आठवीं का क्लास के बच्चों को मुफ्त में मिल सके इसकी तैयारी लगभग पूरी कर ली गयी है। उन्होंने कहा कि सभी कालेजों में इस भाषा की पढ़ाई हो इसकी व्यवस्था राज्य सरकार जल्द करेगी। इस मौके पर शिक्षा मंत्री ने विभाग की और से एक लाख रूपये देने की घोषणा की। लिपी का शोध संकलन करने वाले नारायण उरांव को 1 लाख 50 हजार रूपये देने की घोषणा की। इस अवसर पर विशेष आमंत्रिथ अतिथि कें रूप में अपने विचार व्यक्त करते हुए कार्डिनल पी. तेलेस्फर टोप्पों ने कहा कि भाषा किसी समुदाय की पहचान होती है। उन्होंने कहा कि कुडुख भाषा की लिपि बन गयी है और इसे समुद्धशाली बनाने की को. शिश सभी को मिलकर करनी चाहिए। श्री टोप्पो ने कहा कि एकजुट होकर यह कार्य करना होगा। श्री टोप्पो ने इस मौके पर कहा कि भाषा के साथ हीं हमारी अस्मिता जुड़ी हुयी है। भाषा हीं हृदय की कुंजी है। कांग्रेस के विधायक नियेल तिर्की ने कहा कि जिस तरह से संथाली भाषा को आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया है इसी तरह से कुडुख भाषा को भी आठवीं अनुसूची में शामिल किया जाए। उन्होंने कहा कि इस भाषा को इतना विकसित किया जाए कि पूरा विश्व इस भाषा के बारे में जा़न सके। पूर्व विधायक दुखा भगत ने कहा कि भाषा के बिना समाज गूंगा है। श्री भगत ने कहा कि भाषा तो हमलोग विकसित कर लिये हैं लेकिन इस भाषा को सिखाने के लिए विशेषज्ञों की टीम को रखा जाए। उन्होंने कहा कि भाषा और संस्कृति को एक साथ लेकर चलने से ही इस भाषा को और उरांव समाज को आगे बढ़ाया जा सकता है। इस अवसर पर जॉय लकड़ा, डा. निर्मल मिंज, डा. करमा उरांव, फादर अगस्टीन तिर्की, नारायण उरांव एवं किसलय ने भी अपने विचार व्यक्त किये। सभी वक्ताओं ने इस भाषा के विकास और कुडूख (उरांव) समाज को समृद्धशाली बनाने पर जोर दिया। इसी संदर्भ में 15 अप्रैल को बैठक का आयोजन किया गया है।

कुडुख लिपि का लोकार्पण करते बंधु तिर्की एवं कार्डिनल तेलेस्फोर पी. टोप्पो। छाया : आज

3. d¡M+[k ¼mjkao½ mUufr lekt] >kj[k.M द्वारा आयोजित कुँडुख़ महासम्मेलन – 2007, MkW0 djek mjkao की अध्यक्षता में दिनांक 02 एवं 03 मई 2007 ई0 को समाज सेवा केन्द्र, पुरूलिया रोड राँची में सम्पन्न। इस दो दिवसीय सम्मेलन में *तोलोंग सिकि* की विस्तृत परिचर्चा तथा संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये की जाने की योजना पर विचार–विमर्ष हुआ।

www.hindustandainik.com — रांची

हिन्दुस्तान रांची, गुरुवार, 03 मई, 2007

कुड़ुख उरांव उन्नति समाज का महासम्मेलन -2007 में

कुड़ुख परिष्कृत भाषा : बिशप बरवा

एसडीसी सभागार में बुधवार को आयोजित महासम्मेलन में मंच पर बैठे वक्ता व उपस्थित लोग।

रांची (सं)। कुड़ुख (उरांव) एक परिष्कृत भाषा है, जो लोक कल्याण व संस्कृति की एकजुटता में सहायक है। आने वाले दिनों में यह भाषा वृहत रूप लेगी। उक्त बातें कुड़ुख महासम्मेलन 2007 में मुख्य अतिथि बिशप विंसेंट बरवा ने कही। महासम्मेलन का आयोजन दो मई को एसडीसी सभागार में किया गया। इस अवसर पर उन्होंने सदस्यों से कहा कि इसे सीखकर इसकी क्षमता बढ़ायें। इस अवसर पर मुख्य अतिथि और डॉ एक्का ने संयुक्त रूप से दीप जलाकर सम्मेलन का उद्घाटन किया। साथ ही कुड़ुख उरांव उन्नति समाज के अध्यक्ष डॉ करमा उरांव ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि पूर्व कुलपति डॉ बहुराय एक्का ने भी कुड़ुख भाषा के महत्व की विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि यह तभी संभव होगा, जब हम एकताबद्ध होकर आगे बढ़ें। बिशप पीडीएस तिर्की और रेव निरंजन एक्का ने भी संयुक्त रूप से कुड़ुख गीत गाकर भाषा संस्कृति की एकता प्रदर्शित की।

कार्यक्रम के बाद के सत्र में कुड़ुख उरांव समुदाय के इतिहास और अेरा सीरी (पौराणिक कथाओं) पर विचार-विमर्श हुआ। तीसरे सत्र में तोलोंग सिकी (कुड़ुख लिपि) पुस्तिका का विमोचन किया गया, कुड़ुख समुदाय की दशा और दिशा पर फादर लिनुस कुजूर व फादर पीटर महेन्द्र तिग्गा ने विचार व्यक्त किये। अंत में खुला अधिवेशन हुआ। कार्यक्रम में वक्ताओं के अलावा डॉ रामेश्वर उरांव, देवकुमार धान, जुगेश उरांव, उषा रानी मिंज, आरइवी कुजूर, राणा प्रताप उरांव, पवन एक्का, फादर अगस्टीन केरकेट्टा, डॉ शांति खालखो, डॉ हरि उरांव, डॉ हरिनारायण भगत, डॉ नारायण भगत, प्रो. रामकिशोर भगत, प्रो. महामणि कुमार, प्रो कैलाश उरांव, फादर अलबिनुस मिंज, समीजीरा टोप्पो, प्रमोद कुजूर, हेमंत टोप्पो ने भी अपने विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम के आयोजन में प्रदीप एक्का, विजय आशीष कुजूर, अरविंद कच्छप, अनमोल मिंज व अन्य ने उल्लेखनीय सहयोग किया। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ निर्मल मिंज ने किया। कार्यक्रम में छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, उड़ीसा, अंडमान निकोबार, बंगाल, नेपाल व झारखंड से तीन सौ से ज्यादा लोग शामिल हुए।

नया आयाम देने के प्रस्ताव पर विचार

महासम्मेलन में कुड़ुख भाषा साहित्य को नया आयाम देने के लिए कई महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर विचार किया गया। कुड़ुख भाषा साहित्य को विश्वविद्यालय स्तर तक पढ़ाने की संरचना को अलग करने, नागपुरी व गैर जनजातीय भाषा के साथ इसका अध्ययन -अध्यापन व शोध न हो। साथ ही कुड़ुख भाषा को आठवीं अनुसूची में डालने के लिए सरकारी स्तर पर प्रयास किये जायें। तोलोंग सिकी (कुड़ुख भाषा की लिपि) का प्रचार-प्रसार हो व सरकारी स्तर पर स्वीकृति के लिए प्रयास किये जायें। कुड़ुख उन्नति समाज के प्रयासों का राष्ट्र स्तर पर पहल हो, ताकि समुदाय एकजुट हो। धर्म, जाति, राजनीति विभेद से ऊपर उठ कर कुड़ुख जातीय आधार को मजबूती मिले। साथ ही विश्वविद्यालय स्तर पर कुड़ुख भाषा के विभिन्न पहलुओं पर शोध हो।

4- d¡M¡[k fyVj¡jh lkfgR;d lkslk;Vh vkQ bfM;k का दूसरा राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 23–24 नवम्बर 2007 को नई दिल्ली में सम्पन्न तथा *तोलोंग सि*fd पर परिचर्चा।

o"kZ & 2008

1. प्राथमिक पुस्तिका dbyxk का संषोधित चतुर्थ संस्करण सत्यभारती, राँची से प्रकाषित।

2. vkfnokl h mjkao lkfgfR;d ,oa lkaLd`frd lkslk;Vh] ckyqj?kkV] i0 caxky द्वारा आयोजित, श्री बन्धन उराँव की अध्यक्षता में दिनांक 28.12.2008 ई0 को *वार्षिक सम्मेलन – 2008* सम्पन्न। इस सम्मेलन में *बालूरघाट, प0 बंगाल* के प्रतिभागियों ने *तोलोंग सिकि* को कुँड़ुख़ भाषा की लिपि स्वीकार करते हुए, संविधान की आठवीं अनुसूची में षामिल किये जाने का निर्णय लिया गया।

3. श्री बिनोद भगत, लोहरदगा के संयोजन में ग्राम – ख़ाख़े, जिला – लोहरदगा के कुँड़ुख़ भाषियों द्वारा 02 फरवरी 2008 को ''कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि'' विषय पर परिचर्चा, जहाँ गाँव वालों द्वारा विषेष कर Jh fnmM¡ Hkxr द्वारा तीन प्रष्न उठाये गये –

(क) अखड़ा, एन्देर गे सुना मंज्जा (क्यों सुना हुआ) ?

(ख) धुमकुड़िया, एन्देर गे नट्ठरा (क्यों समाप्त हुआ) ?

(ग) पड़हा, एन्देर गे मल उक्की (क्यों नहीं बैठता है) ? ....

यह तीन प्रष्न, समाज को नई दिषा में सोचने के लिए विवष किया। ये प्रष्न, डॉ0 नारायण उराँव के मन–मस्तिस्क में नई जनचेतना एवं ओज जगाई।

4. श्री बिनोद भगत, लोहरदगा की संयोजन में फिर से 04 मई 2008 को बी0 एस0 कॉलेज, लोहरदगा के प्रांगन में कुँड़ुख़ नवयुवक–नवयुवतियों के साथ rksyksax flfd ¼ D;ksa vkj D;k \

विषयक विचार गोष्ठी सम्पन्न हुई, जहाँ डॉ0 उराँव ने लगभग 200 छात्र–छात्रों एवं भाषा प्रेमियों के बीच अपनी कार्य योजना के संबंध में बतलाया।

5- d|M[k fyVjjh lklk;Vh vkQ bfM;k का तीसरा राष्ट्रीय अधिवेषन, दिनांक 11–14 अक्टूबर 2008 को सिलिगुड़ी, प0 बंगाल में सम्पन्न तथा *तोलोंग सिकि* पर परिचर्चा।

6. Mk0 fcUn| igku] ए0 बी0 एम0 कॉलेज, गोलमुरी, जमषेदपुर की संयोजन में सोनारी, टाटा में rkykx flfd % D;k vkj D;k \ विषयक विचार गोष्ठी डॉ0 नारायण उराँव द्वारा प्रस्तुत करवाया गया।

7. श्री थद्दियुस लकड़ा एवं श्री महेष लकड़ा के नेतृत्व में कोलकता में कार्यरत नौकरी पेषा वाले कुँड़ुख़ भाषा प्रेमी बन्धुओं द्वारा आयोजित *''कुँड़ुख़ भाषा एवं तोलोंग सिकि''* विषयक एक दिवसीय कार्यषाला में डॉ0 नारायण उराँव का *तोलोंग सिकि* पर विस्तृत प्रस्तुति।

8. कुँड़ुख़ कत्थ खोंड़हा लूरडिप्पा, भगीटोली, डुमरी, गुमला, स्कूल के संचालकों एवं षिक्षकों के कड़ी मेहनत के फलस्वरूप कुल 39 छात्र, मैट्रिक में कुँड़ुख़ भाषा विषय की परीक्षा तोलोंग सिकि में लिखने के लिए तैयार हुए और उन 39 छात्रों के लिए तोलोंग सिकि में परीक्षा लिखने की अनुमति हेतु तोलोंग सिकि में पाठ्य पुस्तक दिखलाने की मांग हुई। जिसे कम समय में पूरा करना कठिन था। किन्तु जब लूरडिप्पा स्कूल के तत्कालीन निदेशक श्री अगुस्तिन बखला की बातचीत, डॉ0 नारायण उराँव 'सैन्दा' के साथ हुई कि तोलोंग सिकि में पाठ्य पुस्तक दिखलाने के बाद ही अनुमति मिल सकेगी। ऐसी परिस्थिति में डॉ0 उराँव द्वारा गया, बिहार में रहते हुए, तोलोंग लिपि में लिप्यन्तरण किया गया, जिसे काथलिक प्रेस, राँची में छपवाकर जैक, कार्यालय में प्रस्तुत किया गया।